राष्ट्रीय दैनिक

प्रातःकिरण

दिल्ली एवं पटना से प्रकाशित

हर खबर पर पकड़

/Pratahkiran /Pratahkiran /Pratahkiran

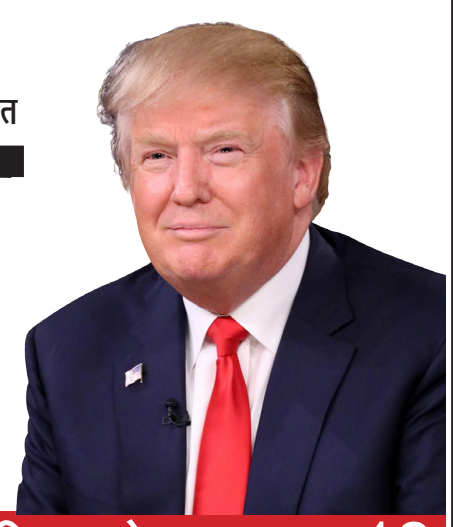

03 दस साल में भाजपा ने झुग्गियों को तोड़कर तीन लाख लोगों को ...

ट्रंप ने दिया ग्रीनलैंड को अमेरिका में शामिल करने का प्रस्ताव 12

वर्ष : 15 | अंक : 268 | नई दिल्ली, सोमवार, 13 जनवरी, 2025 | विक्रम संवत् 2081 | पेज : 12 | मूल्य ₹ : 03.00 | www.pratahkiran.com

मौसम

अधिकतम तापमान 21°C

न्यूनतम तापमान 30.0°C

हां 30%
नहीं 50%
कह नहीं सकते 10%

बाजार

सोना 79,005

चांदी 92,500

सेंसेक्स 81,786

निफ्टी 24,668

संक्षिप्त खबरें

राष्ट्रपति द्रोपदी मुर्मु ने विवेकानंद जयंती पर श्रद्धांजलि अर्पित की

नई दिल्ली। राष्ट्रपति द्रोपदी मुर्मु ने रविवार को स्वामी विवेकानंद की जयंती के अवसर पर उन्हें भावभीनी श्रद्धांजलि अर्पित की। उन्होंने कहा है कि स्वामी जी ने भारत के लोगों में एक नया आत्मविश्वास का संचार किया और पश्चिम को भारत की आध्यात्मिक शक्ति का एक सशक्त संदेश दिया। सुश्री मुर्मु ने ह्यएक्सह्न पर एक पोस्ट में कहा, ह्लस्वामी विवेकानन्द को उनकी जयंती पर मेरी विनम्र श्रद्धांजलि। स्वामी जी ने भारत के महान आध्यात्मिक संदेश को पश्चिमी दुनिया तक पहुंचाया। उन्होंने भारत के लोगों में एक नये आत्मविश्वास का संचार किया। स्वामीजी ने युवाओं को अपनी क्षमता उजागर करने, राष्ट्र निर्माण की दिशा में काम करने और मानवता की सेवा करने के लिए प्रेरित किया। उनकी विरासत दुनिया भर के अनगिनत लोगों को प्रेरित करती रहती है।

महत्वपूर्ण खबर

लोकसभा अध्यक्ष ओम प्रकाश बिड़ला ने किया लंदन में बीएपीएस नेस्डन मंदिर का दौरा

लंदन/नई दिल्ली। लोकसभा अध्यक्ष ओम प्रकाश बिड़ला ने लंदन केप्रसिद्ध बीएपीएस श्री स्वामीनारायण मंदिर का दौरा किया। इसे नेस्डन मंदिर के नाम से भी जाना जाता है। ओम बिड़ला की 11 जनवरी की यह यात्रा उनके आधिकारिक यूके दौरे का हिस्सा थी, जो हाउस ऑफ कॉमन्स के स्पीकर लिंडसे हॉयल के निमंत्रण पर आयोजित हुई थी। मंदिर में श्री बिड़ला का पारंपरिक हिंदू तरीके से स्वागत किया गया। यह स्वागत बीएपीएस स्वामिनारायण संस्था के आध्यात्मिक गुरु महंत स्वामी महाराज की ओर से मंदिर के संतों ने किया।दौरे के दौरान, ओम बिड़ला ने मंदिर के पवित्र दर्शन किए और मूर्तियों का अभिषेक किया।

तेजस्वी, अखिलेश, ओवैसी जैसे लोगों को कुंभ से दिक्कत : गिरिराज

पटना। भाजपा के वरिष्ठ नेता और केंद्रीय मंत्री गिरिराज सिंह ने रविवार को महाकुंभ के बहाने विरोधियों पर निशाना साधा है। उन्होंने कहा कि कुंभ से देश और विदेशियों के सनातनियों में खुशी की लहर है। अगर कुंभ से दिक्कत है तो तेजस्वी यादव, अखिलेश यादव, ओवैसी जैसे लोगों को है, जो देश में शरिया कानून लाना चाहते हैं। ऐसे लोगों को कुंभ से नफरत है।दिल्ली में अरविंद केजरीवाल से जुड़े एक प्रश्न के उत्तर में केंद्रीय मंत्री ने कहा, ₹अब अरविंद केजरीवाल की पार्टी दिल्ली में है कहां? केजरीवाल मतलब लोगों की नजर में एक फ्रॉड, लोगों को धोखा देने वाला नमक हराम, बिहारियों को गाली देने वाला व्यक्ति, इस रूप में अब लोग देखते हैं। इस बार जनता उनको सबक सिखाएगी। उन्होंने कहा कि वह तो कहते हैं कि बिहारी 500 रुपये का टिकट लेकर आता है और यहां चोरी, डकैती करता है। राजद नेता तेजस्वी यादव के बिहार में डीके टैक्स से जुड़े एक बयान के विषय में पूछने पर केंद्रीय मंत्री गिरिराज सिंह ने कहा कि दिल्ली में एक प्राइवेट लिमिटेड पार्टी थी।

प्रधानमंत्री के नेतृत्व में युवा राष्ट्र निर्माण में सक्रिय रूप से योगदान दे रहे : पीयूष गोयल

प्रात : किरण/ एजेंसी

मुंबई। स्वामी विवेकानंद की 162वीं जयंती को देश ह्यराष्ट्रीय एकता दिवसह्न के रूप में मना रहा है। केंद्रीय मंत्री पीयूष गोयल ने स्वामी जी के अमूल्य योगदान को याद करते हुए कहा कि प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के नेतृत्व में युवा प्रगति के पथ पर आगे बढ़ रहे हैं। उन्होंने कहा कि हम स्वामी विवेकानंद की जयंती को श्रद्धा और सम्मान के साथ मनाते हैं। उन्होंने कहा कि इस दिन को मनाते हुए हम प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी जी के नेतृत्व में देश के युवाओं को नए भारत के निर्माण में जोड़ा जाने के प्रयासों को भी सेलिब्रेट करते हैं। उन्होंने कहा कि ₹प्रधानमंत्री ने जिस प्रकार से भारतीय युवाओं को एक सकारात्मक दिशा में प्रेरित किया है और उनका मार्गदर्शन किया है, वह अत्यंत महत्वपूर्ण है। आज दिल्ली के भारत मंडपम में प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी जी देशभर से आए हुए विकसित भारत एंबेसेडर के साथ मुलाकात करेंगे और 2047 तक विकसित भारत के निर्माण की दिशा में युवाओं की भूमिका पर चर्चा करेंगे। यह संयोग है कि मुझे भी परसों महाराष्ट्र और गोवा से आए हुए 125 बच्चों के साथ मिलने का अवसर मिला, जो आज इस विकसित भारत कार्यक्रम में शामिल होंगे। केंद्रीय मंत्री ने कहा कि इन बच्चों के उत्साह, उनकी सोच, और भारत के प्रति उनकी निष्ठा को देखकर मुझे बहुत ही आनंद और प्रेरणा मिली। इस अवसर पर, मुझे यह महसूस हुआ कि भारत के युवा

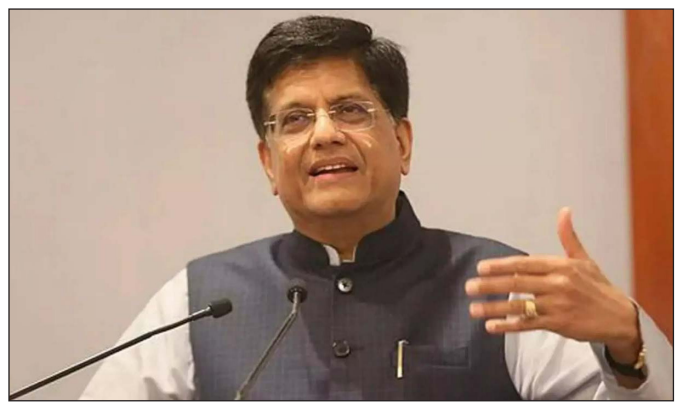

इस समय न केवल अपने व्यक्तिगत विकास की ओर अग्रसर हैं, बल्कि वे देश की सेवा करने और देश को प्रगति की दिशा में आगे बढ़ाने के लिए भी प्रतिबद्ध हैं। खासकर, आज के समय में जब भारत की आर्थिक स्थिति भी मजबूत हो रही है, देश के युवा इस परिप्रेक्ष्य में अपने दायित्व को निभाने के लिए पूरी तरह से तैयार हैं। आज मुझे इस बात का भी अनुभव हुआ कि भारत के युवा देश की सेवा में जुटने के लिए एक नए जोश और उमंग के साथ तैयार हैं और अपने दायित्वों का निर्वाह करने के लिए उत्साहित हैं। केंद्रीय मंत्री ने आगे कहा कि मैं यह भी मानता हूं कि प्रधानमंत्री मोदी जी के नेतृत्व में भारत ने जिस प्रकार से अपनी पहचान दुनिया में बनाई है, वह अभूतपूर्व है। भारत की बढ़ती शक्ति और गौरव ने न केवल देशवासियों को प्रेरित किया है, बल्कि विदेशों में भी भारत के प्रति आकर्षण बढ़ाया है। निवेशक अब भारत में निवेश करने के लिए आकर्षित हो रहे हैं और साथ ही साथ अन्य देश भी भारत के साथ व्यापार बढ़ाने के लिए तत्पर हैं। उन्होंने कहा कि प्रधानमंत्री मोदी जी के नेतृत्व को अब विश्व के नेता के रूप में पहचाना जा रहा है और उनका कार्यक्षेत्र केवल भारत तक ही सीमित नहीं है, बल्कि उन्होंने अंतरराष्ट्रीय स्तर पर भी भारत का मान और सम्मान बढ़ाया है। यह दिन हमें याद दिलाता है कि जब तक हम अपनी युवा शक्ति को सही दिशा में नहीं लगाएंगे, तब तक देश का विकास संभव नहीं है। लेकिन प्रधानमंत्री जी के नेतृत्व में हम यह देख रहे हैं कि युवा आज अपने राष्ट्र निर्माण में सक्रिय रूप से योगदान दे रहे हैं और भविष्य में भारत को एक सशक्त और समृद्ध राष्ट्र बनाने में इनकी भूमिका अहम होगी।

प्रधानमंत्री ने विकसित भारत युवा नेता संवाद 2025 को किया संबोधित

युवा शक्ति का सामर्थ्य ही भारत को जल्द से जल्द विकसित राष्ट्र बनाएगा : मोदी

विकसित भारत युवा नेता संवाद 2025 को संबोधित करते हुए प्रधानमंत्री ने यह भी कहा कि बड़े सपने देखना, एक मजबूत प्रतिबद्धता बनाना और एक निर्धारित समयसीमा के भीतर उन सपनों को प्राप्त करना पूरी तरह से संभव है। उन्होंने कहा, किसी भी देश की प्रगति के लिए, उसे महत्वपूर्ण लक्ष्यों को प्राप्त करने पर ध्यान केंद्रित करना चाहिए। एक लक्ष्य के बिना जीवन अकल्पनीय है! लक्ष्य हमें उद्देश्य और प्रेरणा प्रदान करते हैं। जब हम महत्वाकांक्षी लक्ष्य निर्धारित करते हैं, तो हम उन्हें पूरा करने के लिए अथक प्रयास करते हैं। आज भारत इसी भावना को मूर्त रूप दे रहा है।

प्रात : किरण/ एजेंसी

नई दिल्ली। प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने रविवार को कहा कि देश के नौजवानों के साथ उनका परम मित्र वाला नाता है और साथ ही विश्वास जताया कि युवा शक्ति का सामर्थ्य ही भारत को जल्द से जल्द विकसित राष्ट्र बनाएगा। विकसित भारत युवा नेता संवाद 2025 को संबोधित करते हुए प्रधानमंत्री ने यह भी कहा कि बड़े सपने देखना, एक मजबूत प्रतिबद्धता बनाना और एक निर्धारित समयसीमा के भीतर उन सपनों को प्राप्त करना पूरी तरह से संभव है। उन्होंने कहा, किसी भी देश की प्रगति के लिए, उसे महत्वपूर्ण लक्ष्यों को प्राप्त करने पर ध्यान केंद्रित करना चाहिए। एक लक्ष्य के बिना जीवन अकल्पनीय है! लक्ष्य हमें उद्देश्य और प्रेरणा प्रदान करते हैं। जब हम महत्वाकांक्षी लक्ष्य निर्धारित करते हैं, तो हम उन्हें पूरा करने के लिए अथक प्रयास करते हैं। आज भारत इसी भावना को मूर्त रूप दे रहा है। मोदी ने कहा कि विकसित भारत यानी जो आर्थिक, सामरिक, सामाजिक और सांस्कृतिक रूप से सशक्त होगा, जहां अर्थव्यवस्था भी बुलंद होगी और पारिस्थितिकी भी समृद्ध होगी। उन्होंने कहा, जहां अच्छी कमाई और पढ़ाई के ज्यादा से ज्यादा अवसर होंगे। जहां दुनिया की सबसे बड़ी युवा आबादी कौशल से लैस होगी।

जहां युवाओं के पास अपने सपने पूरा करने के लिए खुला आसमान होगा। प्रधानमंत्री ने इस कार्यक्रम में 30 लाख से अधिक प्रतिभागियों में से योग्यता-आधारित, बहु-स्तरीय चयन प्रक्रिया के माध्यम से चुने गए 3,000 युवाओं के साथ संवाद भी किया। स्वामी विवेकानंद का जन्म 12 जनवरी 1863 को कोलकाता में हुआ था। उनके जन्मदिन को राष्ट्रीय युवा दिवस के रूप में मनाया जाता है। प्रधानमंत्री ने कहा कि उनका देश के नौजवानों के साथ ह्यपरम मित्रह्न वाला नाता है और मित्रता की सबसे मजबूत कड़ी होती है विश्वास। उन्होंने कहा, मुझे आप पर बहुत विश्वास है और इसी विश्वास ने मुझे माय भारत के गठन की प्रेरणा दी। इसी विश्वास ने विकसित भारत युवा नेता संवाद का आधार बनाया। मेरा विश्वास कहता है कि युवा शक्ति का सामर्थ्य भारत को जल्द से जल्द विकसित राष्ट्र बनाएगा। प्रधानमंत्री ने कहा, जो आंकड़ों का जोड़ भाग करते रहते हैं, उनको लगता होगा कि यह सब बहुत मुश्किल है लेकिन मेरी आत्मा कहती है, आप सबके भरोसे से कहती है- लक्ष्य बड़ा जरूर है लेकिन असंभव नहीं है।

उन्होंने कहा, जब करोड़ों युवाओं की भुजाएं विकास रथ के पहिए को आगे बढ़ा रही हैं, तब हम जरूर लक्ष्य पर पहुंचेंगे। प्रधानमंत्री ने कहा, आज अगर स्वामी विवेकानंद सशरीर हमारे बीच होते तो 21वीं सदी के युवा की इस जागृत शक्ति को देखकर और आपके सक्रिय प्रयासों को देखकर वह भारत में एक नया विश्वास भर देते, एक नई ऊर्जा भर देते और नए सपनों के बीज बो देते।

मोदी ने विकसित भारत युवा नेता संवाद में प्रदर्शनी का किया अवलोकन

नई दिल्ली। प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने रविवार को भारत मंडपम में विकसित भारत यंग लीडर्स डायलॉग 2025 में प्रदर्शनी का दौरा किया। अपनी यात्रा के दौरान प्रधानमंत्री ने प्रतिभागियों से बातचीत की और उनकी परियोजनाओं को देखा। स्वामी विवेकानंद की जयंती के उपलक्ष्य में राष्ट्रीय युवा दिवस के अवसर पर प्रधानमंत्री देशभर के 3,000 गतिशील युवा नेताओं के साथ बातचीत करेंगे। इस अवसर पर उपस्थित लोगों को संबोधित भी करेंगे। प्रधानमंत्री कार्यालय के अनुसार प्रधानमंत्री दस विषयों पर प्रतिभागियों द्वारा लिखे गए सर्वश्रेष्ठ निबंधों का संकलन भी जारी करेंगे।

इन विषयों में प्रौद्योगिकी, स्थिरता, महिला सशक्तीकरण, विनिर्माण और कृषि जैसे विविध क्षेत्र शामिल हैं। प्रधानमंत्री युवा नेताओं के साथ दोपहर के भोज में शामिल होंगे, जिससे युवाओं को प्रधानमंत्री के साथ अपने विचार, अनुभव और महत्वाकांक्षाएं सीधे साझा करने का अवसर मिलेगा। यह व्यक्तिगत बातचीत शासन और युवा आकांक्षाओं के बीच की खाई को पाटेगी, जिससे प्रतिभागियों के बीच स्वामित्व और जिम्मेदारी की गहरी भावना पैदा होगी। उल्लेखनीय है कि 11 जनवरी से शुरू हो रहे इस संवाद के दौरान युवा नेता प्रतियोगिताओं, गतिविधियों और सांस्कृतिक और विषयगत प्रस्तुतियों में शामिल होंगे। इसमें सलाहकारों और डोमेन विशेषज्ञों के नेतृत्व में विषयों पर विचार-विमर्श भी शामिल होगा।

इसमें भारत की कलात्मक विरासत को प्रदर्शित करने वाले सांस्कृतिक प्रदर्शन भी होंगे जो इसकी आधुनिक उन्नति का प्रतीक होंगे। विकसित भारत युवा नेता संवाद में भाग लेने के लिए 3,000 गतिशील और प्रेरित युवाओं का चयन विकसित भारत चैलेंज के माध्यम से किया गया है, जो देशभर से सबसे अधिक उत्साही और गतिशील युवा आवाजों को पहचानने और उन्हें प्रदर्शित करने के लिए एक सावधानीपूर्वक तैयार की गई, योग्यता-आधारित बहुस्तरीय चयन प्रक्रिया है। इसमें 15 से 29 वर्ष के प्रतिभागियों के तीन चरण शामिल थे। पहला चरण, विकसित भारत क्विज, सभी राज्यों के युवाओं के भाग लेने के लिए 12 भाषाओं में आयोजित किया गया था। इसमें लगभग 30 लाख युवाओं ने भाग लिया। क्विज में भाग लेने वाले योग्य प्रतिभागी दूसरे चरण में पहुंचे, जहां उन्होंने विकसित भारत के सपने को साकार करने के लिए दस महत्वपूर्ण विषयों पर अपने विचार व्यक्त किए, जिसमें 2 लाख से अधिक निबंध प्रस्तुत किए गए। तीसरे चरण, राज्य दौर में, प्रत्येक विषय के 25 उम्मीदवार कठोर व्यक्तिगत प्रतियोगिताओं में भाग लेने के लिए आगे बढ़े। प्रत्येक राज्य ने प्रत्येक ट्रैक से अपने शीर्ष तीन प्रतिभागियों की पहचान की, जिससे दिल्ली में राष्ट्रीय कार्यक्रम के लिए गतिशील टीमें बनीं।

स्वामी विवेकानंद ने वैश्विक पटल पर सनातन संस्कृति को किया प्रतिष्ठित : योगी

प्रात : किरण/ एजेंसी

गोरखपुर। उत्तर प्रदेश के मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ ने कहा कि स्वामी विवेकानंद जी ने उस कालखंड में जब देश गुलामी की बेड़ियों में जकड़ा हुआ था, वैश्विक पटल पर सनातन वैदिक संस्कृति को प्रभावी ढंग से प्रतिष्ठित किया। इस युवा संन्यासी ने अपने विचारों और आचरण की साम्यता से राष्ट्र के प्रति चेतना जागृत करने में बड़ी भूमिका निभाई है। गुलामी के कालखंड में सनातन वैदिक मूल्यों की चर्चा दुरूह होने के बावजूद स्वामी विवेकानंद ने गर्व से कहो हम हिंदू हैं का उद्घोष किया। सीएम योगी रविवार को नेताजी सुभाषचंद्र बोस नगर कॉलोनी में स्थित सरस्वती शिशु मंदिर वरिष्ठ माध्यमिक विद्यालय में स्वामी विवेकानंद की जयंती युवा दिवस के अवसर पर स्वामी विवेकानंद की प्रतिमा का अनावरण करने के बाद विद्यालय के पूर्व छात्रों के सम्मेलन को संबोधित किया।

विद्यालय के रज्जू भैया सभागार में आयोजित कार्यक्रम में मुख्यमंत्री ने स्वामी विवेकानंद की जयंती पर उनकी स्मृतियों को नमन करते हुए कहा कि महज 42 वर्ष की उम्र में नश्वर काया को छोड़ देने वाले स्वामी विवेकानंद ने सदैव भारत और भारतीयता की बात की। उनकी जयंती पर आज पूरा देश उन्हें भारत माता के महान सपूत और राष्ट्रीय-आध्यात्मिक गुरु के रूप में याद कर उनके योगदान के प्रति कृतज्ञता ज्ञापित कर रहा है।मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ ने कहा कि स्वामी विवेकानंद ने शिकागो समिट में जब भारतीय सनातन मूल्यों को वैश्विक मंच पर रखा तो उनके वक्तव्य को सुनकर दुनिया मंत्रमुग्ध और भाव-विभोर हो गई। स्वामी जी ने सबको जागरूक करते हुए कहा था कि सनातन धर्म सबसे प्राचीन धर्म है। हर भारतवासी को इस पर गौरव की अनुभूति करनी चाहिए। स्वामी जी की शिक्षा है कि हम सबका एक ही धर्म होना चाहिए, राष्ट्रधर्म। उन्होंने कहा कि भारत ने स्वामी विवेकानंद के विचारों का अनुसरण किया तो देश को आजाद होने में समय नहीं लगा। मुख्यमंत्री ने कहा कि आज स्वामी विवेकानंद का नाम सभी लोग लेते हैं लेकिन हिंदुत्व का उद्घोष करने वाले संन्यासी को वामपंथी कैसे स्वीकार करते। स्वामी विवेकानंद के विचारों को सरस्वती शिशु मंदिरों ने हमेशा अंगीकार किया। स्वामी जी के विचारों को आगे बढ़ाने के लिए देशभर में सरस्वती शिशु मंदिरों की लंबी श्रृंखला है। सीएम योगी ने कहा कि स्वामी विवेकानंद का मानना था कि चुनौती जितनी कठिन होगी, उसके अनुरूप परिश्रम करने पर जीत और शानदार होगी।

'विकास व विरासत प्रगति पथ पर उत्तर प्रदेश' थीम पर होगा यूपी दिवस

लखनऊ/एजेंसी। योगी सरकार के नेतृत्व में इस वर्ष भी 24 से 26 जनवरी तक उत्तर प्रदेश दिवस का आयोजन किया जाएगा। इस उपलक्ष्य में लखनऊ, नोएडा समेत सूबे के सभी जनपदों में विविध कार्यक्रम होंगे। इस बार यूपी दिवस की थीम 'विकास व विरासत प्रगति पथ पर उत्तर प्रदेश' रखा गया है। इस थीम पर ही प्रदर्शनी, संगोष्ठी, सम्मेलन, सांस्कृतिक कार्यक्रम, प्रतियोगिताएं और रोड शो समेत अनेक आयोजन होंगे। मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ ने यूपी दिवस के आयोजन को भव्यतम बनाने का निर्देश दिया है। उन्होंने इसके अतिरिक्त अन्य कार्यक्रमों के आयोजन को लेकर भी दिशा-निर्देश दिया है।उत्तर प्रदेश राज्य की स्थापना 24 जनवरी 1950 को हुई थी। इस दिन प्रदेश का नाम संयुक्त प्रांत से बदलकर उत्तर प्रदेश रखा गया था। योगी सरकार 2018 से अनवरत 24 से 26 जनवरी तक उत्तर प्रदेश दिवस का भव्य आयोजन कर रही है। इस बार भी सरकार के विभिन्न विभागों द्वारा जनसहभागिता से यूपी दिवस मनाया जाएगा।

इंतजाम पौराणिक मान्यता के अनुसार श्रद्धालु एक माह तक नियमपूर्वक संगम तट पर कल्पवास करेंगे।

अमृत स्नान के साथ शुरू होगा महाकुम्भ में कल्पवास, लाखों श्रद्धालुओं के लिए विशेष इंतजाम

प्रात : किरण/ एजेंसी

महाकुम्भ नगर। तीर्थराज प्रयागराज में त्रिवेणी संगम के तट पर सनातना आस्था के महापर्व, महाकुम्भ 2025 की शुरूआत होने जा रही है। महाकुम्भ में 40 से 45 करोड़ श्रद्धालुओं के प्रयागराज में आने का अनुमान है। जो गंगा, यमुना और सरस्वती के पवित्र संगम में अमृत स्नान करेंगे। इसके साथ ही लाखों की संख्यां में श्रद्धालु संगम तट पर महाकुम्भ की प्राचीन परंपरा कल्पवास निर्वहन करेंगे। पौराणिक मान्यता के अनुसार श्रद्धालु एक माह तक नियमपूर्वक संगम तट पर कल्पवास करेंगे। जिसके लिए सीएम योगी के मार्गदर्शन में प्रयागराज मेला प्राधिकरण ने विशेष इंतजाम किए हैं। कल्पवास की शुरूआत 13 जनवरी को पौष पूर्णिमा की तिथि से होगी।

10 लाख श्रद्धालु करेंगे संगम तट पर कल्पवास: महाकुम्भ सनातन आस्था का

सबसे बड़ा आयोजन होने के साथ बहुत सी सनातन परंपराओं का वाहक भी है। इसमें से महाकुम्भ की एक महत्वपूर्ण परंपरा है संगम तट पर कल्पवास करना। शास्त्रीय मान्यता के अनुसार कल्पवास, पौष पूर्णिमा की तिथि से शुरू हो कर माघ पूर्णिमा की तिथि तक पूरे एक माह तक किया जाता है। इस महाकुम्भ में कल्पवास 13 जनवरी से शुरू होकर 12 फरवरी तक संगम तट पर किया जाएगा। शास्त्रों के अनुसार कल्पवास में श्रद्धालु नियमपूर्वक, संकल्पपूर्वक एक माह तक संगम तट पर निवास करते हैं। वो कल्पवास के दौरान श्रद्धालु तीनों काल गंगा स्नान कर, जप,तप,ध्यान,पूजन और सत्संग करते हैं। महाकुम्भ 2025 में लगभग 10 लाख श्रद्धालुओं के कल्पवास करने का अनुमान है।

कल्पवासियों के लिए किए हैं विशेष इंतजाम: महाकुम्भ की विशेष परंपरा कल्पवास का निर्वहन करने के लिए प्रयागराज मेला प्राधिकरण ने सीएम योगी की प्रेरणा से सभी जरूरी इंतजाम किए हैं। मेले क्षेत्र में गंगा जी के तट पर झूंसी से लेकर फाफामऊ तक लगभग 1.6 लाख टेंट, कल्पवासियों के लिए लगवाए गये हैं। इन सभी कल्पवासियों के टेंटों के लिए बिजली, पानी के कनेक्शन के साथ शौचालयों का निर्माण करवाया गया है। कल्पवासियों को अपने टेंट तक आसानी से पहुंचने के लिए चेकर्ड प्लेटस की लगभग 650 किलोमीटर की अस्थाई संडकों और 30 पांटून पुलों का निर्माण किया गया है। इसके साथ ही सीएम योगी के निर्देश के मुताबिक कल्पवासियों को महाकुम्भ में सस्ती दर पर राशन और सिलेंडर भी उपलब्ध करवाया जाएगा। कल्पवासियों के गंगा स्नान के लिए घाटों के निर्माण किया गया है। उनकी सुरक्षा के लिए जलपुलिस और गंगा नदी में बैरीकेडिंग भी की गई है। ठंड से बचाव के लिए अलाव और स्वास्थ संबंधी समस्या दूर करने के लिए मेला क्षेत्र में अस्पतालों का भी निर्माण किया गया है। कल्पवास का पूजन करवाने वाले तीर्थपुरोहित, प्रयागवालों को भी विशेष सुविधाएं दी गई हैं।

महाकुम्भ की भव्यता और व्यवस्था देख इटली के युवकों ने की तारीफ: प्रयागराज में सजे महाकुम्भ मेले की भव्यता और दिव्यता को निहारने न सिर्फ भारत के कोने-कोने से बल्कि पूरी दुनिया से लोग यहां पहुंच रहे हैं। भारतीय संस्कृति और परंपरा से प्रभावित इटली के तीन दोस्त महाकुम्भ का मेला देखने पहुंचे हैं और यहां मेला परिसर में शिविर में ठहरे हैं। संन्यासी वस्त्र धारण कर घूम रहे युवकों में से एक ने कहा कि उसे ऐसा अहसास होता है कि वह पिछले जन्म में भारतीय था।

पीटरों ने बातचीत में कहा कि 'मैं योगा का प्रैक्टिशनर हूँ। मुझे भारतीय संस्कृति के बारे में कुछ-कुछ जानकारी है।

संक्षिप्त समाचार

उर्वशी दत्त बाली ने भाजपा के लिए किया चुनाव प्रचार-प्रसार

काशीपुर, एजेंसी। नगर निगम चुनाव में भाजपा का कमल खिलाने के लिए मेयर प्रत्याशी दीपक बाली की पत्नी उर्वशी दत्त बाली महिला कार्यकर्ताओं के साथ चुनाव प्रचार में जुटी हैं। साथ ही भाजपा महिला मोर्चा भी जोर-शोर से चुनाव प्रचार कर रही है। उर्वशी दत्त बाली ने शुक्रवार को वार्ड 35 में स्टेडियम के पास से नई बस्ती वार्ड 33 में मैन चौराहा और वार्ड 36 में पार्षद प्रत्याशियों के साथ चुनाव प्रचार किया। भाजपा के लिए वोट मांगे। उनके साथ रेखा शर्मा, प्रियंका अग्रवाल, विमला देवी, उषा चौहान, पूजा शर्मा, निशा चौहान आदि थीं। भाजपा की पूर्व प्रदेश मंत्री सीमा चौहान के नेतृत्व में मंजू यादव, रीति नागर, राज दीपिका आदि के साथ प्रचार किया।

विकास का मुद्दा लेकर जनता के बीच पहुंचे मंत्री बहुगुणा

शक्तिफार्म, एजेंसी। कैबिनेट मंत्री सौरभ बहुगुणा विकास का मुद्दा लेकर जनता के बीच पहुंचे। शुक्रवार को मंत्री बहुगुणा ने शक्तिगढ़ के आजाद वार्ड, शिव मंदिर वार्ड और नेताजी सुभाष वार्ड में चुनावी सभा की। उन्होंने कहा कि केंद्र और राज्य में पहले ही भाजपा की सरकार है। नगर निकाय में भी हमें भाजपा को जिताना है। जिससे क्षेत्र के विकास में कोई बाधा उत्पन्न न हो सके। वहां विष्णु प्रमाणिक, अजय जायसवाल, संजय बाछाड़, योगेंद्र रावत, कार्तिक राय, मयंक अग्रवाल, मनोज सरकार थे।

किसानों का भूमि आंदोलन जारी

बाजपुर, एजेंसी। क्षेत्र के बीस गांव की भूमि को लेकर किसानों का भूमि बचाओ आंदोलन 531 वें दिन भी जारी रहा। शुक्रवार को क्रमिक अनशन पर दरबारा सिंह, नत्था सिंह, अमरनाथ शर्मा, सिकंदर सिंह, सुरेश गोयल बैठे। इस दौरान भाकियू प्रदेशाध्यक्ष करम सिंह पड्डा, सन्नी निज्जर, राजकिशोर आदि मौजूद रहे।

इंडिगो की दिल्ली से आने वाली फ्लाइट रद्द

पंतनगर, एजेंसी। इंडिगो की दिल्ली से शुक्रवार को पंतनगर आने वाली फ्लाइट तकनीकी कारणों से रद्द हो गई। फ्लाइट संख्या 6ई 7156 दिल्ली से 2:45 बजे उड़ान भरकर अपराह्न 3:45 पर पंतनगर पहुंचनी थी। तकनीकी कारणों से फ्लाइट के रद्द होने से यात्रियों को मायूस होना पड़ा। हालांकि इंडिगो प्रबंधन ने यात्रियों को उनके गंतव्य तक पहुंचाने के लिए टैक्सी या किराया वापसी का विकल्प दिया।

टनकपुर रूट नहीं चली अल्मोड़ा डिपो की बस

अल्मोड़ा, एजेंसी। टनकपुर रूट पर रोडवेज बस नहीं चलने से यात्री परेशान रहे। यात्रियों को अधिक किराया चुकाकर अन्य वाहनों से गंतव्य को जाना पड़ा।अल्मोड़ा डिपो में चालकों के कई पद रिक्त हैं। इस कारण बसों की संचालन व्यवस्था प्रभावित हो रही है। शुक्रवार को टनकपुर सेवा का संचालन ठप रहा। इस कारण टनकपुर जाने वाले यात्री परेशान रहे। बस के इंतजार में यात्री ठंड से ठिठुरते रहे। बाद में कई यात्री टैक्सी में अधिक किराया चुकाकर गंतव्य को रवाना हुए।

अराजकतत्वों ने झूमाधुरी के जंगल में लगाई आग

लोहाघाट, एजेंसी। क्षेत्र में पड़ रही कड़ाके की ठंड के बीच जंगलों में आग लगने की घटनाएं सामने आने लगी हैं। अराजकतत्वों ने झूमाधुरी के जंगल में आग लगा दी। बृहस्पतिवार रात को लोहाघाट रेंज के झूमाधुरी के जंगल में भीषण आग लग गई। जंगल में आग लगने से वन संपदा और वन्य जीवों को काफी नुकसान पहुंचा है।

किसानों को श्रीअन्न फसलों की उन्नत तकनीक बताई

अल्मोड़ा, एजेंसी। विवेकानंद पर्वतीय कृषि अनुसंधान संस्थान (वीपीकेएएस) अल्मोड़ा के प्रयोगात्मक प्रक्षेत्र हवालबाग में श्रीअन्न (मिलेट्स) फसलों पर प्रशिक्षण हुआ। तीन दिनी कृषक प्रशिक्षण कार्यक्रम में किसानों को मोटे अनाज फसलों की उन्नत तकनीक बताई गई। किसानों को उच्च उपजशील प्रजातियों, उन्नत सस्य विधियां, मूल्यवर्धन, फसल सुरक्षा तथा कटाई उपरांत प्रसंस्करण के बारे में जानकारी दी गई। समापन अवसर पर मडुवा (रागी) एवं चौलाई (रामदाना) की उन्नत प्रजातियों के बीजों का भी वितरण किया गया।

नैनीताल में हुई साल की पहली बर्फबारी, खुशनुमा हुआ मौसम

नैनीताल, एजेंसी। उत्तराखंड में रविवार को मौसम काफी खुशनुमा हो गया। कहीं बारिश तो कहीं बर्फबारी ने ठंड बढ़ा दी है। तापमान में भी भारी गिरावट देखने को मिली। हालांकि स्नोफॉल का मजा लेने वालों के लिए आज का दिन परफेक्ट है। उत्तराखंड में नैनीताल, औली, चकराता, मसूरी और आसपास के इलाकों में जबरदस्त बर्फबारी देखने को मिली। सफेद चादर में लिपटे पहाड़ देखने में किसी स्वर्ग से कम नहीं लग रहे हैं। इसके साथ ही मैदानी इलाकों में बारिश के साथ कोहरा छाया रहा। आपको बता दें कि नैनीताल में साल की पहली बर्फबारी देखने को मिली है।

मौसम विभाग ने 13 जनवरी से पहाड़ी इलाकों में मौसम साफ रहने की संभावना जताई है। वहीं देहरादून, हरिद्वार और आसपास के जिलों में कोहरा छाया रहेगा जिससे ठंड बरकरार रहेगी। देहरादून की बात करें तो यहां दो दिन से बादल मंडरा रहे हैं और पारा लगातार गिर रहा है। जिससे कड़ाके की ठंड सितम ढा रही है। सुबह धुंध और कोहरा भी दुश्वारियां बढ़ा रहे हैं। दून में मौसम के बदले मिजाज से पारा जरूर सामान्य से तीन डिग्री सेल्सियस नीचे पहुंच गया। दून का मौसम मसूरी-नैनीताल समेत कई हिल स्टेशन से

ज्यादा सर्द हो गया है। दिन में ही शहर के विभिन्न क्षेत्रों में अलाव जले नजर आए। जबकि, सरकारी कार्यालयों में भी सन्नाटा पसरा रहा। आपको बता दें कि कल यानी कि सोमवार से पर्वतीय जिलों में मौसम साफ रहने की संभावना मौसम वभिाग ने जताई है। आज मौसम का मिजाज बदलने से ऊंचाई वाले क्षेत्रों में जबरदस्त बर्फबारी देखने को मिली। बर्फबारी से निचले इलाकों में ठंड का प्रकोप बढ़ गया है। इसी बीच डीएम ने निर्देश जारी किया है कि कोहरे के साथ पाला भी पड़ सकते हैं। ऐसे में सेहत का पूरा ध्यान रखना जरूरी है। रविवार को मैदानी इलाकों में कोहरा छाने से शीत लहर दुश्वारियां बढ़ा सकती है।

बदला मौसम, पहाड़ों में बर्फबारी से बढ़ी ठंड, मैदान में बारिश के साथ छाया कोहरा: प्रदेश में नए साल से अब तक बारिश बर्फबारी न होने से सूखी ठंड लोगों को परेशान कर रही थी। लेकिन आज बारिश ने पहाड़ से मैदान तक ठंड में इजाफा कर दिया है। उत्तराखंड में आज पहाड़ से मैदान तक मौसम ने करवट बदली। मसूरी, धनोल्टी, नैनीताल और औली में समेत पहाड़ी इलाकों में बर्फबारी ने ठंड बढ़ा दी है, तो वहीं, मैदानी इलाकों में बारिश के साथ कोहरा छाने से तापमान में भी गिरावट दर्ज की गई है। साथ ही सर्द हवाओं

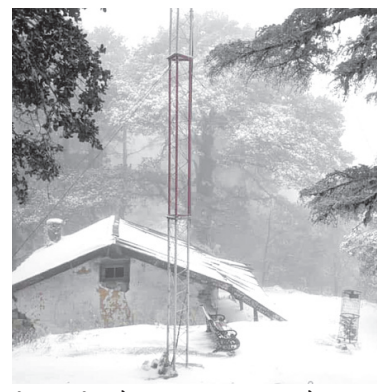

ने ठंड में और इजाफा कर दिया है। उधर, नैनीताल में इस वर्ष का पहला हिमपात हुआ। वहीं, मौसम विज्ञान केंद्र की ओर से जारी पूर्वानुमान के अनुसार 13 जनवरी से पर्वतीय जिलों में मौसम साफ रहेगा। जबकि, हरिद्वार और ऊधमसिंह नगर जिले में कोहरा छाए रहने के आसार हैं। आज मौसम विज्ञान केंद्र की ओर से हरिद्वार और ऊधमसिंह नगर जिले में कोहरे का येलो अलर्ट जारी किया गया है। जबकि, देहरादून समेत नैनीताल, टिहरी, हरिद्वार, पौड़ी और चम्पावत में बिजली चमकने के साथ तेज गर्जन होने की संभावना है।

मसूरी से लेकर औली, चकराता में बर्फबारी, सफेद हुई खूबसूरत वादियां

मसूरी, एजेंसी। उत्तराखंड में आज मौसम ने करवट बदली और पहाड़ से मैदान तक ठंड में इजाफा हो गया। जिसके बाद अब कड़ाके की ठंड पड़ रही है। मसूरी से लेकर औली, चकराता और नैनीताल में बर्फबारी हुई। जिससे यहां की वादियां बर्फ की सफेद चादर में लिपट गई हैं। वहीं, पैदल रास्तों और खेत खलियानों में बर्फ जम गई है।

मैदानी इलाकों में बारिश के साथ कोहरा छाने से तापमान में भी गिरावट दर्ज की गई है। साथ ही सर्द हवाओं ने ठंड में और इजाफा कर दिया है। उधर, नैनीताल में इस वर्ष का पहला हिमपात हुआ।

पिछले दिनों बर्फबारी के बाद पर्यटकों ने औली का रुख करना शुरू किया। औली के सभी होटल, लॉज भरे हुए हैं। वहीं, आज फिर से बर्फबारी होने से पर्यटकों की भीड़ उमड़ सकती है।

चकराता में भी आज बर्फबारी हुई है। क्षेत्र के लौखंडी, कोटी-कनासर, जाड़ी, बुल्हाड़, देववन, केराड़ में भारी बर्फ पड़ी है। बर्फबारी के बाद जमीन पर कई इंच मोटी बर्फ की चादर जम गई है।

उड़ीसा की समाजसेवी शस्मिता सिंह को मिला भारत श्री सम्मान नेशनल अवार्ड

हरिद्वार, एजेंसी। अंतरराष्ट्रीय मानवाधिकार एवं अपराध नियंत्रण संगठन नई दिल्ली के स्थापना दिवस पर आयोजित इंटरनेशनल कॉन्फ्रेंस में उड़ीसा की समाजसेवी शस्मिता सिंह को श्री सम्मान नेशनल अवार्ड प्रदान किया गया। हरिद्वार के एक होटल में आयोजित कार्यक्रम में मुख्य अतिथि के रूप में पधारे केन्द्रीय कृषि एवं किसान कल्याण मंत्री राम नाथ ठाकुर ने यह अवार्ड प्रदान किया। उड़ीसा प्रदेश के भुवनेश्वर से आई शस्मिता सिंह एक सामाजिक कार्यकर्ता हैं। वह समाज के गरीब, वंचित और पिछड़े तबके के उत्थान के लिए कार्य करती हैं।

कार्यक्रम में अति विशिष्ट अतिथि के रूप में न्यायमूर्ति लोकपाल सिंह पूर्व न्यायाधीश उच्चतम न्यायालय नैनीताल उत्तराखंड, अंजना पवार वाइस चेयरमैन राष्ट्रीय सफाई कर्मचारी आयोग भारत सरकार ,पण्डित राजेन्द्र अंथवाल अध्यक्ष राज्य गौ सेवा आयोग, मुकेश कुमार अध्यक्ष अनुसूचित जाति आयोग, बृज मोहन श्रीवास्तव राष्ट्रीय महासचिव एनसीपी नई दिल्ली और अनेक गणमान्य मौजूद रहे। इंटरनेशनल ह्यूमन राइट एंड क्राइम कंट्रोल आर्गेनाइजेशन के चेयरमैन और कार्यक्रम के संयोजक मोहित नवानी ने सभी अतिथियों का आभार व्यक्त किया।

कार खाई में गिरने से एक की मृत्यु, तीन घायल

नैनीताल, एजेंसी। नैनीताल जिले के ज्योलीकोट क्षेत्र में रात के अंधेरे में एक कार के गहरी खाई गिर गई। इस दुर्घटना में एक की मृत्यु हो गई और तीन घायल हो गए। वाहन में कुल चार व्यक्ति सवार थे।

मिली जानकारी के अनुसार देर रात नैना गांव के पास हुई, जब वाहन संख्या यूपी-25 डीडी-4750 (वैगन आर) बरेली से नैनीताल घूमने आ रहे थे। इसी दरम्यान कार अनियंत्रित होकर 200 मीटर गहरी खाई में गिर गई। सूचना मिलने पर तल्लीताल थाना और ज्योलीकोट चौकी पुलिस तुरंत मौके पर पहुंच कर रेस्क्यू अभियान शुरू किया। एसडीआरएफ, फायर सर्विस और 108 एंबुलेंस की सहायता से खाई में फंसे चारों व्यक्तियों को बाहर निकाला गया। तीन घायल व्यक्तियों को तुरंत उपचार के लिए बीडी पांडेय चिकित्सालय, मल्लीताल भेजा गया, जबकि एक व्यक्ति मौजूम, जिसकी उम्र 26 वर्ष थी,

को चिकित्सकों ने मृत घोषित कर दिया। घायलों में 17 वर्षीय युवराज, 18 वर्षीय पारस रस्तोगी और 42 वर्षीय वाहन चालक आलोक सक्सेना शामिल हैं। सभी घायलों का बीडी पांडेय चिकित्सालय में इलाज चल रहा है। मृतक मौजूम और सभी घायल बरेली के निवासी हैं। थानाध्यक्ष तल्लीताल रमेश सिंह बोहरा ने बताया कि कार चालक आलोक सक्सेना वाहन चला रहे थे और सभी व्यक्ति बरेली से नैनीताल घूमने आ रहे थे। दुर्घटना के कारणों की जांच की जा रही है और आवश्यक कार्रवाई की जा रही है।

युवा दिवस पर ब्रह्माकुमारी केंद्र में दिलाई गई नशा मुक्ति की शपथ

हरिद्वार, एजेंसी। प्रजापिता ब्रह्माकुमारी ईश्वरीय विश्व विद्यालय के रुड़की स्थित सेवा केंद्र पर स्वामी विवेकानंद की जयंती पर उनका स्मरण रखते हुए नशे से मुक्त रहने का संकल्प लिया गया। इस अवसर पर राज योगिनी गीता दीदी ने कहा कि स्वामी विवेकानंद ने अपने अल्प जीवन में विदेशों में जाकर न सिर्फ भारतीय संस्कृति का ध्वज बुलंद किया बल्कि युवा शक्ति के प्रेरणास्रोत बनकर उन्होंने युवाओं को सार्थक दिशा भी दिखाई। उन्होंने स्वामी विवेकानंद को एक महान संत बताया और उनके बताए मार्ग पर चलने के लिए सभी भाई बहनों का आह्वान किया। इस अवसर पर नशे के विरुद्ध वातावरण निर्माण के लिए संकल्प भी कराया ताकि आज की युवा पीढ़ी को नशे के दलदल से बाहर निकालकर उन्हें समाज की मुख्य धारा में शामिल किया जा

सके। कार्यक्रम में बीके दीपिका, बीके पारुल, बीके सपना, बीके कृष्ण छाबड़ा, अनिल भाई, रेखा, अमरेश, अश्वनी भारद्वाज, शिवकुमार, राजबाला आदि मौजूद रहे।

शहतूत की खेती बनेगी महिलाओं की आर्थिकी का आधार

अल्मोड़ा, एजेंसी। डीएम आलोक कुमार पांडेय ने महिला सशक्तिकरण के लिए विकासखंड हवालबाग के धामस में शहतूत की खेती शुरू कराई है। बृहस्पतिवार को यहां करीब दो लाख पौध लगाने का काम शुरू किया गया। रेशम विभाग बड़े पैमाने पर शीतकालीन शहतूत का पौधारोपण कर रहा है। डीएम ने कहा कि यह बहुत अच्छी पहल है। इससे महिलाओं की आजीविका को बढ़ाने के साथ साथ जल संवर्धन, मृदा संरक्षण, बंजर भूमि को उपजाऊ बनाने में मदद मिलेगी।

उन्होंने कहा कि महिलाओं की आजीविका बढ़ाने के लिए जिला प्रशासन प्रयासरत है। उन्होंने संबंधित अधिकारियों को निर्देश दिए कि महिलाओं को अन्य रोजगार परक कार्यक्रमों से भी जोड़ा जाए। सहायक निदेशक रेशम संजय काला ने बताया कि इस क्लस्टर में 7500 शहतूत के पौधों का रोपण किया जाएगा जबकि पूरा लक्ष्य दो लाख पौध तैयार करने का है। यहां शहतूत की नर्सरी भी तैयार की जा रही है। उन्होंने कहा कि यहां तैयार नर्सरी से जनपद के अन्य किसानों को भी पौधे उपलब्ध कराए जाएंगे।

सड़कों में गड्ढे और सीवर चैंबर खराब, लोग परेशान

देहरादून, एजेंसी। शहर की सड़कों के गड्ढे और टूटे सीवर चैंबर लोगों के लिए मुसीबत बने हैं। मार्ग क्षतिग्रस्त होने से पैदल चलने वाले पर्यटकों और स्थानीय लोगों को परेशानी का सामना करना पड़ रहा है, वहीं खट्टापानी मार्ग पूरी तरह से क्षतिग्रस्त हैं। इससे लोगों को आवागमन में परेशानियों का सामना करना पड़ रहा है। स्थानीय लोग सड़क की मरम्मत की मांग कर रहे हैं, लेकिन समस्या का समाधान नहीं किया जा रहा है। शहर की कैमल बैक रोड में सीवर चैंबर टूटे हैं, इससे एक तरफ गंदगी सड़क पर बह रही है, वहीं टूटे चैंबर में लोगों के गिरने का खतरा बना है। कैमल बैक के व्यापारी कपिल ने बताया कि उनकी दुकान के सामने सीवर चैंबर कई दिनों से क्षतिग्रस्त है। कहा कुछ दिन पहले एक पर्यटक वाहन का पहिया भी टूटे सीवर चैंबर में फंस गया था। लंढौर निवासी वीरेंद्र सिंह और खट्टापानी निवासी राजवीर सिंह रौछेला ने बताया कि लंढौर रोड में कई स्थानों पर गड्ढे बने हैं।

ई-कचरा निस्तारण के नहीं किए जा रहे ठोस उपाय

चंपावत, एजेंसी। राजकीय विद्यालयों में अतिरिक्त और जीर्णशीर्ण कक्ष पुराने उपकरणों से भरे जा रहे हैं। ई-कचरा निस्तारण को लेकर विद्यालयों में कोई ठोस उपाय नहीं किए जा रहे हैं। इसके चलते वेस्ट कचरे से निकलने वाली हानिकारक परिणामों को लेकर तो काफी जन जागरूकता कार्यक्रम किए गए पर विद्यालयों में जमा ई वेस्ट को लेकर कोई ठोस उपाय नहीं निकाला गया है।

वर्तमान समय में विभिन्न प्रकार के इलेक्ट्रानिक डिवाइस का ई कचरा पर्यावरण के लिए बहुत बड़ी समस्या बनकर सामने आ रहा है। इससे निकलने वाली हानिकारक किरणों से बचाव के लिए तमाम प्रकार की सावधानियां बरती जा रही हैं। विगत वर्ष पांच जून से जिले के सभी विद्यालयों में इसको लेकर जन जागरूकता अभियान भी चलाए गए हैं।

इसके तहत 20 विद्यालयों की ओर से इस संबंध में संपादित क्रियान्वयन का रिकार्ड भी पेश किया गया है। इस संबंध में बताया गया कि इलेक्ट्रानिक सामग्री से निकले कचरे को ई वेस्ट कहा जाता है। विद्यालयों, सार्वजनिक स्थलों और घरों में लगे बिजली उपकरणों, रेडिया, मोबाइल, कंम्प्यूटर सहित सभी विद्युत उपकरणों से चलित मशीनों के खराब होने के बाद बहुत समय तक एक जगह पर पड़े रहते हैं या फिर कूड़ेदानों में फेंक दिए जाते हैं।

अमित शाह को केजरीवल का चैलेंज, 24 घंटे में झुग्गियों के केस वापस लें, उन्हें पुरानी जगह बसाएं, मैं चुनाव नहीं लड़ूंगा

प्रात : किरण/ एजेंसी

नई दिल्ली। आम आदमी पार्टी के राष्ट्रीय संयोजक अरविंद केजरीवाल ने झुग्गीवालों से झूठे वादे कर रहे भाजपा नेता और केंद्रीय गृहमंत्री को बड़ा चैलेंज किया है। उन्होंने कहा कि अमित शाह 24 घंटे के अंदर झुग्गीवालों के ऊपर चल रहे सभी केस वापस लें, जिनकी झुग्गियां तोड़ी हैं, उनको पुरानी जगह पर दोबारा बसा दें तो मैं चुनाव नहीं लड़ूंगा। अगर भाजपा ऐसा नहीं करती है तो मैं चुनाव भी लड़ूंगा और ढाल बनकर झुग्गीवालों के लिए खड़ा रहूंगा। फिर देखता हूं इन्हें कौन उजाड़ता है? उन्होंने कहा कि पिछले 10 साल में भाजपा ने कई झुग्गियों को तोड़ा और 3 लाख से अधिक लोगों को बेघर किया। मैं दिल्ली का सीएम था, इस वजह से शकूरबस्ती समेत कई झुग्गियां बचा पाया। इन लोगों ने हर झुग्गी का प्रोजेक्ट बना रखा है कि कौन सी झुग्गी किसे देनी है। अगर झुग्गीवाले भाजपा को वोट देते हैं तो यह उनके लिए अपनी आत्महत्या के ऊपर साइन करने जैसा होगा। रविवार को आप के राष्ट्रीय संयोजक अरविंद केजरीवाल शकूरबस्ती के रेलवे झुग्गी कैंप का दौरा किए। इस दौरान उनके साथ शकूरबस्ती से आप के प्रत्याशी सत्येंद्र जैन समेत अन्य नेता भी थे। यहां अरविंद केजरीवाल झुग्गियों में रह रहे लोगों से मुलाकात की और उनको भाजपा की साजिशों के बारे में भी बताया। उन्होंने कहा कि मेरा झुग्गीवालों से कोई चुनाव का रिश्ता नहीं है, मैं उनके पास चुनाव में वोट मांगने नहीं आता हूं। मैं उनके पास तब आता हूं, जब उनके ऊपर कोई मुसीबत होती है। दिसंबर 2015 में कोई चुनाव नहीं था। मैं रात को जब 2 बजे आया था तब झुग्गी तोड़ने के लिए कई बुलडोजर खड़े थे। मैंने लोगों की झुग्गियां टूटने से बचाई थीं। ऐसे ही जब भी झुग्गी वालों पर कोई मुसीबत आएगी तो मैं छोटा भाई बनकर उनके बीच में खड़ा रहूंगा अरविंद केजरीवाल ने कहा कि जैसे-जैसे दिल्ली विधानसभा का चुनाव नजदीक आता जा रहा है, भाजपा का झुग्गीवालों के प्रति मोहब्बत बढ़ती जा रही है। भाजपा के नेता झुग्गियों में जाकर सो रहे हैं। इससे पहले पांच-दस साल नहीं सोए। पिछले महीने भर से भाजपा के नेता झुग्गियों में जाकर सो रहे हैं। इनको झुग्गीवालों से प्यार नहीं है। भाजपा तो अमीरों की पार्टी है। इनको झुग्गीवालों से क्या

लेना-देना है। ये लोग तो झुग्गीवालों को कीड़े-मकोड़े समझते हैं। इनको चुनाव में झुग्गीवालों के वोट चाहिए और चुनाव के बाद झुग्गीवालों की जमीन चाहिए। इनको झुग्गीवालों के वोट और उनकी जमीन से प्यार है। अरविंद केजरीवाल ने कहा कि शनिवार को अमित शाह ने दिल्ली के कई इलाकों से झुग्गीवालों को बुलाया था। वहां अमित शाह ने चुन-चुन कर मुझे गालियां दीं। अमित शाह देश के गृहमंत्री हैं और गृहमंत्री के पद की एक गरिमा होती है। एक गृहमंत्री जो शब्द इस्तेमाल करता है, उसकी मर्यादा रहनी चाहिए। लेकिन अमित शाह ने मेरे खिलाफ जिन शब्दों का चयन किया, उसे सुनकर किसी भी सभ्य आदमी को शर्म आएगी। मुझे गृहमंत्री अमित शाह से कोई द्वेष नहीं है, वह जो कहना चाहें, कहें। मैं राजनीति में अपने मान-सम्मान के लिए नहीं आया। मैं राजनीति में जनता और देश के मान सम्मान के लिए आया हूं। लेकिन अमित शाह ने जिस तरह दिल्ली के झुग्गीवालों से झूठ बोला और उनको गुमराह करने की कोशिश की, आज हम उनके झूठ का पर्दाफाश करने के लिए आए हैं। हम यह बताने आए हैं कि कैसे भाजपा दिल्ली के झुग्गीवालों को गुमराह करने की कोशिश कर रही है।

अरविंद केजरीवाल ने कहा कि अमित शाह का कहना है कि वह जहां झुग्गी-वहां मकान देंगे। हम भी मानते हैं कि जहां झुग्गी वहां मकान होना चाहिए। लेकिन यहां भाजपा वाले यह नहीं बता रहे हैं कि किसका मकान? जहां झुग्गी वहां इनके दोस्त का मकान, जहां झुग्गी वहां बिल्डरों के मकान। ये लोग जहां झुग्गी वहां झुग्गीवालों के मकान नहीं कह रहे हैं, बल्कि ये कह रहे हैं कि जहां झुग्गी वहां इनके दोस्त का मकान। पूरी दुनिया जानती है कि इनका एक ही दोस्त है। भाजपा की झुग्गीवालों की जमीनों पर नजर है और इन जमीनों को अपने दोस्त को देना चाहते हैं। ये लोग कह रहे हैं कि मोदी जी झुग्गी वालों को मकान बनाकर देंगे। अरविंद केजरीवाल ने कहा कि केंद्र में भाजपा की सरकार आए हुए 11 साल हो गए। इन 11 सालों में इन्होंने झुग्गीवालों के लिए केवल 4700 मकान बनाए हैं। इन्होंने 3 हजार मकान कालकाजी में बनाया है और 1700 मकान अशोक विहार में बनाए हैं। दिल्ली में 4 लाख झुग्गियां हैं। अगर इन्होंने 10 साल में मात्र 4700 मकान बनाए हैं तो दिल्ली के हर झुग्गीवाले को मकान देने में एक हजार साल लगेंगे। इनको कुल 4 लाख मकान बनाने हैं। ये लोग झूठ बोल रहे हैं। इनको मकान नहीं बनाने हैं। इन लोगों ने पूरी प्लानिंग कर रखी है। ये लोग अगले 5 साल में दिल्ली के एक-एक झुग्गी को तोड़कर लोगों को बेघर कर देंगे, उनको सड़क पर ले आएंगे।

संक्षिप्त खबरें

भाजपा और आप ने लोगों को दिया धोखा, कांग्रेस ने दिल्ली के विकास के लिए क्रांतिकारी योजनाएं पेश की: देवेंद्र

नई दिल्ली। दिल्ली प्रदेश कांग्रेस के अध्यक्ष देवेंद्र यादव ने रविवार को आम आदमी पार्टी (आप) और भारतीय जनता पार्टी (भाजपा) पर जोरदार प्रहार किया और कहा कि दोनों पार्टियों ने लोगों को धोखा दिया है और इस समय मतदाताओं को गुमराह करने का काम कर रही हैं। श्री यादव ने आज शकूर बस्ती विधानसभा क्षेत्र में पार्टी के चुनाव कार्यालय का उद्घाटन किया। कांग्रेस ने शकूर बस्ती विधानसभा क्षेत्र से सतीश लूथरा को चुनावी समर में उतारा है। इस मौके पर आयोजित समारोह को संबोधित करते हुए श्री यादव ने भाजपा और आप पर प्रहार करते हुए कहा, भाजपा और आप ने जनता को धोखा देने का काम किया है। भाजपा जहां मतदाताओं को गुमराह करने के लिए अधूरी परियोजनाओं का उद्घाटन कर रही है, वहीं आप के राष्ट्रीय संयोजक ने बिहार और पूर्वांचल के लोगों को फर्जी मतदाता कहकर उनकी भावनाओं को ठेस पहुंचाई है।

आतिशी ने अपने चुनाव के लिए लोगों से लगाई चंदे की गुहार

नई दिल्ली। दिल्ली की मुख्यमंत्री आतिशी ने अपने विधानसभा चुनाव लड़ने के लिए लोगों से चंदे की गुहार लगाई। सुश्री आतिशी ने आज संवाददाता सम्मेलन कर कहा कि वह कालकाजी से विधानसभा चुनाव लड़ रही है और इसमें चालीस लाख खर्च करने है। उन्होंने लोगों से चंदे की गुहार लगाते हुए कहा कि गलत तरीके से चुनाव लड़ना आसान है। दिल्ली का 77000 करोड़ बजट है। अगर हम गलत तरीके से पैसे इकट्ठा करना चाहे तो 40 लाख रुपये इकट्ठा करने में एक दिन भी नहीं लगेगा लेकिन आप लोगों के ही डोनेशन से मैं कालकाजी में विधानसभा चुनाव लड़ूंगी। उन्होंने कहा कि जब से आम आदमी पार्टी बनी है, तब से दिल्ली के आम लोगों ने हमारी पार्टी को समर्थन किया और चंदे दिए। 2013 में जब पहला चुनाव लड़े थे, घर-घर जाते थे, लोग छोटे-छोटे डोनेशन देते थे। नुक्कड़ सभा के बाद हम एक चादर फैलाते थे, लोग 10 रुपये, 50 रुपये और 100 रुपये उसमें डालते थे। मुख्यमंत्री ने कहा कि आप की ईमानदारी की राजनीति इसलिए हो पाई है कि हम बड़े-बड़े उद्योगपतियों से चंदा नहीं लेते थे। जिन दलों ने उद्योगपतियों से पैसा लिया फिर उनकी सरकारें उद्योगपतियों के लिए काम करती हैं। आज मैं अपने चुनाव के लिए एक क्राउड फंडिंग की शुरूआत कर रही हूं।

एसयूवी कार ने टैक्सी में मारी टक्कर, दो की मौत, एक की हालत गंभीर

नई दिल्ली। दिल्ली के मयूर विहार में रविवार की सुबह एक भीषण सड़क हादसा हुआ है। इसमें एक महिला समेत दो मौत हो गई है। वहीं एक युवक घायल बताया जा रहा है। जिसके चलते उसे अस्पताल में भर्ती कराया गया है। इस घटना के बाद से एसयूवी कार चालक फरार है। जिसकी पुलिस तलाश कर रही है। जानकारी के मुताबिक, यह हादसा मयूर विहार थाना क्षेत्र के अंदर नोएडा लिंक रोड पर हुआ है। बताया जा रहा है कि दिल्ली से नोएडा जा रही एक एसयूवी सेंट्रल वर्ज से टकराई और फिर सामने से आ रहे ट्रैफिक में जा घुसी।

जानें क्या है वजीराबाद मेट्रो स्टेशन का नाम, जिसको लेकर उठा विवाद

नई दिल्ली। राजधानी दिल्ली में फेस 4 मेट्रो का निर्माण कार्य लगभग पूरा हो चुका है और ट्रैक पर मेट्रो ट्रायल के रूप में चलाई भी जा रही है। वहीं मेट्रो स्टेशन भी लगभग बनकर तैयार हो गए हैं। मगर वजीराबाद में बने मेट्रो स्टेशन को लेकर अब विवाद होने लगा है। विवाद मेट्रो स्टेशन बनाने को लेकर नहीं, बल्कि मेट्रो स्टेशन के नाम बदलने को लेकर हुआ है। वजीराबाद के एंट्री गेट पर बन रहे मेट्रो स्टेशन का नाम जगतपुर गांव रखा गया है। वहीं संगम विहार के एंट्री गेट पर बन रहे मेट्रो स्टेशन का नाम झड़ौदा माजरा रखा गया। जिसके बाद स्थानीय लोग इस बात का विरोध कर रहे हैं।

दस साल में भाजपा ने झुग्गियों को तोड़कर तीन लाख लोगों को बेघर किया : केजरीवाल

प्रात : किरण/ एजेंसी

नई दिल्ली। आम आदमी पार्टी के राष्ट्रीय संयोजक अरविंद केजरीवाल ने कहा है कि पिछले 10 साल में भारतीय जनता पार्टी (भाजपा) ने कई झुग्गियों को तोड़ा और तीन लाख से अधिक लोगों को बेघर किया। श्री केजरीवाल ने रविवार को यहाँ शकूरबस्ती के रेलवे झुग्गी कैंप का दौरा कर कहा कि जैसे-जैसे दिल्ली विधानसभा का चुनाव नजदीक आता जा रहा है, भाजपा की झुग्गीवालों के प्रति मोहब्बत बढ़ती जा रही है। भाजपा के नेता झुग्गियों में जाकर सो रहे हैं। इससे पहले पांच-दस साल नहीं सोए। पिछले महीने भर से भाजपा के नेता झुग्गियों में जाकर सो रहे हैं। इनको झुग्गीवालों से प्यार नहीं है। भाजपा तो अमीरों की पार्टी हैं। इनको झुग्गीवालों से क्या लेना-देना है। ये लोग तो झुग्गीवालों को कीड़े-मकोड़े समझते हैं। इनको चुनाव में झुग्गीवालों के वोट चाहिए और चुनाव के बाद झुग्गीवालों की जमीन चाहिए। उन्होंने कहा, शनिवार को केंद्रीय गृह मंत्री अमित शाह ने दिल्ली के कई इलाकों से झुग्गीवालों को बुलाया था। वहां अमित शाह ने चुन-चुन कर मुझे गालियां दीं। अमित शाह देश के गृहमंत्री हैं और गृहमंत्री के पद की एक गरिमा होती है। एक गृहमंत्री जो शब्द इस्तेमाल करता है, उसकी मयार्दा रहनी चाहिए। हमें

गृहमंत्री अमित शाह से कोई द्वेष नहीं है, वह जो कहना चाहें, कहें। मैं राजनीति में अपने मान-सम्मान के लिए नहीं आया। मैं राजनीति में जनता और देश के मान सम्मान के लिए आया हूं। आप नेता ने कहा कि श्री शाह का कहना है कि वह जहां झुग्गी-वहां मकान देंगे। हम भी मानते हैं कि जहां झुग्गी वहां मकान होना चाहिए लेकिन यहां भाजपा वाले यह नहीं बता रहे हैं कि किसका मकान ? जहां झुग्गी वहां इनके दोस्त का मकान, जहां झुग्गी वहां बिल्डरों के मकान। ये लोग जहां झुग्गी वहां झुग्गीवालों के मकान नहीं कह रहे हैं, बल्कि ये कह रहे हैं कि जहां झुग्गी वहां इनके दोस्त का मकान। पूरी दुनिया जानती है कि इनका एक ही दोस्त है। भाजपा की झुग्गीवालों की जमीनों पर नजर है और इन जमीनों को अपने दोस्त को देना चाहते हैं। उन्होंने कहा कि केंद्र में भाजपा की सरकार आए हुए 11 साल हो गए। इन 11 सालों में इन्होंने झुग्गीवालों के लिए केवल 4700 मकान बनाए हैं। इनमें तीन हजार मकान कालकाजी में बनाया और 1700 मकान अशोक विहार में बनाए हैं। दिल्ली में चार लाख झुग्गियां हैं। अगर इन्होंने 10 साल में मात्र 4700 मकान बनाए हैं, तो दिल्ली के हर झुग्गीवाले को मकान देने में एक हजार साल लगेंगे। इनको कुल चार लाख मकान बनाने हैं। ये लोग झूठ बोल रहे हैं। इनको मकान नहीं बनाने हैं। इन लोगों ने पूरी प्लानिंग कर रखी है। ये लोग अगले पांच साल में दिल्ली के एक-एक झुग्गी को तोड़कर लोगों को बेघर कर देंगे, उनको सड़क पर ले आएंगे। श्री केजरीवाल ने श्री शाह को चुनौती देते हुए कहा कि पिछले 10 साल में आपने जितने झुग्गी वालों को बेघर किया है, वे सारे मामले अदालत में हैं, उन सारे मामलों को अगले 24 घंटे में वापस ले लें। दिल्ली के जितने झुग्गी वालों के खिलाफ आपने केस कर रखे हैं, उन्हें वापस ले लें। उन्होंने कहा कि श्री शाह ने जिन-जिन लोगों को उजाड़ा था, उन सभी को वापस उसी जमीन पर लाकर बसा दें तो वह (श्री केजरीवाल) चुनाव नहीं लड़ेंगे।

उन्होंने कहा, मैं एक आम आदमी हूं। मैं इन्हीं लोगों की वजह से राजनीति में आया था। अगर मेरी वजह से इन लोगों की जान और घर बच जाते हैं तो मेरा चुनाव से क्या लेना-देना है। आप इनके मकान बनाकर दिखाओ मैं चुनाव नहीं लड़ूंगा। अगर ये ऐसा नहीं करते हैं तो मैं चुनाव लड़ूंगा और मैं इनके लिए ढाल बनकर खड़ा रहूंगा। मैं देखता हूं कि भाजपा वाले इनकी झुग्गियां कैसे तोड़ते हैं।

सीएम आतिशी ने चुनाव लड़ने के लिए की क्राउड फंडिंग कैंपेन की शुरूआत, दिल्ली और देशवासियों से आर्थिक मदद की अपील

प्रात : किरण/ एजेंसी

नई दिल्ली। दिल्ली की मुख्यमंत्री और कालकाजी विधानसभा सीट से आम आदमी पार्टी की प्रत्याशी आतिशी ने चुनाव लड़ने के लिए क्राउड फंडिंग कैंपेन की शुरूआत की है। उन्होंने दिल्ली और देश भर के लोगों से अपील करते हुए कहा कि गलत तरीके से रुपए इकट्ठा करना एक मुख्यमंत्री के लिए बहुत आसान है, लेकिन हम ऐसा नहीं करते हैं। अगर हम फ्लाइओवर बनाने वाले से पैसे लेते तो कुछ महीने में ही फ्लाईओवर में दरारें पड़ जातीं। अगर प्राइवेट स्कूलों और अस्पतालों वालों से पैसे लेते तो हम सरकारी स्कूल-अस्पताल ठीक नहीं कर पाते और न तो दिल्लीवालों को फ्री इलाज दे पाते। वहीं, दूसरी पार्टियां चुनाव लड़ने के लिए बड़े-बड़े उद्योगपतियों व बिजनेसमैन से पैसे लेती हैं और सत्ता में आने के बाद उनके लिए काम करती हैं।

आम आदमी पार्टी की वरिष्ठ नेता और दिल्ली की सीएम आतिशी ने पार्टी मुख्यालय में प्रेसवार्ता कर कहा कि जबसे आम आदमी पार्टी बनी है, तबसे दिल्ली के आम लोगों ने आम आदमी पार्टी को सपोर्ट किया। दिल्ली के लोगों ने आम आदमी पार्टी को डोनेट किया और उसे चुनाव लड़ने के पैसे दिए। 2013 में जब हम पहला चुनाव लड़े थे, हम दिल्ली में घर-घर जाते थे तो कोई हमें 10 रुपए, 50 रुपए, 100 रुपए तो कोई 500 रुपए देता था। लोगों के इन छोटे-छोटे डोनेशन से आम आदमी पार्टी ने चुनाव लड़ा और जीता। जब हम नुक्कड़ सभा करते थे, तो एक चादर फैलाते थे और दिल्ली के गरीब से गरीब परिवार से आने वाले भी अनेकों लोग इस ईमानदार राजनीति को सपोर्ट करने के लिए अपनी क्षमता के अनुसार उसमें पैसे डालते थे। सिर्फ 2013 में ही नहीं, बल्कि 2015 और 2020 के चुनाव में भी देशभर से आम लोगों ने आम आदमी पार्टी को ईमानदार राजनीति करने के लिए डोनेट किया। सीएम आतिशी ने कहा कि आम आदमी पार्टी की ईमानदार और काम की राजनीति इसलिए संभव हो पाई है क्योंकि हम चुनाव लड़ने के लिए बड़े-बड़े बिजनेसमैन दोस्तों से चंदा नहीं लेते हैं। आज हमारे देश के लोकतंत्र और यहां की राजनीति की यह सबसे बड़ी समस्या है कि राजनैतिक पार्टियां और उम्मीदवार चुनाव लड़ने के लिए बड़े-बड़े उद्योगपतियों और ठेकेदारों से पैसे लेते हैं। इसलिए बाद में जब वो सत्ता में आते हैं तो खुद तो वह अपने लिए भ्रष्टाचार से पैसे कमाते ही हैं साथ ही उनका सारा समय अपने इन उद्योगपति दोस्तों को बड़े-बड़े कॉन्ट्रैक्ट दिलवाने में जाता है। वो सरकारें भी उन्हीं बिजनेसमैन और उद्योगपतियों के लिए काम करती हैं जिनके पैसे से वो पार्टियां चुनाव लड़कर जीती हैं।

कांग्रेस ने की युवा उड़ान योजना की घोषणा, युवाओं को हर महीने 8500 रुपये देने का एलान

प्रात : किरण/ एजेंसी

नई दिल्ली। कांग्रेस ने रविवार को युवा उड़ान योजना नाम से दिल्ली विधानसभा चुनाव को लेकर अपनी तीसरी गारंटी की घोषणा की और इस योजना के तहत सत्ता में आने पर यहां के बेरोजगार युवक-युवतियों को हर महीने 8500 रुपये देने का एलान किया।

कांग्रेस के राष्ट्रीय महासचिव एवं राजस्थान के पूर्व उपमुख्यमंत्री सचिन पायलट ने पार्टी के प्रदेश मुख्यालय राजीव भवन में इस योजना की घोषणा करते हुए कहा, आज महान विचारक स्वामी विवेकानंद जी की जयंती है, जो युवाओं के प्रेरणा स्रोत थे। दिल्ली में युवाओं के भविष्य पर प्रदेश सरकार और केंद्र सरकार का कोई ध्यान नहीं है। दिल्ली में इतिहास गवाह है कि यहां जब-जब कांग्रेस की सरकार रही है, तब-तब यहां के विकास को पूरे देश में लोग अग्रिम मानते आए हैं। दिल्ली में जिस जिम्मेदारी से हम वादा करेंगे, उसी जिम्मेदारी के साथ उसे पूरा भी करेंगे। मुझे पूरा विश्वास है कि 05 फरवरी को जब दिल्ली के लोग मतदान करेंगे, तो इतिहास को याद करेंगे कि किसने क्या कहा और क्या किया।ह्व

उन्होंने कहा कि दिल्ली का विधानसभा चुनाव बहुत ही महत्वपूर्ण है। इन चुनावों में हमारे कार्यकर्ता और नेता अपनी जिम्मेदारी निभा रहे हैं। उन्होंने कहा, ह्लहमने जनता के बीच जाकर उनकी समस्याएं सुनीं, फिर उन समस्याओं पर विशेषज्ञों से चर्चा करने के बाद अब गारंटी पेश कर रहे हैं। उन्होंने कहा, पूरे देश में युवा परेशान हैं। दिल्ली में भी युवाओं की हालत चिंताजनक है, लेकिन केंद्र और प्रदेश सरकार ने युवाओं पर ध्यान नहीं दिया। आम आदमी पार्टी (आप) और भारतीय जनता पार्टी (भाजपा) ने एक-दूसरे पर सिर्फ आरोप लगाए, खुद के वादे पूरे नहीं किए और जनता को भूल गई, लेकिन कांग्रेस अपनी जिम्मेदारी समझती है।

इसलिए पूरी प्रतिबद्धता के साथ हम गारंटी पेश कर रहे हैं, क्योंकि जनता जानती है कि हम जो कहते हैं, वो कर दिखाते हैं। उन्होंने कहा, दिल्ली में रहने वाले हमारे युवा और शिक्षित साथियों को संबल देना सरकार का दायित्व है। अगर युवा हतोत्साहित होगा तो ये देश के लिए अच्छी बात नहीं है। इसलिए हमने निर्णय लिया है कि दिल्ली में कांग्रेस सरकार बनने के बाद शिक्षित और बेरोजगार युवाओं को एक साल की अप्रेंटिसशिप और 8,500 रुपए की आर्थिक मदद दी जाएगी। हमारी कोशिश रहेगी कि इस एक साल में युवा अपनी कार्यकुशलता को बढ़ाकर उसी क्षेत्र में आगे बढ़ें, जिसकी उन्होंने प्रशिक्षण लिया है।

उन्होंने कहा, ह्लरोजगार का निर्माण करना किसी भी सरकार की पहली प्राथमिकता होनी चाहिए, लेकिन केंद्र और प्रदेश सरकार दोनों ने बेरोजगारों को नजरअंदाज किया। पढ़े-लिखे बच्चों को रोजगार देना चाहिए था, लेकिन मौका मिलने के बाद भी दोनों सरकारें काम नहीं कर पाईं। कांग्रेस ने हमेशा जनता के लिए काम किया। सूचना प्रौद्योगिकी (आईटी) के क्षेत्र में कांग्रेस सरकार ने बेहतरीन काम किया, जिसमें मैं खुद मंत्री था। आज दिल्ली में राजनीति सिर्फ आरोप-प्रत्यारोप की रह गई है, लेकिन अब लोग बेहतर विकल्प चाहते हैं। हमें उम्मीद है कि आने वाले चुनावों में जनता कांग्रेस पार्टी को चुनेगी और सरकार बनाएगी। वहीं प्रदेश कांग्रेस समिति के अध्यक्ष देवेंद्र यादव ने कहा, हमने बहुत सोझ-समझकर 'युवा उड़ान योजना' पेश की है। ये योजना उन शिक्षित युवाओं के लिए है, जो बेरोजगारी की मार झेल रहे हैं। हम युवा उड़ान योजना के जरिए युवाओं को एक दिशा देना चाहते हैं। इस योजना के तहत पंजीकृत शिक्षित बेरोजगार युवाओं को हर महीने 8,500 रुपए मिलेंगे। हमारी सरकार की कोशिश रहेगी कि युवाओं का कौशल विकास भी हो, ताकि कौशल के मुताबिक उन्हें रोजगार मिल सके।

इससे पहले दिल्ली कांग्रेस के प्रभारी काजी निजामुद्दीन ने कहा कि भारत जोड़ो यात्रा' के दौरान कांग्रेस के पूर्व अध्यक्ष राहुल गांधी दिल्ली आए और लोगों से मिले, उसके बाद भी लोगों से मुलाकात करते रहे। उसी तरह 'दिल्ली न्याय यात्रा' में दिल्ली प्रदेश कांग्रेस के अध्यक्ष देवेंद्र यादव ने दिल्ली के लोगों से संवाद स्थापित किया। इन्हीं संवादों के आधार पर निष्कर्ष निकला कि केंद्र और दिल्ली सरकार की नीतियों ने युवाओं की कमर तोड़ रखी है। कांग्रेस युवाओं की ये तकलीफ समझती है, इसलिए हम उनके लिए अपनी तीसरी गारंटी लेकर आए हैं। सभी जानते हैं कि कांग्रेस जो कहती है, वो कर दिखाती है।

दिल्ली में बारिश के बाद कड़ाके की ठंड, कोहरा ढाएगा कहर

प्रात : किरण/ एजेंसी

नई दिल्ली। दिल्ली सहित आस-पास के शहरों में शनिवार शाम को झमाझम बारिश हुई। बारिश से दिल्ली एनसीआर में मौसम का मिजाज बदल गया। घरों से बाहर निकले लोगों को मुश्किलों का सामना करना पड़ा। वहीं, बारिश के बाद ठिठुरन वाली ठंड दिल्ली में बढ़ गई है। मौसम विभाग ने रविवार के लिए बारिश का अलर्ट जारी किया है। मौसम विभाग के अनुसार आसमान में बादल छाए रहने और हल्की बारिश होने का पूवार्नुमान है। दिल्ली में अधिकतम और न्यूनतम तापमान क्रमशः 17 और 10 डिग्री सेल्सियस के आसपास रहने की संभावना है। 17 जनवरी तक कोहरे को असर जारी रहेगा। दिल्ली के कुछ हिस्सों में शनिवार शाम झमाझम बारिश हुई। मौसम विभाग के मुताबिक सफदरजंग मौसम केंद्र ने 1.6 मिलीमीटर (मिमी), पालम में 2.4 मिमी, दिल्ली विश्वविद्यालय में दो मिमी, पूसा में 1.5 मिमी और नजफगढ़ में चार मिमी बारिश दर्ज की गई। मौसम विभाग ने अपने पूवार्नुमान में यह भी बताया कि आने वाले घंटों में करावल नगर, दिलशाद गार्डन, सीमापुरी, शाहदरा, विवेक विहार, प्रीत विहार, नजफगढ़, द्वारका, उत्तर नगर, पश्चिम विहार, रोहिणी, अक्षरधाम, आयानगर और डेरामंडी सहित दिल्ली-एनसीआर (राष्ट्रीय राजधानी क्षेत्र) के कई हिस्सों में बारिश जारी रहने की संभावना है। बारिश के बाद राष्ट्रीय राजधानी में न्यूनतम तापमान 7।7 डिग्री सेल्सियस दर्ज किया गया। अधिकतम तापमान सामान्य से तीन डिग्री कम 17 डिग्री सेल्सियस दर्ज किया गया। दिन में आर्द्रता 100 प्रतिशत रही। 13 से 16 जनवरी तक दिल्ली में मौसम साफ रहेगा। कुछ जगहों पर मध्यम और कहीं-कहीं घना कोहरा रहेगा। मौसम विभाग के अधिकारियों ने बताया कि सुबह शहर में घना कोहरा छाये रहने के कारण 45 ट्रेनें देरी से चलीं और विजिबिलिटी कम हो गई। मौसम विभाग के अनुसार सफदरजंग में शुक्रवार देर रात 12.30 बजे से 1.30 बजे तक न्यूनतम दृश्यता 50 मीटर रही, जो उसके बाद सुधर कर 200 मीटर हो गई।

दिल्ली मेट्रो ने निकाली वैकेंसी, नौकरी पाने के लिए नहीं देना होगा रिटेन एग्जाम

प्रात : किरण/ एजेंसी

नई दिल्ली। आज के समय में दिल्ली मेट्रो लोगों के सफर को बेहद आसान बना बना रहा है और साथ ही समय की भी बेहद बचत होती है। अधिकतर लोग अपने काम पर जाने और वापस आने के लिए मेट्रो का सहारा लेते हैं। बहुत से लोगों का दिल्ली मेट्रो में काम करने का सपना भी होता है। ऐसे में अगर आप भी दिल्ली मेट्रो में नौकरी करने का सपना रखते हैं, तो ये खबर खास आपके लिए है। डीएमआरसी ने दिल्ली मेट्रो में सुपरवाइजर (र&ळ) के पदों के लिए वैकेंसी निकाली है। इसके लिए दिल्ली मेट्रो का आधिकारिक वेबसाइट ‘ि३१ङ्म९’.ङ्क पर जाकर आवेदन किया जा सकता है। दिल्ली मेट्रो के सुपरवाइजर पद के लिए आवेदन शुरू हो चुके हैं।

55 वर्ष से कम होनी चाहिए आयु सीमा: बता दें कि दिल्ली मेट्रो में सुपरवाइजर के 8 पदों बहाली होनी है। इसको लेकर आवेदन शुरू हो चुका है। इस भर्ती के लिए 30 जनवरी तक आवेदन किए जा सकते हैं। अगर आप भी आवेदन करना चाहते हैं, तो आपकी उम्र 55 वर्ष से कम होनी चाहिए। इसके अलावा उम्मीदवार के पास सरकार द्वारा मान्यता प्राप्त विश्वविद्यालय से इलेक्ट्रॉनिक्स, इलेक्ट्रिकल या इंजीनियरिंग ब्रांच में तीन साल का डिप्लोमा या डिग्री होनी जरूरी है। अगर आपके पास साइंस ग्रेजुएट डिग्री है, तो भी आप इस भर्ती के लिए आवेदन कर सकते हैं।

क्या है भर्ती प्रक्रिया: डीएमआरसी भर्ती 2025 के लिए उम्मीदवारों को लिखित परीक्षा नहीं देनी होगी। उम्मीदवारों का चयन इंटरव्यू के आधार पर किया जाएगा। योग्य उम्मीदवार उ्रटफउ भर्ती 2025 के लिए अपना आवेदन ईमेल या स्पीड पोस्ट के जरिए जमा करा सकते हैं। आवेदन फॉर्म के साथ सभी जरूरी डॉक्यूमेंट्स अटैच करना बेहद जरूरी है।

आवेदन करने के बाद शॉर्टलिस्ट किए गए उम्मीदवारों को इंटरव्यू के लिए बुलाया जाएगा। शॉर्टलिस्ट किए गए उम्मीदवारों की सूची डीएमआरसी की आधिकारिक वेबसाइट पर जारी की जाएगी। इसके लिए फरवरी के पहले हफ्ते में लिस्ट जारी की जा सकती है। फरवरी 2025 के दूसरे सप्ताह में ऑनलाइन या ऑफलाइन मोड से इंटरव्यू किए जाएंगे।

घोषणा साल 2020 में महज कुछ वोटों से ‘आप’ के प्रत्याशी हैट्रिक लगाने से चूक गए थे।

दिल्ली चुनाव : लक्ष्मी नगर में ‘आप’ की लहर में भी जीती थी भाजपा, इस बार किसके पक्ष में होगा जनादेश?

प्रात : किरण/ एजेंसी

नई दिल्ली। उत्तर पूर्वी दिल्ली के अंतर्गत आने वाली लक्ष्मी नगर विधानसभा सीट साल 2008 में परिसीमन के बाद अस्तित्व में आई। यहां पर पहली बार विधानसभा के चुनाव 2008 में हुए। वर्तमान में यहां से भाजपा के अभय वर्मा विधायक हैं और इस बार भी भाजपा ने उन पर भरोसा दिखाया है। इस सीट पर अब तक हुए चार चुनावों में आम आदमी पार्टी के प्रत्याशी दो बार विजयी हुए हैं। साल 2020 में महज कुछ वोटों से ‘आप’ के प्रत्याशी हैट्रिक लगाने से चूक गए थे। यह उन आठ विधानसभा सीटों में से एक थी जहां भाजपा ने जीत हासिल की। लक्ष्मी नगर विधानसभा में सैकड़ों कोचिंग संस्थान हैं। जहां उत्तर प्रदेश-बिहार, राजस्थान, हिमाचल प्रदेश सहित देश के दूसरे राज्यों से छात्र सिविल परीक्षा की तैयारी के लिए आते हैं। पांडव नगर, लक्ष्मी नगर, ललिता पार्क सहित अन्य जगहों पर पांच हजार रुपये के कमरे में रूम शेयर कर छात्र अपना भविष्य बनाने के लिए कड़ी मेहनत करते हैं। लक्ष्मी नगर घनी आबादी वाला क्षेत्र है। जहां से अक्षरधाम मंदिर महज कुछ दूरी पर स्थित है। यहां से आनंद विहार रेलवे स्टेशन, नई दिल्ली रेलवे स्टेशन, कश्मीरी गेट कुछ समय की दूरी पर स्थित है। इस सीट के इतिहास की बात करें तो भाजपा के अभय वर्मा ने 2020 में आम आदमी पार्टी के प्रत्याशी नितिन त्यागी को पटखनी दी थी। साल 2025 के विधानसभा चुनाव में इस सीट पर त्रिकोणीय मुकाबला होने की उम्मीद जताई जा रही है। इस सीट पर भाजपा, कांग्रेस और आम आदमी पार्टी तीनों ने अपने प्रत्याशी मैदान में उतार दिए हैं। लक्ष्मी नगर विधानसभा सीट पर भाजपा ने वर्तमान विधायक अभय वर्मा पर भरोसा जताते हुए एक बार फिर उन्हें टिकट दिया है। आप ने बीबी त्यागी को उम्मीदवार बनाया है जो कभी भाजपा में थे। विधानसभा चुनाव

की घोषणा से पहले वह ह्यआपह्ण में शामिल हो गए। कांग्रेस ने यहां से सुमित शर्मा को टिकट दिया है। पिछले चुनाव में अभय वर्मा को कुल 65,376 वोट मिले। आम आदमी पार्टी के प्रत्याशी नितिन त्यागी को 64,855 वोट मिले। कांग्रेस के हरि दत्त शर्मा को 4,872 वोट मिले। साल 2015 के चुनाव में आप के प्रत्याशी नितिन त्यागी ने 58,229 वोट के साथ भाजपा के बीबी त्यागी को हराया था जिन्हें 53,383 वोट मिले थे। दिल्ली के पूर्व मंत्री कांग्रेस के अशोक कुमार वालिया को 23,627 वोट मिले थे। इससे पहले साल 2013 में आप के विनोद कुमार बिन्नी को 43,052 वोट मिले। कांग्रेस के अशोक कुमार वालिया को 35,300 वोट के साथ दूसरे स्थान पर रहे जबकि भाजपा के अभय वर्मा को 33,849 वोट मिले थे। विधानसभा क्षेत्र के गठन के बाद साल 2008 में कांग्रेस के अशोक कुमार वालिया को 54,252 वोट मिले। भाजपा के मुरारी सिंह पंवार को 31,855 वोट मिले। अविनाश शर्मा (बीएसपी) को 3,527 वोट मिले। लक्ष्मी नगर विधानसभा में कुल 2,06,438 वोटर हैं जिसमें 1,12,327 पुरुष, 94,100 महिला, और 11 थर्ड जेंडर वोटर हैं। इस विधानसभा के अंतर्गत आने वाली कुंदन नगर, बैंक इंक्लेव, विश्वकर्मा पार्क, रमेश पार्क, शकरपुर, ललिता पार्क, पांडव नगर में सबसे बड़ी समस्या पानी की निकासी की है। यहां बरसात के दिनों में जलभराव की समस्या से लोगों को परेशानी होती है। इसके अलावा यहां पर ट्रैफिक जाम की समस्या से भी लोगों को परेशानी होती है। सीवर, टूटी सड़कें, स्वच्छ जल, आवारा पशु सहित अन्य समस्याओं से यहां के लोगों को जूझना पड़ता है। लक्ष्मी नगर विधानसभा क्षेत्र में हर समुदाय और वर्ग के लोग हैं। बड़ी संख्या में यहां दूसरे राज्यों के मूल निवासी भी हैं जो रोजी-रोटी या शिक्षा के लिए यहां आए हैं और यहां के वोटर भी हैं। सामाजिक और आर्थिक दोनों दृष्टि से यहां की आबादी मिली जुली है। यहां 10 फीसदी मुस्लिम छह फीसदी पंडित, 2.7 फीसदी जैन है। यादवों की संख्या भी 1.4 फीसदी है। पंजाबी लोग भी बड़ी संख्या में हैं। यहां बनिया, दलित और ओबीसी वोटर भी हैं। कारोबारियों के साथ नौकरीपेशा लोगों की भी बड़ी तादाद है। वहीं दिहाड़ी मजदूरों और खुद का रोजगार करने वाले स्किल्ड लोगों की संख्या भी काफी है जो यहां की बड़ी आबादी के लिए सेवाएं मुहैया कराते हैं। दिल्ली विधानसभा चुनाव 2025 के लिए मतदान 5 फरवरी को एक चरण में होगा। चुनाव आयोग के मुताबिक कुल 83,49,645 पुरुष, 71,73,952 महिला और 1,261 थर्ड जेंडर को मिलाकर कुल 1.55 करोड़ से ज्यादा मतदाता अपने बहुमूल्य अधिकार का प्रयोग करेंगे।

संक्षिप्त खबरें

सीलमपुर में रात फायरिंग में नाबालिग को लगी गोली

नई दिल्ली। नॉर्थ ईस्ट दिल्ली के सीलमपुर थाना इलाके में बीती रात कई राउंड फायरिंग का मामला सामने आया है। जिसमें एक नाबालिक लड़के को गोली लगी है। घायल 15 साल के लड़के को जग प्रवेश हॉस्पिटल में भर्ती कराया गया था। वहां से उसको दूसरे अस्पताल में रेफर कर दिया गया है। स्थानीय पुलिस पूरे मामले की जांच में जुटी हुई है। घायल लड़के के पिता यामीन ने बताया कि उनका बेटा खाना खाकर दो तीन और लड़कों के साथ बाहर खड़ा था। उसी दौरान एक बदमाश वहां पर आकर फायरिंग करने लगा। जिसमें एक गोली उनके बेटे के घुटने में लग गई। ज्यादा खून बहने से उसकी हालत चिंताजनक है। चाचा मोहम्मद यूनुस का आरोप है, इलाके का ही एक बदमाश गोलियां चलाते हुआ वहां पहुंचा था। जिससे उनके भतीजे के पैर में गोली लग गई।

दिल्ली की जनता आतिशी को कर रही पसंद?, सिर्फ चार घंटे में दे दिया 10 लाख रुपये से ज्यादा का चंदा!

नई दिल्ली। दिल्ली की सीएम आतिशी को महज 4 घंटे में 10 लाख रुपये का चंदा मिला है। उन्होंने रविवार को चुनाव लड़ने के लिए क्राउड फंडिंग अभियान शुरू किया था। जिसके बाद लोग मुख्यमंत्री की मदद के लिए आगे आए और चुनाव लड़ने के लिए मनी ट्रांसफर कर उनकी आर्थिक मदद की है। दरअसल, दिल्ली की सीएम आतिशी ने रविवार को एक प्रेस कॉन्फ्रेंस संबोधित की और क्राउड फंडिंग के लिए एक ऑनलाइन लिंक जारी किया। इस दौरान उन्होंने लोगों से अपील करते हुए कहा कि उन्हें आगामी चुनाव लड़ने के लिए 40 लाख रुपये की जरूरत है। ऐसे में आप लोग हमें 100 से लेकर एक हजार रुपये तक की आर्थिक मदद कर सकते हैं,जो हमें चुनाव लड़ने में मदद करेगा। आतिशी ने ये भी कहा था कि आम आदमी पार्टी ने हमेशा आम आदमी से मिले छोटे-छोटे दान की मदद से चुनाव लड़ा है, जिससे उसे काम और ईमानदारी की राजनीति को आगे बढ़ाने में मदद मिली है खबरों को मानें, तो आतिशी को 176 लोगों ने 10,32, 000 रुपये का चंदा दे दिया है। जिस हिसाब से उन्हें चुनावी फंडिंग मिल रही है। उसे देखते हुए लग रहा है कि अगले कुछ ही घंटों में आतिशी को 40 लाख रुपये चुनाव लड़ने के लिए मिल जाएंगे। इससे पहले दिसंबर में अअढ के वरिष्ठ नेता और जंगपुरा से उम्मीदवार मनीष सिसोदिया ने एक क्राउडफंडिंग प्लेटफॉर्म लॉन्च किया था और अपने चुनाव लड़ने के लिए लोगों से चंदा देने की अपील की थी।हालांकि, सिसोदिया ने अभी तक ये नहीं बताया कि उन्हें कितना चंदा मिला है।

आप नेता को दिल्ली पुलिस ने भेजा नोटिस, फर्जी आधार वाले बांग्लादेशियों से जुड़ा है मामला

नई दिल्ली। दिल्ली पुलिस ने बांग्लादेशी घुसपैठियों से जुड़े फर्जी आधारकार्ड मामले में आम आदमी पार्टी के विधायक महेंद्र गोयल को एक बार फिर नोटिस भेजा है। यह नोटिस पहले भी भेजा गया था, लेकिन महेंद्र गोयल ने कहा था कि उन्हें इस बारे में कोई जानकारी नहीं थी। अब पुलिस ने उन्हें जांच में शामिल होने के लिए दोबारा नोटिस भेजा है। महेंद्र गोयल ने शनिवार को कहा कि उन्हें अभी तक कोई नोटिस नहीं मिला है। उन्होंने बताया कि दिल्ली पुलिस के दो अधिकारी उनके घर आए थे और उन्हें नोटिस देने का प्रयास किया था। गोयल ने यह भी कहा कि यह मामला बांग्लादेशियों के लिए आधार कार्ड बनाने से संबंधित है और उन्होंने इस मामले में कोई गलत काम नहीं किया है। महेंद्र गोयल ने आरोप लगाया है कि यह सब राजनीति से प्रेरित है।

दिल्ली विधानसभा चुनाव : आप के सामने आदर्श नगर सीट पर हैट्रिक की चुनौती

नई दिल्ली। दिल्ली विधानसभा चुनाव के ऐलान के साथ तमाम सीटों पर चुनावी जंग रोचक हो चली है। इसी कड़ी में आदर्श नगर विधानसभा सीट पर सबकी नजरें टिकी हुई हैं। आदर्श नगर दिल्ली की एक प्रतिष्ठित और समृद्ध कॉलोनी है, जो अपनी जीवनशैली और सुविधाओं के लिए जानी जाती है। यहां की सड़कें, मेट्रो और बड़ी-बड़ी इमारतें इसे एक ऐतिहासिक और विकसित क्षेत्र बनाती हैं। ऐसे में इस सीट पर आप के सामने जहां जीत की हैट्रिक लगाने की चुनौती है तो वहीं भाजपा उसे रोकने के लिए कटिबद्ध है।साल 2013 के दिल्ली विधानसभा चुनाव में अरविंद केजरीवाल की अगुवाई वाली आम आदमी पार्टी ने दिल्ली की राजनीति में जोरदार एंट्री की थी। आप ने 70 में से 28 सीटों पर जीत हासिल की थी, जिससे यह पार्टी दिल्ली की प्रमुख राजनीतिक ताकत के रूप में उभरी। हालांकि आदर्श नगर सीट पर आप दूसरे स्थान पर रही थी और इस सीट पर भाजपा की जीत हुई थी। इस चुनाव में भाजपा के उम्मीदवार राम किशन सिंघल ने 10,056 मतों के अंतर से जीत दर्ज की थी।

यूपी, बिहार से आए हमारे सम्मानित पुजारी दिल्ली के मंदिरों में सेवा दे रहे हैं, इनके शामिल होने से 'आप' को मजबूती मिलेगी : संजय सिंह

प्रात : किरण/एजेंसी

नई दिल्ली। भाजपा विप्र एकता मंच से पूर्वी दिल्ली के प्रभारी राजेंद्र प्रसाद भारद्वाज रविवार को आम आदमी पार्टी की सनातन सेवा समिति में शामिल हो गए। उनके साथ कृष्ण नगर विधानसभा क्षेत्र से कई मंदिरों के पुजारी भी भाजपा विप्र एकता मंच को छोड़ कर ह्लआपह्व में शामिल हुए। यह सभी पुजारी अरविंद केजरीवाल की नीतियों और कार्यों से प्रभावित होकर आए हैं। ह्लआपह्व के वरिष्ठ नेता और सांसद संजय सिंह ने सभी को पटका पहनाकर आम आदमी पार्टी की सदस्यता दिलाई। उन्होंने कहा कि उत्तर प्रदेश, बिहार समेत पूर्वांचल से आए हमारे सम्मानित पुजारी दिल्ली के विभिन्न मंदिरों में सेवा दे रहे हैं। आज यह लोग आम आदमी पार्टी में शामिल हुए हैं। इनके आने से पार्टी को दिल्ली के अंदर मजबूती मिलेगी। आम आदमी पार्टी के वरिष्ठ नेता एवं राज्यसभा सदस्य संजय सिंह ने रविवार को पार्टी मुख्यालय पर प्रेस वार्ता कर कहा कि आम आदमी पार्टी की सरकार द्वारा दिल्ली के पुजारियों और ग्रंथियों के लिए 18 हजार रुपए प्रति माह की सम्मान राशि घोषित करने के बाद लगातार बड़ी संख्या में पुजारी आम आदमी पार्टी के साथ आ रहे हैं। इसी क्रम में आज विप्र एकता मंच, पूर्वी दिल्ली के प्रभारी राजेंद्र प्रसाद भारद्वाज ने आम आदमी पार्टी में शामिल होने का संकल्प लिया है। अभी तक वह भाजपा से जुड़कर काम कर रहे थे। मैं इनका पार्टी में स्वागत करता हूं। संजय सिंह ने कहा कि राजेंद्र प्रसाद भारद्वाज के साथ कृष्णा नगर के पुजारी दीपक भट्ट, अनारकली के पुजारी बृज राज मिश्रा और रवि शंकर मिश्रा, जगतपुरी से पुजारी रूप शंकर पांडे, कृष्णा नगर से पुजारी सुनील पंडित, परवाना रोड के पुजारी गगन शर्मा, जितर नगर से पुजारी देवी राम पंडित, राशिद मार्केट के पुजारी प्रमोद पाठक, राधेपुरी एक्सटेंशन के पुजारी अनुज मिश्रा और राधेश्याम पार्क से पुजारी राधा वल्लभ शर्मा भी आज आम आदमी पार्टी में शामिल हो रहे हैं। ये सभी लोग पुजारी भी हैं और इनका नाता पूर्वांचल से भी है। यूपी, बिहार और पूर्वांचल से आए हमारे ये सम्मानित पुजारी दिल्ली के मंदिरों में हैं और मुझे खुशी है कि आज ये लोग आम आदमी पार्टी में शामिल हो रहे हैं। इनके आने से आम आदमी पार्टी को और मजबूती मिलेगी। आप सनातन सेवा समिति के दिल्ली प्रदेश अध्यक्ष विजय शर्मा ने कहा कि आम आदमी पार्टी की सनातन सेवा समिति विंग के जरिए हम सभी पुजारियों से मिल रहे हैं और उन्हें बता रहे हैं कि पुजारियों और ग्रंथियों के लिए जो 18 हजार रुपए की सम्मान राशि घोषित हुई है वो कैसे मिलेगी उसकी प्रक्रिया पर काम कर रहे हैं। इसी क्षेत्र में आज यह एक और कदम है। इन सभी पुजारियों का मैं आम आदमी पार्टी में स्वागत करता हूं। वहीं, इस दौरान राजेंद्र प्रसाद भारद्वाज ने कहा कि दिल्ली में आज तक कोई ब्राह्मणों की बात करने वाला नहीं था। लेकिन आज आम आदमी पार्टी इकलौती ऐसी पार्टी है जिसने मंदिर के पुजारियों के बारे में सोचा है। बाकी लोग तो केवल कहकर रह गए कि हम पंडितों और पुजारियों के लिए फलां-फलां चीजें करेंगे। आम आदमी पार्टी ने जो कदम उठाया है वो बेहद सराहनीय है। हम अरविंद केजरीवाल का धन्यवाद करते हैं जिन्होंने ब्राह्मणों और पुजारियों को आगे बढ़ाने के लिए यह अवसर दिया।

दिल्ली विधानसभा चुनाव 2025 : कस्तूरबा नगर में जीत की हैट्रिक लगा चुकी आप और बीजेपी, इस बार राह नहीं आसान

वर्तमान में यहां से आम आदमी पार्टी के मदन लाल विधायक हैं। वह लगातार तीसरी बार इस सीट से विधायक चुने गए हैं। हालांकि, आप ने इस बार अपना उम्मीदवार बदला है, तो वहीं भाजपा और कांग्रेस लंबे समय से चले आ रहे सूखे को खत्म करने के इंतजार में हैं। आइए जानते हैं, कस्तूरबा नगर विधानसभा की समस्याओं और समीकरण के बारे में। कस्तूरबा नगर विधानसभा सीट, दक्षिण पूर्वी दिल्ली में आती है, जो नई दिल्ली लोकसभा निर्वाचन क्षेत्र का हिस्सा है। इस क्षेत्र की गिनती दिल्ली के पॉश इलाकों में होती है।

प्रात : किरण/एजेंसी

नई दिल्ली। दिल्ली की महत्वपूर्ण विधानसभा सीटों में से एक कस्तूरबा नगर विधानसभा सीट पर लड़ाई इस बार रोमांचक है। सत्तारूढ़ आम आदमी पार्टी (आप), भाजपा और कांग्रेस ने अपने-अपने उम्मीदवारों के नामों का ऐलान कर दिया है। वर्तमान में यहां से आम आदमी पार्टी के मदन लाल विधायक हैं। वह लगातार तीसरी बार इस सीट से विधायक चुने गए हैं। हालांकि, आप ने इस बार अपना उम्मीदवार बदला है, तो वहीं भाजपा और कांग्रेस लंबे समय से चले आ रहे सूखे को खत्म करने के इंतजार में हैं। आइए जानते हैं, कस्तूरबा नगर विधानसभा की समस्याओं और समीकरण के बारे में। कस्तूरबा नगर विधानसभा सीट, दक्षिण पूर्वी दिल्ली में आती है, जो नई दिल्ली लोकसभा निर्वाचन क्षेत्र का हिस्सा है। इस क्षेत्र की गिनती दिल्ली के पॉश इलाकों में होती है। कस्तूरबा नगर से लाजपत नगर जैसा इलाका भी सटा हुआ है। यहां कपड़े और जूतों का बाजार भी है। हालांकि, यहां की सबसे बड़ी समस्या ट्रैफिक जाम, प्रदूषण, सड़कों की खराब हालत और पानी है। इस इलाके में सरकारी कॉलोनियां भी हैं, इसके बावजूद इस क्षेत्र को कई समस्याओं का सामना करना पड़ता है।

कस्तूरबा नगर विधानसभा सीट की जातिगत आंकड़ों की बात करें तो यहां दलित मतदाता अहम भूमिका में है। कस्तूरबा नगर में दलित आबादी 11 फीसद है। इसके बाद मुस्लिम आबादी आती है, जो 5.2 फीसद है। इसके अलावा जैन वोटर 0.5 फीसद है और ईसाई 1 फीसद हैं। 1993 से 2020 के विधानसभा चुनाव के नतीजों पर नजर डालें तो कस्तूरबा नगर सीट पर तीन बार बीजेपी, तीन बार आप और एक बार कांग्रेस को जीत मिली है। बीजेपी ने 1993, 1998 और 2003 में बाजी मारी थी। लेकिन कांग्रेस ने 2008 के चुनाव में यह सीट बीजेपी से छीन ली थी। 2013 में हुए चुनाव में आप ने यहां पहली बार जीत दर्ज की थी। वर्तमान में इस सीट पर आप का ही कब्जा है। 2020 विधानसभा चुनाव में आम आदमी पार्टी के मदन लाल को 37,100 वोट मिले थे और उनका वोट शेयर 40.45 फीसद था। वहीं, भाजपा के रविंदर चौधरी को 33,935 वोट मिले थे और उनका वोट शेयर 37 फीसद था, जबकि कांग्रेस के अभिषेक दत्त को 21.42 फीसद वोटों के साथ 19,648 वोट मिले थे। 2025 के विधानसभा चुनाव में आप ने यहां से अपना प्रत्याशी बदल दिया है।

उन्होंने तीन बार के विधायक मदन लाल की जगह रमेश पहलवान को टिकट दिया है। पहलवान बीते साल दिसंबर में अपनी पत्नी और दो बार की पार्षद कुसुम लता के साथ आम आदमी पार्टी में शामिल हो गए थे। वहीं, कांग्रेस ने 2020 विधानसभा चुनाव में तीसरे नंबर पर रहे अभिषेक दत्त पर फिर से दांव चला है। कस्तूरबा नगर विधानसभा क्षेत्र में कुल मतदाता 1,55,478 हैं। इसमें पुरुष मतदाता 85,056 और महिला मतदाता 70,417 हैं। यहां 5 थर्ड जेंडर भी वोटर हैं।

भाजपा नेत्री स्मृति इरानी ने भी माना, गृहमंत्री अमित शाह देश के सीमाओं की सुरक्षा करने में विफल रहे : प्रियंका कक्कड़

प्रात : किरण/एजेंसी

नई दिल्ली। आम आदमी पार्टी की मुख्य प्रवक्ता प्रियंका कक्कड़ ने केंद्रीय गृहमंत्री अमित शाह और भाजपा पर पलटवार करते हुए कहा कि अब तो भाजपा नेत्री स्मृति इरानी ने भी मान लिया है कि गृहमंत्री अमित शाह देश के सीमाओं की सुरक्षा करने में विफल रहे हैं। स्मृति ईरानी ने प्रमुख तौर पर कहा कि गृहमंत्री अमित शाह देश की कानून व्यवस्था संभालने में पूरी तरह नाकाम रहे हैं। अमित शाह की असफलता के चलते ही गुजरात, उत्तर प्रदेश, हरियाणा समेत पूरे देश में रोहिंग्या बसे हुए हैं। रोहिंग्याओं को देश में घुसने के लिए अमित शाह पर देशद्रोह का मुकदमा दर्ज हो और रोहिंग्याओं को दिल्ली के बक्करवाला में बसाने के लिए हरदीप पुरी को गिरफ्तार किया जाए। उन्होंने कहा कि भाजपा के पास दिल्ली के लिए ना कोई काम है, ना कोई विजन है और ना ही कोई सीएम चेहरा है। अब भाजपा को दिल्ली में अपनी हार तय दिख रही है। इसलिए ये लोग आम आदमी पार्टी के विधायकों पर केस कर रहे हैं।

आम आदमी पार्टी की मुख्य प्रवक्ता प्रियंका कक्कड़ ने रविवार को पार्टी मुख्यालय पर प्रेस वार्ता कर कहा कि भाजपा की बड़ी नेत्री स्मृति ईरानी ने एक बहुत महत्वपूर्ण मुद्दा उठाया है जिससे हम इत्तेफाक रखते हैं। स्मृति ईरानी ने प्रमुख तौर पर यह कहा कि गृह मंत्री अमित शाह देश की कानून व्यवस्था संभालने में पूरी तरह नाकाम रहे हैं। और देश के गृह मंत्री होने के नाते अमित शाह देश की सीमाओं की सुरक्षा नहीं कर पाए हैं, जिसके चलते आज देश में हर जगह रोहिंग्या बसे हुए हैं। आज गुजरात, उत्तर प्रदेश और हरियाणा में रोहिंग्या हैं। इतना ही नहीं, म्यांमार, नागालैंड, असम, झारखंड, बिहार और उत्तर प्रदेश पार करके रोहिंग्या दिल्ली पहुंच गए हैं। इससे साफ दिखता है कि अमित शाह न तो देश की बाहरी सीमाओं को सुरक्षित कर पाए और न ही दिल्ली में आंतरिक सुरक्षा की जिम्मेदारी संभाल पाए।

प्रियंका कक्कड़ ने कहा कि दिल्ली की कानून व्यवस्था सीधे तौर पर अमित शाह के अधीन आती है और देश की सीमाओं की सुरक्षा भी उन्हीं के अधीन आती है। स्मृति ईरानी ने आज हिम्मत करके अमित शाह को चुनौती दी है और कहा है कि ऐसे देशद्रोह के मामले में उनके ऊपर मुकदमा होना चाहिए, जो देश के बॉर्डर्स को सुरक्षित करने में बुरी तरह से फेल रहे। प्रियंका कक्कड़ ने कहा कि दिल्ली का चुनाव आते-आते भाजपा वाले ईडी-सीबीआई के छापे भी डलवाएंगे। इसमें सीएम आतिशी के गिरफ्तार होने की भी पूरी संभावना है। आज यह बहुत महत्वपूर्ण मुद्दा है कि देश में हर जगह रोहिंग्या कैसे घुस आए? इसको लेकर अमित शाह के ऊपर देशद्रोह का मुकदमा होना चाहिए। केंद्रीय मंत्री हरदीप पुरी ने सार्वजनिक तौर पर बक्करवाला में रोहिंग्या बसाए हैं, उनको गिरफ्तार करना चाहिए। तभी सारी जानकारी मिलेगी और पता चलेगा कि शनिवार को हमने जो खुलासा किया था कि भाजपा के सांसदों और मंत्रियों के घर पर लोकसभा चुनाव के समय जो केवल 4-5 वोट थे, वो 15 दिसंबर के बाद 40-45 तक कैसे पहुंच गए? क्या कहीं इन लोगों ने वोटों के लिए रोहिंग्या अपने घर में तो नहीं बसाए? इसलिए बहुत जरूरी है कि हरदीप पुरी को गिरफ्तार किया जाए और अमित शाह की जवाबदेही तय की जाए। शनिवार को ह्आपह्व ने भाजपा के सांसदों व मंत्रियों के घर के पते पर 40 से 45 वोट जोड़ने की एप्लिकेशन आने का खुलासा किया था, कहीं इन लोगों वोटों के लिए रोहिंग्याओं को अपने घर में तो नहीं बसाए हैं।

'आप' के गढ़ कोंडली में खाता खोलने के लिए भाजपा ने प्रियंका गौतम को मैदान में उतारा

प्रात : किरण/एजेंसी

नई दिल्ली। दिल्ली विधानसभा चुनाव 2025 का बिगुल बज गया है और सभी राजनीतिक पार्टियों ने अपनी चुनावी तैयारी तेज कर दी है। साल 2008 में पहली बार अस्तित्व में आई कोंडली सीट पर पिछले तीन चुनावों में आप का परचम लहराया है, जबकि भाजपा पहली बार यहां कमल खिलाने की कोशिश में पूरा जोर लगा रही है।उत्तर प्रदेश की सीमा से सटा हुआ कोंडली विधानसभा क्षेत्र पूर्वी दिल्ली लोकसभा के अंतर्गत आता है। यह नोएडा और गाजियाबाद से सटा हुआ है। कोंडली से होते हुए मयूर विहार-फेज-3 और नोएडा की ओर आसानी से जा सकते हैं। दूसरी तरफ कोंडली से होते हुए आनंद विहार बस अड्डा, वैशाली और वसुंधरा एंक्लेव भी पहुंच सकते हैं। कोंडली से महज कुछ ही दूरी पर दिल्ली का सबसे बड़ा डंपिंग साइट गाजीपुर भी है। कोंडली विधानसभा सीट पर 2013 से आम आदमी पार्टी का कब्जा रहा है। साल 2013, 2015 और 2020 के विधानसभा चुनावों में लगातार तीन बार आम आदमी पार्टी के प्रत्याशी ने मैदान मारा है। इस सीट पर जीत का चौका लगाने के लिए आप ने वर्तमान विधायक कुलदीप कुमार को टिकट दिया है। कुलदीप यहां से साल 2020 में जीते थे। आप प्रत्याशी ने यहां से भाजपा और कांग्रेस के प्रत्याशी को पटखनी दी थी। साल 2020 के विधानसभा चुनाव में कुलदीप कुमार को 68,348 वोट मिले। भाजपा के राजकुमार ढिल्लो को 50,441 वोट मिले। कांग्रेस के अमरीश गौतम को 5,861 वोट के साथ तीसरे स्थान पर रहे। इससे पहले 2015 के विधानसभा चुनावों में आप के मनोज कुमार को 63,185 वोट मिले थे।

सेंट्रल दिल्ली में इनके निशाने पर थे लोगों के महंगे मोबाइल

प्रात : किरण/एजेंसी

नई दिल्ली। सेंट्रल डिस्ट्रिक्ट के स्पेशल स्टाफ और तुर्कमान गेट की पुलिस टीम ने मोबाइल झपटमारी की वारदात को अंजाम देने वाले दो शातिर स्नैचर को गिरफ्तार किया है। इनके पास से 11 मोबाइल और तीन स्कूटी बरामद की गई है। इनके पकड़े जाने से पुलिस ने कई मामलों का खुलासा करने का दावा भी किया है। इन्हें पकड़ने के लिए पुलिस ने कई किलो मीटर में लगे सीसीटीवी फुटेज को खंगाला तब जाकर कामयाबी मिली। डीसीपी एम. हर्षवर्धन ने बताया कि स्पेशल स्टाफ की टीम के द्वारा गिरफ्तार झपटमार की पहचान अमन के रूप में हुई है, यह पहाड़गंज इलाके का रहने वाला है। पहले से यह 31 मामलों में शामिल रहा है, जो इसने देशबंधु गुप्ता रोड, कमला मार्केट, सदर बाजार, आनंद पर्वत, सराय रोहिल्ला और इंद्रपुरी इलाके में अंजाम दिया था। इसके पास से आधा दर्जन मोबाइल के अलावा लेडी हैंडबैग, वारदात के दौरान पहने गए कपड़े और दो स्कूटी बरामद की गई। इसकी गिरफ्तारी से पुलिस ने राजेंद्र नगर, देशबंधु गुप्ता रोड थाना के सात मामलों का खुलासा किया गया है। इंस्पेक्टर रोहित कुमार की देखरेख में सब इंस्पेक्टर दीपक, सहायक सब इंस्पेक्टर प्रमोद, हेड कांस्टेबल मुनेश, धीरज और रोहिताश की टीम ने सीसीटीवी फुटेज की मदद से पता लगा करके इसे गंगाराम हॉस्पिटल के पास से पकड़ा है। दूसरे मामले में चांदनी महल थाना के तुर्कमान गेट पुलिस चौकी की टीम ने दिल्ली पुलिस के घोषित बीसी सहित दो आरोपी को गिरफ्तार किया है। इनकी पहचान फैजान और विनय के रूप में हुई है यह दोनों तुर्कमान गेट और दरियागंज के रहने वाले हैं। फैजान को पहले भी 18 महीने के लिए दिल्ली से तड़ीपार किया जा चुका है। यह स्नैचिंग सहित 11 मामलों में पहले से शामिल है। जबकि विनय भी 22 मामलों को अंजाम दे चुका है। जो उसके ऊपर सेंट्रल और नॉर्थ दिल्ली जिला में दर्ज हैं। इनके पास से बरामद मोबाइल और स्कूटी आईपी स्टेट, पहाड़गंज, दरियागंज और कमला मार्केट थाना इलाके से स्नैच और चुराए गए थे। आगे की कार्रवाई पुलिस कर रही है।

दिल्ली के नए स्पेशल पुलिस कमिश्नर होंगे विजय कुमार

प्रात : किरण/एजेंसी

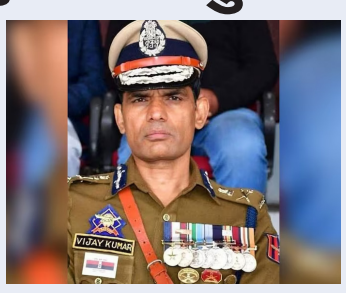

नई दिल्ली। दिल्ली विधानसभा चुनाव की तैयारियों के बीच 1997 बैच के आईपीएस ऑफिसर विजय कुमार को दिल्ली पुलिस के नए स्पेशल कमिश्नर की जिम्मेदारी सौंपी गई है। अभी तक वह जम्मू-कश्मीर में एडीजी कानून-व्यवस्था की जिम्मेदारी संभाल रहे थे।1997 बैच के एजीएमयूटी (अरुणाचल प्रदेश-गोवा-मिजोरम और केंद्र शासित प्रदेश) कैडर के आईपीएस अधिकारी विजय कुमार को दिसंबर 2019 में कश्मीर क्षेत्र में पुलिस महानिरीक्षक नियुक्त किया था। जम्मू-कश्मीर में पोस्टिंग के दौरान उन्होंने केंद्र सरकार की कई बड़ी योजनाओं को जमीन पर उतारने का काम किया था। आतंकवादी गतिविधियों के खिलाफ उनकी नेतृत्व में कई सफल अभियान भी चलाए गए। इससे पहले ही विजय कुमार ने नक्सल प्रभावित दक्षिण बस्तर में शांतिपूर्ण तरीके से आम चुनाव-2019 कराने में मदद की थी। कश्मीर घाटी में अनुच्छेद 370 हटाए जाने के बाद कानून-व्यवस्था की स्थिति को संभालने के लिए विजय कुमार को छत्तीसगढ़ से जम्मू-कश्मीर बुलाया गया। विजय कुमार ने आतंकवादी समूहों की स्थानीय भर्ती को कम करने में भी बड़ी भूमिका निभाई। व्यापक स्तर पर पुलिस अभियान भी शुरू किया था। इस बीच, उनके कार्यकाल में जम्मू-कश्मीर पुलिस की कार्यशैली की आलोचना भी हुई। ऐसा इसलिए क्योंकि कई कार्यकर्ताओं, राजनीतिक कार्यकर्ताओं, नागरिक समाज के कार्यकर्ताओं पर यूएपीए तथा सार्वजनिक सुरक्षा अधिनियम के तहत मामला दर्ज करने की शिकायत की गई। अप्रैल 2020 में सुरक्षाबलों के साथ मुठभेड़ में मारे गए आतंकवादियों के परिवारों को उनका अंतिम संस्कार करने की अनुमति न देने की जम्मू-कश्मीर पुलिस की नई प्रथा की शुरुआत विजय कुमार ने ही की थी। उन्होंने 2023 में कांग्रेस नेता राहुल गांधी की 'भारत जोड़ो यात्रा' को संपन्न कराने में अहम भूमिका निभाई थी और उन्हीं के नेतृत्व में जी-20 सम्मेलन संपन्न हुआ था। यही नहीं, अमरनाथ यात्रा के दौरान श्रद्धालुओं की सुरक्षा सुनिश्चित कराने में प्रमुख भूमिका निभाई थी। विजय कुमार बिहार के सहरसा जिले के रहने वाले हैं। उन्होंने जवाहरलाल नेहरू विश्वविद्यालय से मास्टर डिग्री हासिल की। वह जम्मू-कश्मीर कैडर के एकमात्र आईपीएस अधिकारी हैं, जिन्होंने जम्मू-कश्मीर पुलिस की आतंकवाद विरोधी शाखा, स्पेशल ऑपरेशन ग्रुप में काम किया है।

रफ्तार का कहर ऑडी/ अर्टिगा कार में टक्कर 1 की मौत

नई दिल्ली। दिल्ली में पड़ रही कड़ाके की सर्दी के बीच भी रफ्तार थमने का नाम नहीं ले रहा है। उसी रफ्तार के चक्कर में लोगों की जान भी जा रही है। ताजा मामला साउथ वेस्ट दिल्ली के भीकाजी कामा प्लेस इलाके के की है। जहां आज सुबह सुबह हुई दो कारों की जबरदस्त टक्कर में एक शख्स की मौत हो गई और दूसरा गाड़ी छोड़कर फरार हो गया। सफदरजंग इंक्लेव थाना की पुलिस मामले की छानबीन कर रही है। मृतक की बॉडी को पास के हॉस्पिटल के मोर्चरी में रखवा दिया गया है। उसकी पहचान हो गई है, वह हरियाणा के हिसार का रहने वाला था। इस मामले की पुष्टिडीसीपी साउथ वेस्ट सुरेंद्र चौधरी ने करते हुए बताया कि पुलिस को सुबह 6:30 बजे के आसपास एक्सीडेंट की सूचना मिली थी। मौके पर पुलिस की टीम पहुंची। जिस गाड़ी से यह हादसा हुआ है उस गाड़ी के ड्राइवर की पहचान की जा रही है। जल्द ही उसे पकड़ लिया जाएगा। मौके पर क्राइम टीम को भी जांच के लिए बुलाया गया था। शुरुआती जांच में पुलिस को पता चला कि डिवाइडर क्रॉस करके गाड़ी का एक्सीडेंट हुआ है। टक्कर इतनी जबरदत थी कि अर्टिगा गाड़ी का अगला हिस्सा बुरी तरह क्षतिग्रस्त हो गया। दोनों गाड़ी पर हरियाणा का नंबर लगा हुआ है।

भंडाफोड़ दिल्ली पुलिस ने कहा कि मतदाता पंजीकरण धोखाधड़ी के एक मामले में, जाली दस्तावेजों का उपयोग करके मतदाता पहचान पत्र हासिल करने का प्रयास करने के आरोप में

दिल्ली चुनाव से पहले पहचान पत्र में जालसाजी करने के आरोप में दो लोग गिरफ्तार

प्रात : किरण/एजेंसी

नई दिल्ली। राष्ट्रीय राजधानी में मतदाता पंजीकरण हासिल करने के लिए कथित तौर पर जाली दस्तावेज बनाने के आरोप में दो लोगों को गिरफ्तार किया है। दिल्ली पुलिस ने कहा कि मतदाता पंजीकरण धोखाधड़ी के एक मामले में, जाली दस्तावेजों का उपयोग करके मतदाता पहचान पत्र हासिल करने का प्रयास करने के आरोप में दो व्यक्तियों को गिरफ्तार किया है। विधानसभा निर्वाचन क्षेत्र-09 (किरारी) के निर्वाचन पंजीकरण अधिकारी (ईआरओ) द्वारा 30 दिसंबर, 2024 को दर्ज की गई। शिकायत के बाद गिरफ्तारियां की गई। प्रेम नगर पुलिस स्टेशन में दर्ज शिकायत में बताया गया है कि पांच लोगों ने जाली दस्तावेजों का इस्तेमाल कर नए मतदाता पहचान पत्र के लिए आवेदन किया था। पुलिस ने बताया कि शिकायत के बाद जनप्रतिनिधित्व अधिनियम, 1951 की धारा 31 और बीएनएस अधिनियम की धारा 336(3) और 340(2) के तहत एफआईआर दर्ज की गई। मामले की जांच के लिए एक विशेष जांच दल का गठन किया गया। जांच के दौरान, आवेदनों और सहायक दस्तावेजों की गहन जांच की गई। जबकि तीन आवेदकों के दस्तावेज असली पाए गए, वहीं दिल्ली के रमेश एन्क्लेव निवासी जुबेर के आवेदन में अनियमितताएं पाई गईं। यह पाया गया कि जुबेर के आधार कार्ड पर आवासीय पते के साथ छेड़छाड़ की गई थी, हालांकि आधार नंबर खुद ही असली के रूप में सत्यापित किया गया था। जुबेर ने अपना मूल आधार कार्ड दिल्ली के मंगोल पुरी में अंसारी जन सेवा केंद्र के मालिक नदीम को सौंप दिया था। नदीम ने कथित तौर पर आधार कार्ड पर पता बदल दिया और जुबेर की ओर से मतदाता पंजीकरण के लिए इसे जमा कर दिया। सबूतों के आधार पर जुबेर और नदीम (30) दोनों को गिरफ्तार कर लिया गया। नदीम एक सर्विस सेंटर चलाता है जो लोगों को वोटर आईडी और आधार कार्ड सहित विभिन्न दस्तावेजों के लिए ऑनलाइन आवेदन करने में सहायता करता है। पुलिस के अनुसार, 35 वर्षीय जुबेर एक कैब ड्राइवर है और उसने स्थानीय सरकारी योजनाओं का लाभ उठाने के लिए कथित तौर पर दिल्ली वोटर आईडी के लिए आवेदन किया था। अधिकारियों ने जांच के हिस्से के रूप में नदीम के सर्विस सेंटर की हार्ड डिस्क जब्त कर ली है। ऐसे अन्य व्यक्तियों या नेटवर्क की पहचान करने के प्रयास जारी हैं जो इसी तरह की धोखाधड़ी गतिविधियों में शामिल हो सकते हैं।

दिल्ली पुलिस ने कहा कि मतदाता पंजीकरण धोखाधड़ी के एक मामले में, जाली दस्तावेजों का उपयोग करके मतदाता पहचान पत्र हासिल करने का प्रयास करने के आरोप में दो व्यक्तियों को गिरफ्तार किया है। विधानसभा निर्वाचन क्षेत्र-09 (किरारी) के निर्वाचन पंजीकरण अधिकारी (ईआरओ) द्वारा 30 दिसंबर, 2024 को दर्ज की गई। शिकायत के बाद गिरफ्तारियां की गई।

संक्षिप्त खबरें

सीएम योगी ने पीआरडी जवानों को दिया तोहफा, 500 रुपये प्रतिदिन करने की घोषणा की

लखनऊ। स्वामी विवेकानंद भारत माता के ऐसे सपूत थे, जिन्होंने भारत की प्राचीन आध्यात्मिक संस्कृति को वैश्विक मंच तक पहुंचाने में बड़ी भूमिका का निर्वहन किया था। उन्होंने 1893 में शिकागो समिट के जरिये दुनिया को भारत के महत्व, यहां की आध्यात्मिक और सांस्कृतिक विरासत के बारे में बताया था। स्वामी विवेकानंद अक्सर कहा करते थे कि जितनी बड़ी चुनौती हो, जीत उतनी ही शानदार होती है। यह युवाओं के लिए प्रेरणा है। उनकी इसी प्रेरणा को आत्मसात करके युवा आगे बढ़ रहे हैं। ये बातें मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ ने रविवार को लोकभवन के सभागार में स्वामी विवेकानंद जयंती पर आयोजित राष्ट्रीय युवा दिवस कहीं। सीएम योगी ने पीआरडी के 35 हजार से अधिक जवानों का मानदेय प्रतिदिन 500 रुपये करने की घोषणा की।

सीएम योगी ने कहा कि राष्ट्रीय महोत्सव में प्रदेश के 63 नौजवानों ने भाग लिया था। इनमें से तीन ने स्वर्ण पदक प्राप्त कर प्रदेश का नाम रोशन किया। प्रदेश के युवाओं के सामने कभी पहचान का संकट था, लेकिन आज यहां का युवा अपनी प्रतिभा का लोहा मनवा रहा है। सीएम ने कार्यक्रम में राज्य स्तरीय स्वामी विवेकानंद यूथ अवार्ड के विजेताओं को पुरस्कार वितरित किया। सीएम ने प्रांतीय रक्षक दल के मृतक जवानों के चयनित आश्रितों को चयन पत्र भी सौंपा। साथ ही एआई आधारित एकीकृत पोर्टल युवा साथी का शुभारंभ किया, जिसका उपयोग आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस से एकीकृत कर युवाओं को और अधिक उपयोगी बनाने के लिए किया जाएगा। सीएम ने युवा पीढ़ी को आगाह करते हुए कहा कि जो युवा अपनी जवानी में नशे की चपेट में आ जाए, उसका कोई भविष्य नहीं हो सकता है। नशा नाश का कारण बनता है। युवाओं को नशे के खिलाफ लड़ना होगा। इसके लिए युवक मंगल दल और महिला मंगल दल को भी आगे आना होगा।

उन्होंने कहा कि देश में टीबी के खिलाफ अभियान चल रहा है। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने वर्ष 2025 तक टीबी को देश से समाप्त करने का लक्ष्य रखा है। इसके लिए मरीजों को चिह्नित करने के साथ फ्री उपचार और दवा दी जा रही है। सीएम ने कहा कि देश वर्ष 2047 में दुनिया की सबसे बड़ी ताकत बनकर उभरेगा। उस दिशा में हम सभी को सामूहिक प्रयास करना चाहिए। सीएम योगी ने पीआरडी के मृतक जवानों के आश्रितों को चयन पत्र वितरित किए। उन्होंने कहा कि 1948 में पीआरडी का गठन किया गया था। सीएम योगी ने पीआरडी के जवानों के विभिन्न प्रशिक्षण पर जोर देते हुए कहा कि आपदा के समय उनकी बड़ी भूमिका हो सकती है। सीएम ने कार्यक्रम में पीआरडी के जवानों का मानदेय 500 रुपये प्रतिदिन करने की घोषणा की। सीएम योगी ने पीआरडी के मृतक जवान के आश्रित बस्ती के मो. अमीर, बस्ती की कमला देवी, कानपुर नगर के माधव अवस्थी, अमरोहा के भूपेंद्र और फतेहपुर के चंद्रशेखर को चयन पत्र सौंपा। इसके अलावा विवेकानंद युवा अवार्ड के तहत झांसी के अर्शप्रीत सिंह, बागपत के अमल, गोरखपुर की अर्पिता सिंह, चंदौली के अजीत कुमार सोनी, प्रतापगढ़ के सुंदरम तिवारी, बरेली के सत्यदेव आर्य, गाजीपुर के सिद्धार्थ राय, उन्नाव के अक्षय शुक्ला, बुलंदशहर के आर्यन गौड़ आदि को प्रमाण पत्र और चेक देकर सम्मानित किया।

बहराइच में अनुशासनहीनता और लापरवाही के आरोप में चौकी प्रभारी समेत सात पुलिसकर्मी निलंबित

बहराइच। बहराइच जिले के पुलिस अधीक्षक (एसपी) ने अनुशासनहीनता, लापरवाही, लोगों को परेशान करने, पुलिस की छवि खराब करने और अपने कर्तव्यों का सही ढंग से पालन न करने के आरोप में एक पुलिस चौकी के प्रभारी समेत सात पुलिसकर्मियों को निलंबित कर दिया है। पुलिस अधिकारियों ने रविवार को यह जानकारी दी। यह कार्रवाई जिले के मोतीपुर थाना क्षेत्र में लखीमपुर जिले की सीमा पर स्थित जालिम नगर पुलिस चौकी में तैनात पुलिसकर्मियों पर की गयी। पुलिस सूत्रों के अनुसार दो और तीन जनवरी की रात को एक ट्रक ने चौकी में टक्कर मार दी, जिससे चौकी पूरी तरह क्षतिग्रस्त हो गयी। घटना के बाद थाने में मामला दर्ज कर जांच शुरू कर दी गयी। उनके मुताबिक, दो दिन पहले पुलिस महानिरीक्षक (देवीपाटन मंडल) अमित पाठक ने एसपी राम नयन सिंह के साथ घटनास्थल का निरीक्षण किया था। सूत्रों ने बताया कि अधिकारियों ने निरीक्षण के दौरान चौकी में तैनात पुलिसकर्मियों के व्यवहार को लेकर कुछ अनियमितताएं सामने आईं तथा प्रारंभिक जांच में पुलिसकर्मियों का आचरण संदिग्ध लगा, जिस पर एसपी ने तत्काल कार्रवाई की। उन्होंने बताया कि पुलिस चौकी प्रभारी दिनेश बहादुर, मुख्य आरक्षी नरसिंह, रामानंद व रामसुमेर तथा सिपाही गौरव कुमार, धर्मजीत और अवनीश कुमार सहित सात पुलिसकर्मियों को निलंबित कर दिया गया।

एनईपी-2020 देश की शिक्षा प्रणाली में परिवर्तनकारी बदलाव ला रही: पवन शर्मा

- गुरुग्राम विवि में राष्ट्रीय शिक्षा नीति-2020: भारतीय शिक्षा, संस्कार, मूल्य और आपके सुझाव विषय पर हुआ परामर्श सम्मेलन
- छह जिलों के सभी विश्वविद्यालयों और कॉलेजों, स्कूलों के प्राचार्य, छात्र, शिक्षक और अकादमिक लीडर्स ने लिया भाग

प्रात : किरण संवाददाता

गुरुग्राम। एनईपी के प्रभावी कार्यान्वयन के लिए छात्रों, शिक्षकों और अकादमिक लीडर्स, आम जनता से सुझाव आमंत्रित करने के उदेश्य से गुरुग्राम यूनिवर्सिटी में रविवार को एक दिवसीय परामर्श सम्मेलन आयोजित किया गया। इस मौके पर सामाजिक कार्यकर्ता एवं वरिष्ठ शिक्षाविद् प्रो. डीपी भारद्वाज, माध्यमिक शिक्षा हरियाणा के निदेशक डॉ. जितेन्द्र दहिया, विधायक मुकेश शर्मा, भाजपा जिला अध्यक्ष कमल यादव विशिष्ठ अतिथि एवं हरियाणा केंद्रीय विश्वविद्यालय के निदेशक आईक्यूएसी प्रोफेसर पवन शर्मा ने मुख्य वक्ता के रूप में शिरकत की। जीयू के कुलसचिव डॉ. राजीव कुमार सिंह भी उपस्थित रहे। सम्मेलन का शुभारम्भ अतिथियों द्वारा मां सरस्वती की प्रतिमा के समक्ष दीप प्रज्जवलन कर किया गया। राष्ट्रीय शिक्षा नीति-2020: भारतीय शिक्षा, संस्कार, मूल्य और आपके सुझाव विषय पर आयोजित इस सम्मेलन में फरीदाबाद, महेंद्रगढ़, रेवाड़ी, गुरुग्राम, पलवल, नूहं के सभी विश्वविद्यालयों और कॉलेजों, स्कूलों के प्राचार्य, छात्र, शिक्षक और अकादमिक लीडर्स ने भाग लिया। सभी ने अपने संस्थानों में लागू की गयी एनईपी-2020 के विभिन्न प्रमुख बिंदुओं के बारे में बताया। मुख्य वक्ता प्रोफेसर पवन शर्मा ने कहा कि हरियाणा राष्ट्रीय शिक्षा नीति, 2020 के कार्यान्वयन में अग्रणी राज्य रहा है। उन्होंने एनईपी के प्रभावी कार्यान्वयन के लिए राज्य सरकार के परामर्श सम्मेलन अभियान की सराहना करते हुए कहा कि एनईपी-2020 देश की शिक्षा प्रणाली में परिवर्तनकारी बदलाव ला रही है। उन्होंने आगे कहा कि विकसित भारत 2047 के सपने को पूरा करने में एनईपी 2020 का अहम रोल है।

विशिष्ठ अतिथि प्रो. डीपी भारद्वाज ने कहा कि एनईपी-2020 सीखने के परिदृश्य को बदलने, देश के जनसांख्यिकीय लाभांश का उपयोग करने, आबादी को सशक्त बनाने और सामाजिक-आर्थिक विकास को गति देने की आशा का प्रतीक है। विधायक मुकेश शर्मा ने छात्रों और शिक्षकों के बीच भारतीय ज्ञान प्रणाली को बढ़ावा देने में राष्ट्रीय शिक्षा नीति को महत्वपूर्ण बताया। इस मौके पर स्वामी विवेकानंद जयंती भी मनाई गयी। जानकारी दी गई कि एनईपी के प्रभावी कार्यान्वयन हेतु सभी से सुझाव आमंत्रित करने के लिए एक पोर्टल भी तैयार किया गया है, जिसे रविवार को कुरुक्षेत्र विश्वविद्यालय से लॉन्च किया गया। इसके पश्चात अब राज्य स्तरीय कार्यकारी समितियां और जिला स्तरीय कार्यकारी समितियां नियमित रूप से एनईपी के कार्यान्वयन की प्रगति की देखरेख करेंगी।

कश्मीरी युवा आदान-प्रदान कार्यक्रम : कार्यक्रम के पांचवे दिन कश्मीरी युवाओं ने फरीदाबाद के ऐतिहासिक और सांस्कृतिक औद्योगिक स्थलों का दौरा किया

प्रात : किरण संवाददाता

फरीदाबाद। भारत सरकार के युवा कार्यक्रम एवं खेल मंत्रालय के निदेर्शानुसार नेहरू युवा केंद्र फरीदाबाद द्वारा सतयुग दर्शन इंस्टीट्यूट ऑफ इंजीनियरिंग एंड टेक्नोलॉजी में एक अनोखा कार्यक्रम आयोजित किया जा रहा है ह्यवतन को जानोह्ल नामक इस युवा आदान-प्रदान कार्यक्रम के तहत कश्मीर से आए युवा फरीदाबाद की ऐतिहासिक क्रांति धरा और हरियाणा की संस्कृति को करीब से जानने पहुंचे हैं।

नेहरू युवा केंद्र फरीदाबाद के जिला युवा अधिकारी प्रियंका ने बताया कि यह कार्यक्रम 8 जनवरी से 13 जनवरी तक चलेगा जिसका आज पांचवां दिन है इस दौरान युवा फरीदाबाद और आस-पास के ऐतिहासिक और सांस्कृतिक औद्योगिक स्थलों का दौरा किया देशभर में कुल 15 स्थानों पर ह्यवतन को जानोह्ल कार्यक्रम आयोजित हो रहा है।

श्रीनगर, पुलवामा, अनंतनाग, बारामूला, बडगाम, और कुपवाड़ा जैसे कश्मीर के विभिन्न जिलों से 132 युवाओं का दल मेरठ पहुंचा है इनमें 104 छात्र, 28 छात्राएं सहित 12 टीम लीडर शामिल हैं। कश्मीरी युवा आदान प्रदान कार्यक्रम के पांचवे दिन की शुरूआत योग अभ्यास से हुई जिसके बाद विभिन्न सत्रों की शुरूआत की गई।

पहले सत्र में पैरा ओलंपिक कंचन लखानी ने युवा को फिट इंडिया के संदर्भ में वक्तव्य दिया और युवाओं को खेल के माध्यम से स्वस्थ राष्ट्र-समृद्ध राष्ट्र जड़ को मजबूत बनाने की ओर युवाओं का ध्यान आकर्षित कराया। दूसरे सत्र में कोमल वत्स ने स्वामी विवेकानंद जी के जीवनशैली से युवाओं को अवगत कराया।

तीसरे सत्र में कैलाश गढ़वाल ने साइबर के प्रति जागरूक करते हुए किसी भी अनजान व्यक्ति से अपना ओटीपी शेयर न करने और न ही किसी अनजान के साथ आधार नंबर, ईमेल आईडी, सत्यापन कोड व अन्य किसी भी तरह की निजी जानकारी साझा न करने की अपील की है।

अन्य सत्र में श्री देबोजीत सेन ने कहा कि अक्सर दूरदराज के क्षेत्रों तक कौशल विकास की शिक्षा नहीं पहुंच पाती है, जिसके कारण वहां के युवाओं को जाब ढूंढ़ने के लिए ज्यादा मुश्किलों का सामना करना पड़ता है और वे अक्सर कम वेतन के साथ छोटे काम करते हैं। अगर आप भी 12वीं या ग्रेजुएशन कर चुके हैं लेकिन आपको समझ नहीं आ रहा है कि आप किस दिशा में अपने करियर को ले जाएं, तो अब आपको परेशान होने की जरूरत नहीं है। देश में कई एडटेक कंपनियां आ गई हैं, जो आपको घर बैठे अनेक प्रोफेशनल और स्किल ओरिएंटेड कोर्स आफर कर रही हैं। अब आप देश के किसी भी कोने में बैठकर खुद को किसी भी एक फील्ड में एक्सपर्ट बना सकते हैं। बस जरूरत है एक स्मार्टफोन/लैपटॉप और अच्छे इंटरनेट कनेक्शन की। अन्य दो सत्र यूथ क्लब बनाने और उनको सही तरीके से संचालन करने की प्रक्रिया को सतपाल भाटी और प्रवेश मलिक द्वारा युवाओं को बताया गया इस अवसर पर नित्यानंद यादव, कांता, हिमांशु भट्ट, हरीश पेलक, पुष्पेंद्र ठाकुर, किरपण, सिद्धि, गायत्री, देवानंद, विजेता, विजयपाल, राहुल सहित अन्य सतयुग दर्शन ट्रस्ट के सदस्य गण मौजूद रहे।

वंचित-शोषित वर्ग के विकास से ही चहुंमुखी विकास की परिकल्पना सार्थक होगी : वीरेंद्र

प्रात : किरण संवाददाता

फरीदाबाद। वनवासी रक्षा परिवार का संस्कार परिवार मिलन जागो हिंदुस्तानी समारोह संपन्न हुआ। जिसमें बतौर मुख्य वक्ता वीरेंद्र उपस्थित रहे। उन्होंने अपने उद्बोधन में बताया कि फाउंडेशन के सेवा कार्य संबंधित तमाम गतिविधियां समाज के प्रति समर्पण भाव को अभिव्यक्त करती हैं। संगठन प्रभारी वीरेंद्र ने कहा कि हमारी भारतीय संस्कृति विश्व कुटुंब भाव वाली रही है। सर्वे भवन्तु सुखिनः सर्वे सन्तु निरामयाः सर्वे भद्राणि पश्यन्तु मा कश्चिद् दुःख भाग्भवेत् वाली सोच के साथ हम सभी के भले के लिए कार्यरत रहते हैं। अंतोदय के विकास के लिए समर्पित हैं क्योंकि समाज में अंतिम पंक्ति में खड़े व्यक्ति के उद्धार के बिना विकास के कोई मायने नहीं है। उन्होंने कहा कि वंचित, शोषित वर्ग की चिंता करना उनके भले की सोचना एक सभ्य समाज के लिए आवश्यक है। सभी को साथ लेकर चलने से ही चहुंमुखी विकास के साथ राम राज्य की परिकल्पना सार्थक होगी। सेक्टर-14 स्थित डीएवी पब्लिक स्कूल के सभागार में वनवासी रक्षा परिवार फरीदाबाद पूर्व द्वारा आयोजित संस्कार परिवार स्नेह मिलन ह्यजागो हिंदुस्तानीह्ल कार्यक्रम में विकास केंद्र में अध्ययनरत बच्चों ने देश भक्ति एवं भक्ति रस से ओतप्रोत प्रस्तुतियों ने वातावरण को भक्तिमय बना दिया। राष्ट्रीय मंत्री एवं दक्षिणी संभाग प्रमुख श्रीराम अग्रवाल ने बताया कि घर-घर अलख जगाना है वनवासियों को गले लगाना हैं के ध्येय को धारण कर वनवासी रक्षा परिवार फाउंडेशन वंचितों को जागरूक कर उन्हें समाज की मुख्यधारा से जोड़कर भारतीय संस्कृति एवं परंपराओं से अवगत कराने में प्रयासरत है। उद्योगपति एवं समाजसेवी एम.पी.रूंगटा ने समारोह का समीक्षात्मक विवरण देते हुए अपने उद्बोधन में कहा कि संसाधन सभी के लिए है इसलिए हम सभी को जिम्मेदारी के साथ इसमें सहयोग करना चाहिये। आर. सी चौधरी ने धन्यवाद ज्ञापित किया और मंच संचालन योगेन्द्र ने किया। इस अवसर पर संजय गुप्ता, एस.पी.अग्रवाल, एम.पी. रूंगटा, रमेश गुप्ता, जय किशन गुप्ता, प्रेम चन्द गोयल, संजय लोढ़ा, शंकर खंडेलवाल, राकेश बंसल, सतीश कुमार बंसल, पवनअग्रवाल, दिनेश शर्मा, सुनील अग्रवाल, सतीश चंदीला, जे.एन.झा, योगेश गुप्ता, बलराज गोयल, अनिल मित्तल, सी.एम.गर्ग, सोनू शर्मा, प्रेम प्रकाश पसरीचा, सुरेन्द्र कपूर, प्रो.अनिल जनरेटर, आर.सी.खंडेलवाल, सुरेश कुमार मित्तल, वी.पी.सिंह, एस.के.अग्रवाल, अनिल दुआ, सुरेश चन्द गर्ग, अशोक गोगिया, देव प्रकाश शर्मा, दिनेश शर्मा, नरेश तलवार, श्याम सुन्दर कौशिक, वरिष्ठ अधिवक्ता राजकुमार शर्मा, वरिष्ठ अधिवक्ता ओ.पी.शर्मा,धर्मेंद्र कौशिक सहित उद्योगपति, समाजसेवी एवं अन्य प्रबुद्धजन नागरिक उपस्थित रहे।

हरियाणा में पैसे दोगुना करने के नाम पर महिला को ठगा, बलात्कार

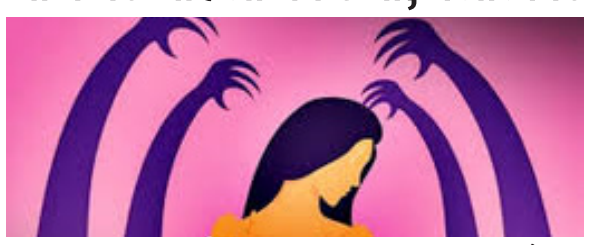

गुरुग्राम। हरियाणा के सोहना से एक बलात्कार का मामला सामने आया है। यहां पैसे दोगुना करने के बहाने महिला के साथ बार-बार रेप किया गया। बता दें कि आरोपी ने शेयर बाजार में निवेश के नाम पर महिला से 2 लाख रुपये की ठगी भी की। शिकायतकर्ता ने पुलिस को जानकारी देते हुए बताया कि महिला अपने परिवार के साथ सोहना इलाके में एक किराए के मकान में रहती है। उसने बताया कि उसका एक पड़ोसी अक्सर उसके घर आता-जाता था और शेयर बाजार में पैसा लगाने पर उसे बढ़िया रिटर्न का लालच दिया करता था।

शिकायतकर्ता ने पुलिस को बताया, आरोपी ने आठ महीने तक मेरे साथ शारीरिक संबंध बनाए। अपने दोस्तों की मदद से वे मेरे पति पर नजर रखते थे ह्व शिकायतकर्ता ने बताया कि जब उसने पैसे मांगे तो आरोपी ने उसे अपने भाई के फ्लैट पर बुलाया, जहां दोनों ने उसके साथ दुष्कर्म किया। पीड़िता ने बताया कि जब उसने विरोध किया तो आरोपी ने उसे गंभीर परिणाम भुगतने की धमकी भी दी। पुलिस ने शिकायतकर्ता के हवाले से बताया कि आरोपी ने उसके पैसे लौटाने से इनकार कर दिया और धमकी दी कि अगर उसने दोबारा पैसे मांगे तो वह उसका अश्लील वीडियो शेयर कर देगा। महिला ने बताया कि आरोपी ने दुष्कर्म का वीडियो बनाया और उसे ब्लैकमेल किया। शनिवार को मामला दर्ज कर महिला को मेडिकल जांच के लिए ले जाया गया। सोहना सिटी थाने के एसएचओ प्रवीण कुमार ने बताया, जल्द ही उसके बयान दर्ज किए जाएंगे। आरोपी की तलाश के लिए टीम बनाई गई है। उसे जल्दज ही गिरफ्तार किया जाएगा। एक अन्य घटना में उद्योग विहार थाने की पुलिस ने शनिवार को नौकरी दिलाने के नाम पर ठगी करने के आरोप में एक व्यक्ति को गिरफ्तार किया। आरोपी की पहचान कैथल जिले के गढ़ी गांव निवासी करण सिंह के रूप में हुई है। शुक्रवार को उद्योग विहार थाने में एक व्यक्ति ने शिकायत दी थी कि रिलायबल ग्लोबल प्राइवेट लिमिटेड नाम से फर्जी कंपनी बनाकर नौकरी दिलाने के नाम पर उसके साथ ठगी की गई है। पुलिस ने मामला दर्ज कर जांच शुरू की और शनिवार को आरोपी को उद्योग विहार इलाके से गिरफ्तार कर लिया। आरोपी को पूछताछ के लिए कोर्ट में पेश किया गया और तीन दिन की रिमांड पर भेज दिया गया है।

फरीदाबाद में डकैती के चार आरोपी गिरफ्तार

फरीदाबाद। फरीदाबाद पुलिस की अपराध शाखा एवीटीएस ने गांव करनेरा में हुई डकैती के मामले में चार आरोपियों को गिरफ्तार किया है। पुलिस ने आरोपियों से पूछताछ के दौरान वैगनार गाड़ी, ऑटो, दो तोला सोने की चेन और 37 हजार रुपये बरामद किए हैं। पुलिस प्रवक्ता ने रविवार को बताया कि तीन जनवरी को गांव करनेरा में हुई डकैती के मामले में गिरफ्तार किए गए चारों आरोपियों में संदीप उर्फ सोनू, राहुल उर्फ शेरू, बबलू सोलंकी और आकाश शामिल हैं। इनमें से राहुल उर्फ शेरू को निशानदेही के बाद अदालत में पेश कर जेल भेज दिया गया था। बाकी तीन आरोपियों को चार दिन की पुलिस रिमांड पर लिया गया था। रिमांड के दौरान पुलिस ने इन आरोपियों से डकैती में इस्तेमाल की गई वैगनार गाड़ी और ऑटो के अलावा लूट का माल बरामद किया। पूछताछ के बाद तीनों आरोपियों को अदालत में पेश कर नीमका जेल भेज दिया गया है। पुलिस के मुताबिक इस मामले में शामिल अन्य आरोपियों की तलाश जारी है और उन्हें जल्द ही गिरफ्तार कर लिया जाएगा।

नोएडा के सुप्रीम सोसायटी में एलएलबी छात्र की 7वीं मंजिल से गिरकर मौत

प्रात : किरण संवाददाता

नोएडा। नोएडा के थाना सेक्टर-39 थाना क्षेत्र के सेक्टर- 93स्थित सुप्रीम टावर के 7वीं मंजिल से एक एलएलबी के छात्र की संदिग्ध परिस्थितियों में गिर कर मौत हो गयी। परिजनों ने युवक के दोस्तों पर हत्या करने का आरोप लगाया है। पुलिस ने शव को पोस्टमार्टम के लिए भेजवा दिया है। पुलिस मामले की जांच कर रही है। एसीपी नोएडा प्रवीण कुमार सिंह ने बताया कि थाना सेक्टर-39 क्षेत्र स्थित सुप्रीम टावर सोसाइटी में एक युवक के 7वें फ्लोर से गिरने की सूचना प्राप्त हुई थी। मौके पर पहुंची पुलिस को जानकारी करने पर पता चला कि मृतक गाजियाबाद का तापस नाम का युवक था। युवक अपने कुछ दोस्तों के साथ फ्लैट में मौजूद था। वहां से उसकी गिरकर मृत्यु हो गयी। मृतक युवक के परिजनों को सूचना दे दी गई है। फील्ड यूनिट ने घटनास्थल का निरीक्षण किया। घटना के सम्बन्ध में सभी पहलुओं पर गहनता से जांच की जा रही है। स्वजन से तहरीर प्राप्त होने पर कार्रवाई की जायेगी।

राष्ट्रीय युवा दिवस पर जय विहार कॉलोनी में स्कूली छात्रों ने दिखाया इक्वलिटी का संदेश

प्रात : किरण संवाददाता

पश्चिमी दिल्ली के बापरोला स्थित जय विहार कॉलोनी में राष्ट्रीय युवा दिवस के अवसर पर स्कूली छात्र-छात्राओं ने इक्वलिटी (समानता) थीम पर आधारित ड्राइंग प्रतियोगिता में बढ़-चढ़कर हिस्सा लिया। इसका आयोजन सामाजिक संस्था पंचकोसी फाउंडेशन द्वारा किया गया, जिसमें विभिन्न स्कूलों के लगभग 40 बच्चों ने भाग लिया।

इस मौके पर बच्चों ने स्वामी विवेकानंद के प्रेरणादायक विचारों और उनके जीवन चरित्र को याद किया। उन्होंने राष्ट्रभक्ति और समानता के महत्व पर चर्चा की और अपनी कलाकृतियों के माध्यम से समाज को सकारात्मक संदेश दिया।

कार्यक्रम के दौरान पंचकोसी फाउंडेशन के अध्यक्ष सुशील कुमार देव समेत राजेंद्र कुमार, जितेंद्र कुमार लाल, उमाशंकर, सुनील कुमार तिवारी, एसके वर्मा, अंकित पंडित और विनोद सिंह सहित कई गणमान्य व्यक्तियों ने बच्चों का उत्साहवर्धन किया। ड्राइंग प्रतियोगिता में पहले, दूसरे और तीसरे स्थान पर आने वाले प्रतिभागियों को पुरस्कृत किया जाएगा। इसके साथ ही 7 सांत्वना पुरस्कार भी दिए जाएंगे। यह पुरस्कार 19 जनवरी को आयोजित होने वाले गणतंत्र दिवस उत्सव के दौरान प्रदान किए जाएंगे।

यह आयोजन न केवल बच्चों के रचनात्मक कौशल को प्रदर्शित करने का एक मंच बना, बल्कि समानता और राष्ट्रीय एकता जैसे मूल्यों को बढ़ावा देने का अवसर भी बना।

रासायनिक कारखाने में भीषण आग, दमकल की 32 गाड़ियों की मदद से सात घंटे की मशक्कत के बाद पाया गया काबू

प्रात : किरण संवाददाता

नोएडा। थाना बादलपुर क्षेत्र स्थित एक रासायनिक कारखाने में रविवार तड़के भीषण आग लग गई जिस पर दमकल कर्मियों ने सात घंटे की मशक्कत के बाद काबू पाया। आग में कोई जनहानि होने की अभी तक कोई सूचना नहीं है। यह जानकारी अधिकारियों ने दी।

अधिकारियों ने बताया कि आग लगने की सूचना मिलने के बाद मौके पर दमकल विभाग की 32 गाड़ियां भेजी गईं और सात घंटे की कड़ी मशक्कत के बाद आग पर काबू पाया गया। उन्होंने बताया कि इसमें कोई जनहानि होने की अभी तक कोई सूचना नहीं है।

मुख्य दमकल अधिकारी प्रदीप कुमार चौबे ने बताया कि थाना बादलपुर क्षेत्र स्थित बांके बिहारी केमिकल फैक्टरी में आज तड़के सवा तीन बजे के करीब शॉर्ट सर्किट की वजह से आग लग गई। उन्होंने बताया कि सूचना के आधार पर नोएडा, गाजियाबाद, बुलंदशहर से करीब 32 अग्निशमन वाहनों को मौके पर बुलाया गया।

उन्होंने बताया कि करीब सात घंटे की कड़ी मशक्कत के बाद आग पर काबू पाया गया। उन्होंने बताया कि आग से करोड़ों रुपये का माल जल गया। चौबे ने बताया कि आग में कोई जनहानि की अभी तक कोई सूचना नहीं है। उन्होंने बताया कि जब कारखाने में आग लगी तब वहां कुछ लोग काम कर रहे थे, लेकिन वे सब सकुशल बाहर निकल आए। उन्होंने बताया कि अभी भी कारखाने से रह रहकर धुआं उठ रहा है और एहतियात के तौर पर कुछ दमकल वाहन मौके पर तैनात रखे गए हैं। उन्होंने बताया कि आग लगने के कारण और इससे हुए नुकसान का आकलन किया जा रहा है। कारखाने में आग लगने से आसपास के क्षेत्र में धुंआ फैल गया, जिसकी वजह से लोगों ने सांस लेने में दिक्कत होने की शिकायत की। कारखाने में आग की वजह से आसपास के अन्य कारखानों और स्थानीय लोगों में दहशत उत्पन्न हो गई। स्थानीय लोगों के अनुसार कारखाने में जब आग लगी थी, उस समय कारखाने के अंदर रखे ड्रम रह रहकर फट रहे थे, जिसकी आवाज से आसपास के लोग काफी देर तक दहशत में रहे।

नोएडा में पुलिस ने चलाया ऑपरेशन पहचान, किरायेदारों का सत्यापन न कराने पर मालिक होंगे परेशान

नोएडा। नोएडा में पुलिस ने बेहतर सुरक्षा व्यवस्था के मकसद से ऑपरेशन पहचान नामक अभियान का शुभारंभ किया है। अभियान को सुचारू रूप से संचालित करने के लिए कमिश्नर गौतमबुद्धनगर लक्ष्मी सिंह के आदेश एवं अपर पुलिस आयुक्त कानून व्यवस्था के निर्देशन में पुलिस उपायुक्त नोएडा व अपर पुलिस उपायुक्त नोएडा द्वारा 7 पुलिस टीमों का गठन कर लोगों का सत्यापन किया जा रहा है। डीसीपी एवं पुलिस उपमहानिरीक्षक नोएडा राम बदन सिंह ने बताया कि कमिश्नर गौतमबुद्धनगर लक्ष्मी सिंह के आदेश एवं अपर पुलिस आयुक्त कानून व्यवस्था के निर्देशन में पुलिस उपायुक्त नोएडा व अपर पुलिस उपायुक्त नोएडा के द्वारा 26 जनवरी, दिल्ली में होने वाले चुनाव एवं कुंभ मेले को ध्यान में रखते हुए ऑपरेशन पहचान अभियान चलाया जा रहा है। उन्होंने बताया कि इस अभियान के तहत 7 पुलिस टीमों का गठन कर झुग्गी-झोपडियों, कॉलोनियों, होटल व ढाबा आदि में रहने वाले सभी किरायदारों व काम करने वाले व्यक्तियों के सत्यापन कराए जा रहे है। डीसीपी ने बताया कि नोएडा शहर के सभी मकान मालिकों व अन्य लोगों से अपील की गयी है कि कोई भी किरायेदारों को बिना उनके डाक्यूमेंट के सत्यापन कराये बगैर मकान में न रखे। यदि बिना सत्यापन के किसी किरायेदार को रखा जाता है तो संबंधित मकान मालिक के विरूद्ध नियमानुसार कार्यवाही की जायेगी। उन्होंने बताया कि ऑपरेशन पहचान अभियान आगे भी निरंतर कार्यवाही जारी रहेगी।

मुख्यमंत्री विवाह शगुन योजना आर्थिक रूप से कमजोर सभी वर्गों के लिए एक सशक्त प्रयास : डीसी

प्रात : किरण संवाददाता

फरीदाबाद। हरियाणा सरकार द्वारा समाज के सभी वर्गों की बेटियों और दिव्यांगजन की शादी में आर्थिक सहयोग प्रदान करने के उद्देश्य से मुख्यमंत्री विवाह शगुन योजना संचालित की जा रही है। यह योजना आर्थिक रूप से कमजोर वर्गों को सशक्त बनाने और बेटियों के विवाह के लिए प्रोत्साहन देने का एक सराहनीय प्रयास है। यह जानकारी डीसी विक्रम सिंह ने दी। डीसी ने बताया कि मुख्यमंत्री विवाह शगुन योजना समाज में समानता और सशक्तिकरण का प्रतीक है। इस योजना का उद्देश्य आर्थिक रूप से कमजोर परिवारों को सहायता प्रदान करना और बेटियों की शादी में आर्थिक चिंताओं को कम करना है। उन्होंने सभी पात्र परिवारों से अपील की कि वे इस योजना का लाभ उठाएं और अपनी बेटियों के भविष्य को सुरक्षित और खुशहाल बनाएं।

डीसी ने कहा कि इस योजना के तहत लाभार्थियों को सहायता राशि प्रदान की जाती है, जिसमें अनुसूचित जाति, विमुक्त जाति/टपरीवास जाति के लाभार्थियों (जिनकी वार्षिक आय 1.80 लाख रुपये तक हो) की बेटियों के विवाह पर 71,000 रुपए

अनुदान राशि प्रदान की जाती है और पिछड़े वर्ग और सामान्य वर्ग के व्यक्तियों (जिनकी वार्षिक आय 1.80 लाख रुपये तक हो) की बेटियों के विवाह पर 41,000 रुपए अनुदान राशि दी जाती है। उन्होंने कहा सभी वर्गों की विधवा, अनाथ, तलाकशुदा, बेसहारा महिलाओं और उनके बच्चों की बेटियों की शादी के लिए 51,000 रुपए अनुदान राशि प्रदान की जाती है। उन्होंने यह भी कहा कि खिलाड़ी महिलाओं (जिनकी वार्षिक आय 1.80 लाख रुपये तक हो) की शादी के लिए भी 41,000 रुपए की सहायता राशि दी जाती है। इसके साथ-साथ इस योजना के तहत यदि विवाह में दोनों वर-वधू दिव्यांग हैं, तो उन्हें 51,000 रुपए अनुदान राशि दी जाएगी।

अगर केवल एक वर या वधू दिव्यांग है, तो 41,000 रुपए की अनुदान राशि दी जाएगी। उन्होंने जानकारी देते हुए बताया कि इस योजना का लाभ प्राप्त करने के लिए आवेदक को अपनी बेटी के विवाह के बाद 6 माह के भीतर विवाह पंजीकरण करवाना अनिवार्य है। योजना के लिए आवेदन प्रक्रिया को सरल और सुगम बनाया गया है। आवेदक ॐ.प्रिं.ङ्क५.ल्ल पोर्टल पर जाकर विवाह पंजीकरण और मुख्यमंत्री विवाह शगुन योजना के लिए आवेदन कर सकते है। उन्होंने कहा कि सरकार की योजनाओं का लाभ हर पात्र व्यक्ति तक पहुँचाना जिला प्रशासन की प्राथमिकता है।

कुम्भ पर्वों की परम्परा और प्राचीनता

हरिद्वार, नासिक, प्रयाग और उज्जैन में प्रति बारहवें वर्ष आयोजित होने वाले कुम्भ पर्वों की परंपरा और प्राचीनता का अनुमान इसी तथ्य से स्पष्ट हो जाता है कि ऋग्वेद, यजुर्वेद एवं सामवेद के कई मंत्रों में कुम्भ पर्व का उल्लेख है। अथर्ववेद में तो यहां तक कहा गया है कि कुम्भ पर्व में पवित्र नदियों में स्नान करने से एक हजार अश्वमेघ यज्ञों तथा एक लाख बार पृथ्वी प्रदक्षिणा का पुण्य मिलता है। हमारी पुराणें कुम्भ पर्वों की महिमा से भरी पड़ी है। इतिहासकारों एवं विदेशी पर्यटकों ने भी कुम्भ मेलों का विवरण दिया है। कुम्भ का सर्वाधिक स्पष्ट एवं विस्तृत उल्लेख चीनी यात्री व्हेनसांग के यात्रा वर्णन में मिलता है। उसने सन् 644 में प्रयाग में हुए एक कुम्भ का वर्णन करते हुए लिखा है कि तत्कालीन सम्राट हर्षवर्धन ने प्रयाग के कुम्भ मेले में अपनी सारी सम्पत्ति का दान कर दिया था। नौवीं शताब्दी में आदि शंकराचार्य ने कुम्भ पर्वों को व्यवस्थित स्वरूप प्रदान किया। उन्होंने हिन्दू धर्म की एकता और व्यापकता के लिए देश की चारों दिशाओं में चार मठ स्थापित किए। इन मठों की स्थापना का एक उद्देश्य यह भी था कि इनके प्रधान (शंकराचार्य) भारत के साधु समाज को समुचित दिशा-निर्देश दे सकें। उपासना-पद्धति के आधार पर आदि शंकराचार्य ने साधुओं को दस वर्गों में विभाजित किया। यह विभाजन ह्यदशनामीह्ल के नाम से जाना जाता है। आदि शंकराचार्य ने साधुओं को जिन दस नामों में विभाजित किया है, वे हैं- सरस्वती, पुरी, बाना, तीर्थ, गिरि, पर्वत, भारती, अरण्य, आश्रम एवं सागर। उन्होंने भारत की धार्मिक एकता एवं अध्यात्म के प्रचार के लिए यह व्यवस्था दी कि इन सभी साधुओं तथा चारों मठों के शंकाराचार्यों को प्रत्येक कुम्भ पर्व में अनिवार्य रूप से सम्मिलित होना चाहिए तथा देश के विभिन्न भागों से आये अन्य साधु-संतों तथा श्रद्धालुजनों से सम्पर्क करना चाहिए। यहां तक कि हिमालय की कंदराओं में एकांतवास करके साधना करने वाले तपस्वियों तक के लिए कुम्भ स्नान करना आवश्यक कर दिया गया। उसके बाद से ही यह परंपरा विकसित हुई कि कोई भी साधु देश के किसी भी कोने में निवास करता हो, वह कुम्भ स्नान के लिए अवश्य जाता है। इस तरह ये कुंभ एवं भारत की एकता के प्रतीक पर्व बन गये हैं। समुद्र मंथन से जुड़ा कुंभ पर्व की महत्ता का वर्णन अनेक पुराणों में किया गया है। इस पर्व की परंपरा से संबंधित भी अनेक कथाएं पुराणों में हैं। इनमें से सर्वमान्य कथा यह है कि ब्रह्माजी की आज्ञा से देवताओं और दानवों ने समुद्र मंथन किया। मंथन के उपरांत जो रत्न मिले, उनमें अमृत भी था। देवता और दानव दोनों ही उसे प्राप्त करना चाहते थे, इसलिए उनमें युद्ध छिड़ गया। सूर्य, चन्द्रमा और बृहस्पति को अमृत के कुंभ की रक्षा का दायित्व सौंपा गया था। यह कुंभ उन्होंने जिन स्थानों पर रखा, वहां अमृत की कुछ बूंदें छलक गईं। ये स्थान थे- हरिद्वार, प्रयाग, उज्जैन और नासिक। चूंकि इन स्थानों पर अमृत कुंभ रखा गया था तथा वहां अमृत छलका था, इसलिए इन स्थानों पर कुंभ पर्व आयोजित किये जाने लगे। इंद्र के पुत्र जयंत से छलका अमृत एक अन्य कथा के अनुसार इन्द्र का पुत्र जयंत यह अमृत कुंभ लेकर उड़ा तो चार स्थानों पर अमृत छलक गया था। जिन स्थानों पर यह अमृत छलका, वहां कुंभ पर्व मनाया जाता है। इन कथाओं के अनुसार अमृतकुंभ को लेकर देवताओं और दानवों में 12 दिन तक युद्ध हुआ था। देवी-देवताओं का एक दिन पृथ्वीलोक के एक वर्ष के बराबर होता है, इसलिए हर बारहवें वर्ष कुंभ स्नान की परंपरा प्रारंभ हुई। अर्थात प्रत्येक स्थान पर बारहवें वर्ष कुंभ होता है। वैसे हर तीसरे वर्ष देश में कहीं न कहीं कुंभ आयोजित होता है। ग्रहों की गति पर निर्भर कुंभ पर्व तथा उसके स्नानों का आयोजन ग्रहों की गति पर निर्भर करता है। जैसे जब गुरू ग्रह कुंभ राशि में तथा सूर्य मेष राशि में होता है तो हरिद्वार में कुंभ होता है। इसके तीन वर्ष पश्चात अर्थात जब गुरु वृषभ राशि में तथा सूर्य मकर राशि में होता है तो प्रयाग (इलाहाबाद) में कुंभ होता है। जब बृहस्पति (गुरू) सिंह राशि में आते हैं तो नासिक और उज्जैन में कुंभ आयोजित होते हैं। किन्तु नासिक का कुंभ तब होता है, जब सूर्य सिंह राशि में ही होता है, जबकि उज्जैन का कुंभ (सिंहस्थ) तब होता है, जब सूर्य मेष राशि में आते है। यहां यह उल्लेखनीय है कि बृहस्पति (गुरू) ग्रह एक राशि में एक वर्ष तथा सूर्य की एक राशि में एक महीने रहते है। गुरू को बारह राशियों में भ्रमण करने में सामान्यतः बारह वर्ष लगते हैं। बारह वर्ष बाद वह अपनी पूर्व राशि में आता है, और इसी से कुंभ पर्व उक्त चार स्थानों पर प्रति बारहवें वर्ष आयोजित होते हैं। अर्द्ध कुम्भ भी होते हैं दो स्थानों पर अर्द्ध कुम्भ भी आयोजित होते हैं। ये स्थान हैं हरिद्वार और प्रयाग। अर्द्ध कुम्भ, कुम्भ पर्व के छः वर्ष बाद आयोजित होते हैं।

आज भी प्रासंगिक है स्वामी विवेकानंद का चिंतन

स्वामी विवेकानन्द संभवतः भारत के एकमात्र ऐसे संत हैं, जो अध्यात्म, दर्शन और देशभक्ति जैसे गंभीर गुणों के साथ-साथ युवा शक्ति के भी प्रतीक हैं। उनकी छवि भले ही एक धर्मपुरूष और कर्मयोगी की है किन्तु उनका वास्तविक उद्देश्य अपने देश के युवाओं को रचनात्मक कर्म का मार्ग दिखाकर विश्व में भारत के नाम का डंका बजाना था। उन्हें केवल चार दशक का जीवन मिला और इसी अल्प अवधि में उन्होंने न केवल अपने समय की युवा पीढ़ी में अपनी वाणी, कर्म एवं विचारों से नई ऊर्जा का संचार किया बल्कि बाद की पीढ़ियों के लिए भी वे आदर्श बने हुए हैं। वे युवाओं के प्रिय इसलिए हैं कि बचपन से लेकर जीवन के अंतिम क्षण तक उनमें प्रश्न और जिज्ञासा का भाव जीवित रहा। स्वामी विवेकानन्द ने धर्म, अध्यात्म, समाज, दर्शन, चिंतन, सभी स्तरों पर वही मार्ग अपनाया जिसे उन्होंने अपनी तर्क बुद्धि और विवेक की कसौटी पर परखने के बाद सही समझा। यही कारण है कि युवाओं के लिए उनका चिंतन आज भी उतना ही प्रासंगिक है जितना उनके जीवनकाल में था। देखने में यह बात विचित्र लग सकती है कि आज से सवा सौ वर्ष से अधिक समय पहले उन्होंने भारतीय समाज की उन समस्याओं और प्रश्नों को पहचान लिया था, जो आज भी हमारे युवा वर्ग के लिए चुनौती बनी हुई हैं। उनके जीवन के लगभग सभी पहलू आज भी प्रासंगिक और सार्थक प्रतीत होते हैं। बहुत-सी बातों में तो वे अपने समय से बहुत आगे थे और एक युगद्दष्टा की तरह उन्होंने आने वाली चुनौतियों की ओर स्पष्ट संकेत कर दिया था। उन्होंने जो सोचा, कहा और किया उससे कई पीढ़ियां दिशा प्राप्त करती रही हैं। आज की पीढ़ी की समस्याओं व चुनौतियों पर नजर डालते हैं तो विवेकानन्द का जीवन और दर्शन और भी अधिक उपयोगी प्रतीत होता है। आज मानवता भौतिकवाद की अंधी दौड़ और स्वार्थपरता के चौराहे पर खड़ी है और शांति व उदात्तु जीवन जीने के लिए किसी मार्गदर्शक की तलाश में है। विश्व समाज एक तरह से विचारहीनता तथा आदर्शशून्यता के भंवरों में डूब रहा है। आतंकवाद समूची दुनिया में नया दैत्य बनकर लोगों के सुख-चैन को लील रहा है। हमारा देश भी इस अभिशाप का शिकार है और अनेक नवयुवक इस विनाशकारी रास्ते पर चल रहे हैं। ऐसी परिस्थितियों में विवेकानन्द के विचारों की आवश्यकता और अधिक महसूस होने लगी है। आज की पीढ़ी के लिए समाज सुधारक और देशभक्त संत स्वामी विवेकानन्द के जीवन के कौन से पक्ष अधिक सार्थक व प्रासंगिक हैं, इसका विवेचन करना समीचीन होगा। वास्तव में, स्वामी जी पहले देशभक्त थे और बाद में संन्यासी या धर्म गुरू। धर्म का सही रूप भारत के लोगों के सामने रखने और विदेशों में भारत की नकारात्मक छवि को उज्ज्वल करने की उत्कंठा ने ही उनसे वो सब कराया जिसे याद करके हम उन्हें देश के शीर्षस्थ महापुरूषों की पंक्ति में बिठाते हैं। किन्तु उनकी देशभक्ति और अपने धर्म के प्रति श्रद्धा एवं आस्था ने उनके तर्कशील और उदार दृष्टिकोण पर कभी ग्रहण नहीं लगाया। वे प्रवृत्ति और चिंतन से सहिष्णु, दूसरों के विचारों का सम्मान करने वाले और सभी संस्कृतियों व धर्मों में समानता के दर्शन करने वाले व्यक्ति थे। उन्होंने ब्रिटेन और अमरीका में जाकर भारत में धर्म प्रचार में लगी ईसाई मिशनरियों की कार्य प्रणाली की तीखी निन्दा की और इसके लिए वहां के अनेक लोगों के विरोध को झेला, किन्तु उनके मन में ईसाइयों या ईसा मसीह के प्रति कभी घृणा का भाव नहीं उपजा। इसके विपरीत उन्होंने कश्मीर की यात्रा के दौरान अमरीका का राष्ट्रीय दिवस अपने अमरीकी शिष्य-शिष्याओं के साथ मनाया। इसी तरह अमरीका में उन्होंने एक बार अपना पाठ्यक्रम ईसा मसीह के जीवन पर भावपूर्ण प्रवचन से प्रारंभ किया। अमरीका में अनेक गिरजाघरों और ईसाई प्रतिष्ठानों में उनके व्याख्यान व प्रवचन हुए। वे गौतम बुद्ध को अपना आदर्श मानते थे और अपने गुरू भाइयों को समझाते कि जिस प्रकार महात्मा बुद्ध ने अपने शिष्यों को संसार भर में भेज कर धर्म प्रचार किया था उसी तरह हमें भी आत्मशुद्धि और आत्मानुभूति में मोक्ष की कामना न करते हुए देश के उपेक्षित, अशिक्षित और सुप्त समाज को जगाने के लिए आश्रम की चारदीवारी से बाहर निकलना चाहिए।

घटती बेटियां: कोख में ही छीन रहें साँसें, फिर संकट में हरियाणा की सुकन्या समृद्धि

2014 और 2019 के बीच हुई बढ़त प्री-कॉन्सेप्शन एंड प्री-नेटल डायग्नोस्टिक टेक्निक्स एक्ट, 1994 (पीएनडीटी एक्ट) के सख्त प्रवर्तन के साथ-साथ गहन जागरूकता अभियान के कारण हुई। इसका उद्देश्य हरियाणा में बड़े पैमाने पर जन्मपूर्व लिंग चयन और कन्या भ्रूण हत्या पर अंकुश लगाना था, साथ ही साथ सामाजिक दृष्टिकोण को बदलना था, जिसमें परिवार लड़कों को पसंद करते थे और लड़की को बोझ के रूप में देखते थे। हरियाणा में बच्ची के जन्म पर 21, 000 रुपये की एकमुश्त राशि प्रदान करने और सुकन्या समृद्धि योजना के माध्यम से लड़कियों के लिए बैंक खाते खोलने के बावजूद, बालिकाओं को बोझ के रूप में क्यों देखा जाता है।

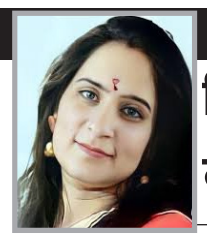

प्रियंका सौरभ
लेखिका

कन्या भ्रूण हत्या के लिए बदनाम हरियाणा का लिंगानुपात (एसआरबी यानी जन्म के समय लिंगानुपात) राज्य सरकार द्वारा हाल ही में जारी आंकड़ों के अनुसार आठ साल के सबसे निचले स्तर पर पहुँच गया है। 2024 के पहले 10 महीनों यानी अक्टूबर तक लिंगानुपात 905 दर्ज किया गया। यह पिछले साल से 11 अंक कम है। वर्ष 2016 में इससे कम लिंगानुपात दर्ज किया गया था। वर्ष 2019 में 923 के उच्चतम स्तर पर पहुँचने के बाद वर्ष 2024 में हरियाणा में जन्म के समय लिंगानुपात घटकर 910 रह गया, जो आठ वर्षों में सबसे कम है। इन आंकड़ों ने हरियाणा के कार्यकर्ताओं और नागरिक समाज के सदस्यों को चिंतित कर दिया है, हालांकि अधिकारियों ने नवीनतम आंकड़ों को ह्लमामूली उतार-चढ़ावह्ल करार दिया है। वर्ष 2021 में प्रकाशित राष्ट्रीय स्वास्थ्य एवं परिवार सर्वेक्षण-5 (एनएफएचएस-5) के अनुसार भारत में जन्म के समय कुल लिंगानुपात 929 था।

विश्व स्वास्थ्य संगठन द्वारा अनुशंसित आदर्श लिंगानुपात 950 से हरियाणा बहुत दूर है। राज्य आज तक इस आंकड़े को हासिल नहीं कर पाया है। लिंगानुपात में गिरावट का मतलब है कि राज्य में लड़कियों को गर्भ में ही मार दिया जा रहा है। आर्थिक प्रगति के बावजूद हरियाणा में बड़ी संख्या में लोग अभी भी बेटों को प्राथमिकता देते हैं। जब तक यह सोच नहीं बदलेगी, लिंगानुपात को लेकर स्थिति में सुधार नहीं होगा। राज्य के लोगों में लड़कों को प्राथमिकता दिए जाने के कारण हरियाणा के पड़ोसी राज्यों में अल्ट्रासाउंड संचालकों और गर्भपात केंद्रों का धंधा खूब फल-फूल रहा है। इन राज्यों में ज्यादा सख्ती नहीं है। हरियाणा से लोग दलालों के जरिए यहाँ पहुँचते हैं और जांच व गर्भपात करवाते हैं। अल्ट्रासाउंड संचालक पैसे के लिए गर्भ में पल रहे भ्रूण की गलत जानकारी भी देते हैं। ऐसे कई मामले सामने आए हैं, जब लड़कों को लड़की बताकर गर्भपात करवा दिया गया।

अल्ट्रासाउंड करने वाले और गर्भपात करने वाले एक-दूसरे से जुड़े हुए हैं। पिछले एक दशक में इस पैमाने पर उल्लेखनीय सुधार करने वाले राज्य के लिए यह एक झटका है। 2014 में हरियाणा में लिंगानुपात सिर्फ. 871 था। इस पर देशभर में भारी आक्रोश फैल गया और नागरिक समाज संगठनों, राज्य सरकार और केंद्र ने स्थिति को सुधारने के लिए ठोस प्रयास किए। हरियाणा में गिरते लिंगानुपात को देखते हुए प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने 2015 में बेटी बचाओ, बेटी पढ़ाओ अभियान शुरू किया था। अभियान के बाद राज्य का लिंगानुपात सुधर कर 2019 में 923 पर पहुँच गया। लेकिन 2020 में इसमें फिर से गिरावट शुरू हो गई, जो अब तक जारी है। हालांकि, तब से लिंगानुपात में एक बार फिर से गिरावट देखी गई है, यह झटका ऐसे समय में आया है जब राज्य की महिलाएँ अंतरराष्ट्रीय मंचों सहित खेलों में और साथ ही शिक्षाविदों में भी उत्कृष्ट प्रदर्शन कर रही हैं। 2014 और 2019 के बीच हुई बढ़त प्री-कॉन्सेप्शन एंड प्री-नेटल डायग्नोस्टिक टेक्निक्स एक्ट, 1994 (पीएनडीटी एक्ट) के सख्त प्रवर्तन के साथ-साथ गहन जागरूकता अभियान के कारण हुई। इसका उद्देश्य हरियाणा में बड़े पैमाने पर जन्मपूर्व लिंग चयन और कन्या भ्रूण हत्या पर अंकुश लगाना था, साथ ही साथ सामाजिक दृष्टिकोण को बदलना था, जिसमें परिवार लड़कों को पसंद करते थे

और लड़की को बोझ के रूप में देखते थे। हरियाणा में बच्ची के जन्म पर 21, 000 रुपये की एकमुश्त राशि प्रदान करने और सुकन्या समृद्धि योजना के माध्यम से लड़कियों के लिए बैंक खाते खोलने के बावजूद, बालिकाओं को बोझ के रूप में क्यों देखा जाता है। कार्यकर्ताओं का कहना है कि नजरिया बदलने के लिए और अधिक काम करने की जरूरत है और हाल के वर्षों में कन्या भ्रूण हत्या को रोकने के उद्देश्य से बनाए गए कानूनों का क्रियान्वयन ढीला पड़ गया है। लड़कों की पसंद के कारण राज्य में लड़कियों की चाहत कम हो गई है क्योंकि उनके परिवारों को डर है कि वे भागकर शादी करने के कारण भविष्य में बदनामी का कारण बन सकती हैं। उनके अनुसार, लड़कियाँ पैसा और संपत्ति कमाकर अपने परिवार की मदद नहीं कर सकती हैं। इसके विपरीत, परिवारों को उनकी शादी में दहेज देना होगा। ऐसी सोच के कारण हरियाणा में लड़कों को शादी के लिए लड़कियाँ नहीं मिल रही हैं। हरियाणा के अधिकांश गांवों में आमतौर पर ऐसी समस्या है। कई परिवारों में अगर लड़कियों का पालन-पोषण ठीक से नहीं किया जाता है तो वे कुपोषण का शिकार हो जाती हैं और कुछ समय बाद उनकी मौत भी हो जाती है। हरियाणा की आर्थिक तरक्की के बावजूद यहां की बड़ी आबादी की मानसिकता अब भी नहीं बदली है। जब तक लड़कों और लड़कियों में भेदभाव की यह मानसिकता नहीं बदलेगी, हालात बेहतर नहीं होंगे।

महात्मा बुद्ध के विचारों को आचार में लाना भी जरूरी

ऐसे भिक्षु साफतौर से यह कहते हैं कि ह्लउन्हें यह सब बहुत खराब लगता है। इस तरह के शब्दों का प्रयोग किसी बौद्ध भिक्षु को नहीं करना चाहिए। ह्ल इसी तरह पिछले दिनों श्रीलंका में कट्टरपंथी बौद्ध भिक्षु गालागोडाटे ज्ञान सारा को इस्लाम धर्म का अपमान करने और धार्मिक नफरत फैलाने के आरोप में नौ महीने की जेल की सजा सुनाई गई है। 2018 में भी ज्ञान सारा को एक आपराधिक मामले में छह साल की सजा सुनाई गई थी। दरअसल महात्मा बुद्ध के विचारों की बात करना ही पर्याप्त नहीं बल्कि इन्हें अपने ह्यआचारह्ल व व्यवहार में लाना भी उतना ही जरूरी है। और यह भी बुद्ध ने ही कहा है कि बुराई करने वालों को हमेशा अपने पास रखो क्योंकि वही तुम्हारी गलतियां तुम्हें बता सकते हैं ।

तनवीर जाफरी
लेखक

हमारा देश भारत को देवी-देवताओं, संतों- ऋषियों व फकीरों की धरती कहा जाता है। हमारे देश में अलग अलग युग व काल में अनेकानेक देवी देवताओं, महापुरुषों, समाज सुधारक, युग प्रवर्तक व धर्म प्रवर्तकों ने जन्म लिया है। इन महापुरुषों द्वारा सत्य और धर्म के मार्ग पर चलते हुये विश्व को मानवता का सन्देश दिया गया है। ऐसे ही एक महान तपस्वी त्यागी तथा सत्य और अहिंसा का पाठ पढ़ाते हुये पूरी मानवता को जीने की एक नई दिशा दिखाने वाले बौद्ध धर्म के प्रवर्तक भगवान गौतम बुद्ध का नाम भी सर्व प्रमुख है। बौद्ध धर्म कंबोडिया, म्यांमार, भूटान और श्रीलंका में राजकीय धर्म के रूप में अपना स्थान रखता है जबकि थाईलैंड और लाओस में बौद्ध धर्म को विशेष दर्जा हासिल है। चीन, हांगकांग, मकाऊ, जापान, सिंगापुर, ताइवान, वियतनाम, रूस व कलमीकिया में बौद्ध धर्म बहुसंख्य समाज द्वारा अपनाया जाता है जबकि उत्तर कोरिया, दक्षिण कोरिया, नेपाल और भारत में भी बौद्ध समुदाय की बड़ी आबादी रहती है। ईसा पूर्व 563 में नेपाल के लुम्बिनी में जन्मे महात्मा बुद्ध का पूरे विश्व में अपना प्रभाव छोड़ना और उनके अनुयाइयों का विश्वव्यापी विस्तार इस निष्कर्ष पर पहुँचने के लिये काफी है कि वे जनमानस पर अपनी असाधारण छाप छोड़ने वाले एक ऐसे महापुरुष थे जिन्होंने पूरी इंसानियत को सत्य और अहिंसा का पाठ पढ़ाया। हमारे प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी भी अपने महत्वपूर्ण भाषणों में यहाँ तक कि संयुक्त राष्ट्र संघ में अपने सम्बोधन में भी महात्मा बुध की शिक्षाओं का जिक्र करते रहे हैं। नवंबर 2019 में संयुक्त राष्ट्र महासभा में प्रधानमंत्री मोदी ने कहा था कि ह्यहम उस देश के वासी हैं जिसने दुनिया को युद्ध नहीं बुद्ध दिये हैं। वे अनेक बार बुद्ध की सत्य और अहिंसा की नीतियों का उल्लेख महत्वपूर्ण मंचों से करते रहे हैं। लगभग 3 माह पूर्व प्रधानमंत्री ने दिल्ली के विज्ञान भवन में आयोजित अंतर्राष्ट्रीय अभिधम्म दिवस को संबोधित करते हुए भी यही कहा था कि ह्यदुनिया युद्ध में नहीं बल्कि बुद्ध में समाधान ढूंढ सकती है। दुनिया को शांति के रास्ते पर चलने के लिए बुद्ध की शिक्षाओं से सीखना चाहिए। ऐसे समय में जब दुनिया अस्थिरता से ग्रस्त है, बुद्ध न केवल प्रासंगिक हैं बल्कि एक जरूरत भी हैं। ह्य इसी तरह पिछले दिनों एक बार फिर प्रधानमंत्री ने ओडिशा की राजधानी भुवनेश्वर में आयोजित 18वें प्रवासी भारतीय दिवस-2025 का उद्घाटन करते हुए बुद्ध की शिक्षाओं को याद किया और कहा कि यह देश अंतरराष्ट्रीय समुदाय को यह बता पाने में सक्षम है कि भविष्य युद्ध में नहीं, बल्कि बुद्ध में निहित है। सवाल यह है कि प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी द्वारा दुनिया को युद्ध के बजाये ह्यबुद्धह्ल के शांति अहिंसा के विचारों पर चलने व उसे आत्मसात करने का बार बार जो ह्यउपदेश ह्य दिया जाता है स्वयं उनकी पार्टी के नेता उनके विभिन्न संगठनों से जुड़े लोग क्या ह्यबुद्धह्ल की बताई गयी सत्य और अहिंसा की नीतियों का अनुसरण करते भी हैं या नहीं? क्या हमारे देश में समय समय पर धर्म, समुदाय व जातियों के नाम पर होने वाली हिंसा और इसे भड़काने वाले नेताओं को बुद्ध की सत्य और अहिंसा की शिक्षा से प्रेरित कहा जा सकता है? यह बुद्ध का ही तो कथन है कि भले ही चाहे कितनी अच्छी बातों को पढ़ लें या उन्हें सुन लें उसका तब तक फायदा नहीं है जबतक हम खुद उस पर अमल नहीं करते । और यह भी बुद्ध ने ही कहा है कि बुराई करने वालों को हमेशा अपने पास रखो क्योंकि वही तुम्हारी गलतियां तुम्हें बता सकते हैं । बुद्ध की इन शिक्षाओं के सन्दर्भ में बुराई करने वालों को तो छोड़िये सरकार की नीतियों की आलोचना करने वाले विपक्ष व मीडिया से सत्ता कैसे पेश आ रही है?क्या यही बुद्ध की नीतियों का अनुसरण है? मनमोहन सिंह जैसे काबिल व्यक्ति की खामोशी पर उन्हें ह्यमौन मोहन ह्य जैसे नाम दे दिये गये और अपनी लफ़्फाजियों को ह्यज्ञान वर्षा ह्य का मरतबा दिया जाता है। जबकि बुद्ध का कथन है कि -ह्लजो लोग ज्यादा बोलते हैं वे सीखने की कोशिश नहीं करते जबकि समझदार व्यक्ति हमेशा निडर और धैर्यशाली होता है जो समय आने पर ही बोलता है। यह भी बुद्ध का कथन है कि दूसरों की आलोचना करने से पहले, खुद की आलोचना करो। परन्तु यहाँ तो गाँधी-नेहरू परिवार व खास समुदाय को कोसने से ही फुर्सत नहीं मिलती। साथ ही स्व महिमामंडन इतना कि स्वयं को अवतारी पुरुष बताने से भी नहीं चूकते? ऐसे राजनेताओं को बुद्ध का यह कथन जरूर याद रखना चाहये कि -ह्लजो ईर्ष्या और जलन की आग में तपते रहते है उन्हें कभी भी शांति और सच्चा सुख प्राप्त नहीं हो सकता है। और यह भी कि-ह्लआप तभी खुश रह सकते है जब बीत गयी बातों को भुला देते है। परन्तु यहाँ तो गड़े मुर्दे उखाड़ कर ही अपनी राजनीति के परचम लहराये जा रहे हैं?इसी तरह म्यांमार के कट्टरपंथी बौद्ध भिक्षु अशीन विराथु को उनके कट्टरपंथी भाषणों व उनके हिंसक तेवरों की वजह से जाना जाता है। स्वयं को महात्मा बुद्ध का अनुयायी ही नहीं बल्कि बौद्ध भिक्षु बताने वाला यह शख़्स केवल आग ही उगलता रहता है। भारत की बहुसंख्यवादी राजनीति की तर्ज पर यह भी अपने भाषणों के द्वारा बौद्ध समुदाय की भावना को यह कहकर भड़काने का काम करता है कि मुस्लिम अल्पसंख्यक एक दिन देश भर में फैल जाएंगे। इसी कथित बौद्ध भिक्षु को लेकर टाइम मैगजीन ने अपने 1 जुलाई, 2013 के अंक में मुख्य पृष्ठ पर उसकी फोटो दि फेस ऑफ बुद्धिस्ट टेरर या बौद्ध आतंक का चेहरा जैसे शीर्षक के साथ प्रकाशित की थी? स्वयं को बौद्ध भिक्षु बताने वाले इसी आतंकी अशीन विराथु ने म्यांमार में संयुक्त राष्ट्र की विशेष प्रतिनिधि यांगी ली को ह्यकुतियाह्ल और ह्यवेश्याह्ल कहकर सम्बोधित किया था। इस व्यक्ति पर अपने भाषणों के माध्यम से म्यांमार में लोगों को सताने की साजिश रचने व उनकी सामूहिक हत्या कराने का आरोप लगाया गया है। इस के उपदेशों में वैमनस्यता की बात होती है और इसका निशाना मुस्लिम खासकर रोहंग्या समुदाय ही होता है। हालांकि बर्मा के अनेक बौद्ध भिक्षु ऐसे भी हैं जो उसके वैमनस्य पूर्ण बयानों से नाखुश हैं।

भारत के उत्थान की प्रेरणा है अयोध्या का श्री राम मंदिर

हितानंद शर्मा

अद्भुत, अकल्पनीय और अविस्मरणीय वह अभिजीत मुहूर्त, जब प्राण-प्रतिष्ठा कर रामलला के नेत्रों से पट्टिका हटाई गई तो पूरे विश्व के सनातन संस्कृति के उपासकों के नेत्रों में श्रद्धा, आस्था, आनंद और प्रतीक्षा के आँसू थे। पौष शुक्ल द्वादशी, 22 जनवरी 2024 केवल अयोध्या में भव्य श्रीराम मंदिर की प्राण-प्रतिष्ठा के उत्सव का दिवस नहीं, बल्कि संपूर्ण हिंदू समाज की दृष्टि और विचारों के परिवर्तन की उपलब्धि का दिन है। पीढ़ियों की तपस्या, त्याग, बलिदान और प्रतीक्षा के बाद अयोध्या ने इस शुभ घड़ी का स्वागत किया था। भगवान श्रीराम की प्राण-प्रतिष्ठा से आनंदित, उत्सा हित यह वही अयोध्या है जिसके परिचय में अथर्व वेद में उल्लेख आता है कि- अष्ट चक्रा नव द्वारा देवाना पूः अयोध्या तस्या हिरण्यमयः कोश स्वर्गो ज्योतिषावृतः।। अयोध्या, जिसका अर्थ ही है जो अजेय है, अपराजित है। सहस्त्रों वर्षों तक अयोध्या अपने स्वर्णिम इतिहास के लिए जानी जाती रही। वही अयोध्याा जहाँ हिन्दू समाज के आराध्य श्रीराम जी का जन्म सकल लोक के मंगल हेतु हुआ। इसीलिए गोस्वामी तुलसीदास जी अयोध्यास का वर्णन कुछ इस प्रकार करते हैं- विप्र धेनु सुर संत हित लीन्ह मनुज अवतार। निज इच्छा निर्मित प्रभु माया गुन गो पार।। हिन्दू समाज की आस्था के केंद्र, समरसता, नैतिकता व कर्तव्यपालन का बोध कराने वाले श्रीराममंदिर का कालांतर में विध्वंस कर मुगल आक्रांताओं द्वारा गुलामी के प्रतीक के रूप में बाबरी मस्जिद बना दी गई। इसके बाद 1528 से ही आरंभ हुए श्रीराममंदिर आंदोलन का 9 नवम्बर 2019 को सुप्रीम कोर्ट के ऐतिहासिक निर्णय पर विराम हुआ। 5 अगस्त 2020 को भूमिपूजन के साथ करोड़ों लोगों की भावनाओं ने विविध प्रकार से उत्सव की अभिव्यक्ति की। यह एक ऐसा आंदोलन रहा जिसमें साधु-संतों ने युद्ध भी किया और वे आध्यात्मिक जागरण के केंद्र भी बने। बैरागी अभिराम दास (योद्धा साधु), राममंदिर आंदोलन के शलाका पुरुष महंत रामचन्द्र परमहंस, महंत अवैद्यनाथ व देवरहा बाबा ने संपूर्ण आंदोलन को एक दिशा प्रदान की। कोठारी बन्धुओं के बलिदान को हिन्दू समाज भला कैसे विस्मृत कर सकता है? विष्णु डालमिया, अशोक सिंहल वे तेजपुंज हैं, जिन्होंने सनातन ऊर्जा को संग्रहित कर इस पवित्र कार्य से जोड़ा। मंदिर आंदोलन के मूल में राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ की भूमिका से सभी भलीभांति परिचित ही हैं। राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के कार्यकर्ताओं ने पूरे आंदोलन में जनजागरण करते हुए आस्था के उच्चतम प्रतिमानों को विश्वव्यापी स्वरूप दिया। विश्व हिंदू परिषद, अखिल भारतीय विद्यार्थी परिषद सहित विचार परिवार के सभी संगठनों ने अपनी पूर्ण सामर्थ्य के साथ तत्कालीन सरसंघचालक बालासाहब देवरस की मंशा के अनुरूप धैर्यपूर्वक योजनाबद्ध आंदोलन किए। भारतीय जनता पार्टी द्वारा लाल कृष्ण आडवाणी के नेतृत्व में देशव्यापी रथयात्रा ने पूरे भारत में वातावरण का निर्माण किया तो असंख्य कारसेवकों के बलिदान ने राम राष्ट्र के इस यज्ञ में समिधा का कार्य किया। मंदिर आंदोलन के इतिहास में अनेक बलिदानियों के रक्त व उनके परिजनों के त्याग का बिंदु समाहित है। राममंदिर के प्रति समाज की आस्था इतनी प्रबल रही है कि जब श्रमदान आवश्यक था तब श्रमदान किया। वहीं राष्ट्रमंदिर को भव्यता और दिव्यता देने के लिए निधि समर्पण अभियान में जाति, वर्ग, दल, समूह के सभी बंधनों को ध्वस्त करते हुए जिससे जो बन पड़ा उसने भगवान श्रीराम के चरणों में समर्पण किया। भारतीय पंचांग के अनुसार पौष शुक्ल द्वादशी के दिन जो पिछले वर्ष 22 जनवरी 2024 को पड़ी थी, भगवान के विग्रह की प्राण-प्रतिष्ठा हुई थी। संपूर्ण भारत की आस्था के केंद्र श्रीराम मन्दिर के माध्यम से आध्यात्मिक चेतना को बल मिला और देशवासियों में स्वाभिमान का जागरण हुआ। वहीं जो लोग मन्दिर निर्माण का विरोध कर रहे थे उनके सारे अवरोधों का प्रति उत्तर भी इस एक वर्ष में मिला। प्राण-प्रतिष्ठा से प्रथम वर्षगांठ तक असंख्य दर्शनार्थियों ने न केवल रामलला के दर्शन किए बल्कि अयोध्या सहित आस-पास के क्षेत्र के आर्थिक तंत्र को मजबूत करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है। नागर शैली में निर्मित अलौकिक सुंदरता से परिपूर्ण श्रीराम मंदिर की लंबाई पूर्व से पश्चिम 380 फीट, चौड़ाई 250 फीट व ऊंचाई 161 फीट है। भव्य तीन मंजिला मंदिर में 392 स्तंभ और 44 द्वार हैं। भूतल में प्रभु श्रीराम का मोहक बाल रूप तो प्रथम तल में श्रीराम दरबार का गर्भगृह है। नृत्य मंडप, रंग मंडप, सभा मंडप, प्रार्थना व कीर्तन मंडप है। उत्तरी भुजा में मां अन्नपूर्णा व दक्षिणी भुजा में हनुमान जी विराजित हैं। मंदिर के समीप ही पौराणिक काल का सीताकूप रहेगा। 732 मीटर लंबे व 14 मीटर चौड़े चहुंमुखी आयताकार परकोटे के चार कोनों पर भगवान सूर्य, मां भगवती, गणपति व भगवान शिव का मंदिर बनेगा। मंदिर परिसर में ही महर्षि वाल्मिकी, महर्षि वशिष्ठ, विश्वामित्र, अगस्त्य, निषादराज, माता शबरी व देवी अहिल्या के मंदिर प्रस्तावित हैं। यह मात्र एक मंदिर नहीं बल्कि भारत की संस्कृति और अस्मिता का प्रतीक है।

अमृत स्नान के साथ शुरू होगा महाकुम्भ में कल्पवास, लाखों श्रद्धालुओं के लिए विशेष इंतजाम

प्रात : किरण संवाददाता

महाकुम्भ नगर। तीर्थराज प्रयागराज में त्रिवेणी संगम के तट पर सनातना आस्था के महापर्व, महाकुम्भ 2025 की शुरूआत होने जा रही है। महाकुम्भ में 40 से 45 करोड़ श्रद्धालुओं के प्रयागराज में आने का अनुमान है। जो गंगा, यमुना और सरस्वती के पवित्र संगम में अमृत स्नान करेंगे। इसके साथ ही लाखों की संख्यां में श्रद्धालु संगम तट पर महाकुम्भ की प्राचीन परंपरा कल्पवास निर्वहन करेंगे। पौराणिक मान्यता के अनुसार श्रद्धालु एक माह तक नियमपूर्वक संगम तट पर कल्पवास करेंगे। जिसके लिए सीएम योगी के मार्गदर्शन में प्रयागराज मेला प्राधिकरण ने विशेष इंतजाम किए हैं। कल्पवास की शुरूआत 13 जनवरी को पौष पूर्णिमा की तिथि से होगी।

10 लाख श्रद्धालु करेंगे संगम तट पर कल्पवास

महाकुम्भ सनातन आस्था का सबसे बड़ा आयोजन होने के साथ बहुत सी सनातन परंपराओं का वाहक भी है। इसमें से महाकुम्भ की एक महत्वपूर्ण परंपरा है संगम तट पर कल्पवास करना। शास्त्रीय मान्यता के अनुसार कल्पवास, पौष पूर्णिमा की तिथि से शुरू हो कर माघ पूर्णिमा की तिथि तक पूरे एक माह तक किया जाता है। इस महाकुम्भ में कल्पवास 13 जनवरी से शुरू होकर 12 फरवरी तक संगम तट पर किया जाएगा। शास्त्रों के अनुसार कल्पवास में श्रद्धालु नियमपूर्वक, संकल्पपूर्वक एक माह तक संगम तट पर निवास करते हैं। वो कल्पवास के दौरान श्रद्धालु तीनों काल गंगा स्नान कर, जप,तप,ध्यान,पूजन और सत्संग करते हैं। महाकुम्भ 2025 में लगभग 10 लाख श्रद्धालुओं के कल्पवास करने का अनुमान है।

कल्पवासियों के लिए किए हैं विशेष इंतजाम

महाकुम्भ की विशेष परंपरा कल्पवास का निर्वहन करने के लिए प्रयागराज मेला प्राधिकरण ने सीएम योगी की प्रेरणा से सभी जरूरी इंतजाम किए हैं। मेले क्षेत्र में गंगा जी के तट पर झूंसी से लेकर फाफामऊ तक लगभग 1.6 लाख टेंट, कल्पवासियों के लिए लगवाए गये हैं। इन सभी कल्पवासियों के टेंटों के लिए बिजली, पानी के कनेक्शन के साथ शौचालयों का निर्माण करवाया गया है। कल्पवासियों को अपने टेंट तक आसानी से पहुंचने के लिए चेकर्ड प्लेटस की लगभग 650 किलोमीटर की अस्थाई संडकों और 30 पांटून पुलों का निर्माण किया गया है। इसके साथ ही सीएम योगी के निर्देश के मुताबिक कल्पवासियों को महाकुम्भ में सस्ती दर पर राशन और सिलेंडर भी उपल्ब्ध करवाया जाएगा। कल्पवासियों के गंगा स्नान के लिए घाटों के निर्माण किया गया है। उनकी सुरक्षा के लिए जलपुलिस और गंगा नदी में बैरीकेड़िंग भी की गई है। ठंड से बचाव के लिए अलाव और स्वास्थ संबंधी समस्या दूर करने के लिए मेला क्षेत्र में अस्पतालों का भी निर्माण किया गया है। कल्पवास का पूजन करवाने वाले तीर्थपुरोहित, प्रयागवालों को भी विशेष सुविधाएं दी गई हैं।

महाकुम्भ की भव्यता और व्यवस्था देख इटली के युवकों ने की तारीफ

प्रयागराज में सजे महाकुम्भ मेले की भव्यता और दिव्यता को निहारने न सिर्फ भारत के कोने-कोने से बल्कि पूरी दुनिया से लोग यहां पहुंच रहे हैं। भारतीय संस्कृति और परंपरा से प्रभावित इटली के तीन दोस्त महाकुम्भ का मेला देखने पहुंचे हैं और यहां मेला परिसर में शिविर में ठहरे हैं। संन्यासी वस्त्र धारण कर घूम रहे युवकों में से एक ने कहा कि उसे ऐसे अहसास होता है कि वह पिछले जन्म में भारतीय था। पीटरों ने बातचीत में कहा कि ह्यमैं योगा का प्रैक्टिशनर हूँ। मुझे भारतीय संस्कृति के बारे में कुछ-कुछ जानकारी है। कुम्भ मेला सनातन धर्म का सबसे बड़ा आयोजन है। यह पहला अवसर है जब मैं कुम्भ मेले में घूमने आया हूँ। मेरे दोस्त यहां आने की योजना बना रहे थे तो मैं भी शामिल हो गया।ह्ल स्टीफेनो ने कहा कि ह्यमैं पहली बार कुम्भ आया हूँ। रूस के रहने वाले मेरे कुछ साधु मित्रों ने मुझे कुम्भ के बारे में बताया। वे भारत में आकर नागा साधु बन चुके हैं। इटली के एमा महाकुम्भ के आयोजन से काफी प्रभावित दिखाई दिए। एमा ने कहा कि ह्यमैं यहां पहली बार आया हूँ। मैं योगा का शिक्षक हूँ। कई भारतीय मेरे मित्र हैं। मुझे भारतीय संस्कृति पसंद है। मुझे लगता है कि इससे पहले के जन्म में मैं इंडियन था। भारत का संगीत, भजन, कीर्तन, सब कुछ मुझे काफी पसंद है। यहां महाकुम्भ मेले की व्यवस्थाएं काफी अच्छी हैं।

सुखदेवी इंटर कॉलेज के शिक्षकों से मिला माध्यमिक शिक्षक संघ

प्रात : किरण संवाददाता

अमरोहा। प्रदेशीय मंत्री डॉ0 जी0 पी0 सिंह के नेतृत्व में माध्यमिक शिक्षक संघ जनपद अमरोहा के पदाधिकारी सुखदेवी इंटर कॉलेज के शिक्षकों से मिलने हसनपुर पहुंचे। संगठन के वरिष्ठ उपाध्यक्ष और विद्यालय के वरिष्ठ शिक्षक महिपाल सिंह के आवास पर शिक्षकों से मिले तथा विद्यालय के प्रवक्ता आलोक कुमार के साथ कक्षा के छात्र द्वारा की गई मारपीट व अमानवीय व्यवहार के सम्बंध में जानकारी की। समाचार पत्रों में भी इस निंदनीय घटना का समाचार प्रकाशित हुआ था। जिसका संज्ञान लेकर ही संगठन के पदाधिकारी हसनपुर पहुंचे। महिपाल सिंह ने बताया कि शिक्षक आलोक कुमार को उनके परिवार वाले यहाँ से मेरठ ले गए हैं। उनके सिर में गंभीर चोटें आई हैं। सिर में टांके आये हैं। देर रात सी टी स्कैन कराया गया है जिसमें सिर में काफी गहरी चोट है। संगठन के पदाधिकारियों ने भी आलोक कुमार से फोन पर बात की, पर वह फोन पर ज्यादा बात करने की स्थिति में नही थे। इस तरह की घटना से शिक्षक सदमे में हैं तथा विद्यालय में अपनी सुरक्षा को लेकर काफी चिंचित हैं। विद्यालय में भरी कक्षा में एक छात्र द्वारा शिक्षक पर हमले से जनपद के सभी शिक्षकों में भारी रोष व्याप्त है। शिक्षकों से बात करने पर प्रदेशीय मंत्री डॉ0 जी0 पी0 सिंह ने बताया कि विद्यालय में और वो भी कक्षा में छात्र द्वारा शिक्षक के साथ कि गयी घटना बहुत ही दुर्भाग्यपूर्ण है और निंदनीय है। शिक्षक घटना से काफी आहत हैं और अपने को असुरक्षित महसूस कर रहे हैं।अगर ऐसी घटनाओं पर कठोरता से अंकुश नही लगाया गया तो विद्यालयों में शिक्षकों का पढ़ाना मुश्किल हो जाएगा। विद्यालयों का संचालन मुश्किल हो जाएगा। ऐसी हालतों में शिक्षक, छात्रों की गलत हरकतों पर टोका टाकी भी नही कर पायेगा, और न ही शासन, प्रशासन, विभाग अथवा प्रधानाचार्य के आदेशों का छात्रों से पालन करा पाएंगे। यह भी जानकारी हुई है कि विद्यालय प्रशासन द्वारा इस संबंध में कोई ठोस कार्यवाही नही की गई है जिससे विद्यालय सहित समूचे जनपद के शिक्षकों में भारी रोष व्याप्त है। जिलाध्यक्ष गुरनाम सिंह ने कहा है घटना पर कोई ठोस कदम न उठाये जाने से शिक्षक अपने को अपमानित महसूस कर रहे हैं। जनपद में किसी भी शिक्षक का अपमान या उत्पीड़न संगठन किसी भी कीमत पर बर्दाश्त नही करेगा। शिक्षक के सम्मान की लड़ाई के लिए संगठन सक्षम है। सदस्य प्रदेश कार्यकारिणी सदस्य अतुल कुमार शर्मा ने कहा कि शिक्षक राष्ट्र निमार्ता कहे जाते हैं और इन राष्ट्र निमार्ताओं के साथ कक्षाओं में जानलेवा हमले किये जा रहे हैं। कितने शर्म की बात है। एक छात्र द्वारा शिक्षक के साथ इतनी निर्दयी पूर्ण घटना, जिसमे शिक्षक की जान भी जा सकती थी, समझ से परे है। जिला विद्यालय निरीक्षक तथा पुलिस प्रशासन सी सी टी वी की फुटेज लेकर इसकी जांच कर उचित कार्यवाही करें। जिला मंत्री बालक राम और जिलाकोषाध्यक्ष कृष्ण पाल सिंह ने संयुक्त रूप से कहा कि इस घटना पर विद्यालय प्रशासन और प्रबंधन ने कोई ठोस कदम नही उठाया। संगठन उच्च अधिकारियों को अवगत कराकर आंदोलनात्मक रणनीति बनाने के लिए बाध्य होगा।इस अवसर पर संदीप कुमार, मुकेश बाबू, श्रीनारायण यादव, भगवान दास, संजय सिंह, डॉ0 ललित कुमार सारस्वत, जगदीश सरन, प्रवेन्द्र कुमार आदि शिक्षक उपस्थित थे।

संक्षिप्त खबरें

महाकुम्भ स्नान के लिए घाट तैयार, संस्थाओं में कार्य प्रगति पर

महाकुम्भ नगर। संगम की रेती पर आयोजित विश्व का सबसे बड़ा धार्मिक समागम महाकुम्भ, सोमवार के स्नान पर्व से प्रारंभ होने जा रहा है जिसके लिए मेला प्रशासन ने पूरी तरह से तैयारी का दावा किया है। हालांकि अभी कई जगहों पर कार्य प्रगति पर है। स्नान से एक दिन पूर्व रविवार को संगम घाट और अन्य घाटों पर तैयारियों का जायजा लिया। सभी घाट स्नान के लिए पूरी तरह से तैयार हैं। इस बार संगम तट के अलावा नदी के बीच में कई ह्यचेंजिंग रूम बनाए गए हैं और सभी नाविकों को यात्रियों के लिए लाइफ जैकेट दिए गए हैं। श्रद्धालुओं की सुविधा के लिए नाव के किराए की दर का बोर्ड भी लगाया गया है।

संगम क्षेत्र में स्नान के लिए भारी संख्या में आ रहे श्रद्धालुओं को लेकर उत्साहित नाविक विष्णु निषाद ने कहा, इस बार का कुम्भ मेला हम नाविकों के जीवन में खुशी की लहर लेकर आया है। मेला प्रशासन द्वारा किराया बढ़ाने से सभी नाविक उत्साहित हैं। स्नान घाटों पर श्रद्धालुओं की सुरक्षा को विशेष महत्व देते हुए महाकुम्भ में पहली बार अंडर वॉटर ड्रोन तैनात किया गया है जो 24 घंटे पानी के भीतर हर गतिविधियों की निगरानी करने में सक्षम है। प्रभारी पुलिस महानिरीक्षक (पूर्वी जोन) डॉक्टर राजीव नारायण मिश्र ने बताया कि पानी के अंदर बेहद तेज गति से काम करने वाले इस ड्रोन की सबसे खास बात यह है कि यह अंधेरे में भी लक्ष्य पर सटीक नजर रखने और पानी के नीचे 100 मीटर गहराई तक टोह लेने में सक्षम है।

उन्होंने बताया कि यहां 700 झंडे लगी नावों पर 24 घंटे प्रांतीय सशस्त्र कांस्टेबुलरी (पीएसी), राष्ट्रीय आपदा मोचन बल (एनडीआरएफ) व राज्य आपदा मोचन बल (एसडीआरएफ) के जवान तैनात रहेंगे। साथ ही श्रद्धालुओं की सुरक्षा के लिए बड़े पैमाने पर गोताखोर तैनात किए गए हैं।

महाकुम्भ का स्नान पर्व 13 जनवरी को पौष पूर्णिमा के साथ प्रारंभ होकर 26 फरवरी को महाशिवरात्रि तक चलेगा। इस अवधि में मुख्य स्नान पर्व 14 जनवरी (मकर संक्रांति) 29 जनवरी (मौनी अमावस्या) और तीन फरवरी (बसंत पंचमी) का है।

सेक्टर 18 में अखाड़ों विशेषकर जूना अखाड़ा के शिविरों की कुटिया में धुनी रमाये नागा साधुओं को देखने और उनसे मिलने के लिए बड़ी संख्या में लोग आ रहे हैं। महाकुम्भ के मुख्य आकर्षण इन अखाड़ों को बसाने में मेला प्रशासन ने कोई कोर कसर नहीं छोड़ी है। इसी प्रकार, अपनी दिव्यता और भव्यता के लिए चर्चा में रहे पायलट बाबा, जूना अखाड़ा के आचार्य महामंडलेश्वर स्वामी अवधेशानंद गिरि और निरंजनी अखाड़ा के आचार्य महामंडलेश्वर स्वामी कैलाशानंद गिरि के शिविरों में देसी और विदेशी अतिथियों का आगमन प्रारंभ हो चुका है और इनके शिविर पूरी तरह से तैयार हैं। मेला क्षेत्र में सेक्टर 18 में संगम लोअर मार्ग पर पायलट बाबा के शिविर में मौजूद महामंडलेश्वर शैलेशानंद गिरि ने तैयारियों पर संतोष व्यक्त करते हुए कहा कि उनका शिविर लगभग तैयार है, ज्यादातर अतिथि आ चुके हैं और मेला प्रशासन ने बहुत अच्छी व्यवस्था की है। मेला क्षेत्र के वीआईपी सेक्टर कहे जाने वाले सेक्टर 2, 3, 4, 18 और 19 में अखाड़ों और प्रशासनिक अधिकारियों के शिविर बनकर तैयार हैं, लेकिन कल्पवासियों के शिविरों में शौचालय और पानी जैसी मूलभूत सुविधाओं की कमी की शिकायतें आ रही हैं।

स्वामी विवेकानन्द जयन्ती पर वेंक्टेश्वरा में वेंक्टेश्वरा युवा महोत्सव-2025 का आगाज

- भारतीय संस्कृति को विश्व पटल पर अंकित कराने वाले पहले महामानव थे स्वामी विवेकानन्दः डा. सुधीर गिरि
- युवाओ के आदर्श, विश्व शान्ति के संवाहक स्वामी विवेकानन्द जी के विचार आज भी प्रांसगिकः डा. राजीव

प्रात : किरण संवाददाता

अमरोहा। श्री वेंक्टेश्वरा विश्वविद्यालय में युवाओ के प्रणेता, युग प्रवर्तक, भारतीय संस्कृति के वैश्विक संवाहक स्वामी विवेकानन्द जी की जयन्ती पर ह्लवेंक्टेश्वरा युवा महोत्सव-2025ह्ल का शानदार शुभारम्भ हुआ। तीन दिनों तक चलने वाले इस युवा महोत्सव में विभिन्न खेलकूद प्रतियोगितायें, सांस्कृतिक आयोजन, रक्तदान शिविर,यातायात जागरूकता, महिला सशक्तीकरण समेत एक दर्जन से अधिक कार्यक्रम आयोजित किये जायेगे। श्री वेंक्टेश्वरा विश्वविद्यालय के सी.वी. रमन सभागार में ह्लवेंक्टेश्वरा युवा महोत्सव-2025ह्ल का शुभारम्भ समूह चेयरमैन डा. सुधीर गिरि, प्रतिकुलाधिपति डा. राजीव त्यागी, कुलपति प्रो. कृष्ण कान्त दवे, सीईओ अजय श्रीवास्तव आदि ने सरस्वती माँ की प्रतिमा के सम्मुख दीप प्रज्जवलित करके एवं स्वामी जी के चित्र पर पुष्प अर्पित करके किया। अपने सम्बोधन में समूह चेयरमैन डा. सुधीर गिरि ने कहा कि स्वामी विवेकानन्द ने भारतीय संस्कृति को वैश्विक स्तर पर पहचान दिलाकर भारत को विश्व पटल पर विश्व गुरू के रूप में स्थापित किया। उन्होने युवाओ से उनके आदर्शो पर चलकर देश सेवा करने का आवाहन किया। इस अवसर पर आज पहले दिन एकता दौड़, यातायात जागरूकता रैली एवं रक्तदान शिविर व रस्साकाशी प्रतियोगिताओ का आयोजन किया गया। -प्रतिकुलाधिपति डा. राजीव त्यागी ने कहा कि अकेले स्वामी जी ने देश की छवि को विश्व पटल पर पाश्चात्य देशो के सामने विश्व गुरू के रूप में प्रस्तुत कर भारत का मान बढाया, निःसंदेह वो ह्लयूथ आईकनह्ल है। हमे उनके दिखाये गये शान्ति सदभाव एवं वैश्विक एकता के मार्ग पर चलकर पूरी दुनिया का सिरमौर बनने की ओर जाना है। कुलपति प्रो. (डा.) कृष्ण कान्त दवे ने कहा कि स्वामी जी ने युवाओं को बताया कि कैसे वो बिना डरे विपरीत परिस्थितियों में संघर्ष करते हुए राष्ट्र निर्माण में अपना योगदान दे सकते हैं इस अवसर पर सीईओ अजय श्रीवास्तव, सलाहकार आर. एस. शर्मा, डीन अकेडमिक डा.राजेश सिंह, सी.ओ.ई. डा.मोहित शर्मा, डा.तेजपाल सिंह, डा.आशुतोष सिंह, डा.ओम प्रकाश गोसाई, डा.राहुल कुमार, डा.अश्विन कुमार सक्सेना, डा.सर्वानन्द साहू, डा. ऐना एरिक ब्राउन, डा. स्नेहलता गोस्वामी, डा. नीतू पंवार, रिंकी शर्मा, डा.एल. एस. रावत, एस. एस. बघेल, अरूण कुमार गोस्वामी, मारूफ चौधरी, मेरठ परिसर से निदेशक प्रताप सिंह एवं मीडिया प्रभारी विश्वास राणा आदि लोग सम्मिलित रहे। कार्यक्रम का संचालन डा. राजवर्धन सिंह ने किया।

विकास व विरासत प्रगति पथ पर उत्तर प्रदेश थीम पर होगा यूपी दिवस

लखनऊ। योगी सरकार के नेतृत्व में इस वर्ष भी 24 से 26 जनवरी तक उत्तर प्रदेश दिवस का आयोजन किया जाएगा। इस उपलक्ष्य में लखनऊ, नोएडा समेत सूबे के सभी जनपदों में विविध कार्यक्रम होंगे। इस बार यूपी दिवस की थीम ह्यविकास व विरासत प्रगति पथ पर उत्तर प्रदेशह्ल रखा गया है।

इस थीम पर ही प्रदर्शनी, संगोष्ठी, सम्मेलन, सांस्कृतिक कार्यक्रम, प्रतियोगिताएं और रोड शो समेत अनेक आयोजन होंगे। मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ ने यूपी दिवस के आयोजन को भव्यतम बनाने का निर्देश दिया है। उन्होंने इसके अतिरिक्त अन्य कार्यक्रमों के आयोजन को लेकर भी दिशा-निर्देश दिया है।

उत्तर प्रदेश राज्य की स्थापना 24 जनवरी 1950 को हुई थी। इस दिन प्रदेश का नाम संयुक्त प्रांत से बदलकर उत्तर प्रदेश रखा गया था। योगी सरकार 2018 से अनवरत 24 से 26 जनवरी तक उत्तर प्रदेश दिवस का भव्य आयोजन कर रही है। इस बार भी सरकार के विभिन्न विभागों द्वारा जनसहभागिता से यूपी दिवस मनाया जाएगा। मुख्य कार्यक्रम लखनऊ व नोएडा में होंगे, लेकिन यूपी के सभी 75 जनपदों में यूपी दिवस का आयोजन किया जाएगा। मुख्य सचिव मनोज कुमार सिंह ने सभी विभागों के अपर मुख्य सचिव-प्रमुख सचिव को भेजे पत्र में निर्देश दिया है कि यूपी दिवस से जुड़े कार्यक्रम ह्यविकास व विरासत प्रगति पथ पर उत्तर प्रदेशह्ल थीम पर प्रदर्शनी, संगोष्ठी, सम्मेलन, सांस्कृतिक कार्यक्रम, प्रतियोगिताएं, रोड शो समेत सभी आयोजन हों। स्वामी विवेकानंद की जयंती पर युवा कल्याण की तरफ से होने वाली खेलकूद प्रतियोगिताओं के विजेताओं को उत्तर प्रदेश दिवस पर सम्मानित किया जाए। योगी सरकार के निर्देशन में यूपी दिवस पर अनेक विभाग विविध आयोजन कराएंगे। यूपी दिवस पर एमएसएमई विभाग द्वारा ओडीओपी के अंतर्गत प्रदेश के शिल्पकारों के उत्पादों की प्रदर्शनी का आयोजन होगा। वहीं उद्योग और अवस्थापना विभाग द्वारा स्टार्टअप व ईज ऑफ डूइंग बिजनेस पर आधारित प्रदर्शनी, इनवेस्ट उत्तर प्रदेश द्वारा वन ट्रिलियन डॉलर इकॉनमी पर आधारित प्रदर्शनी, सूचना एवं जनसंपर्क विभाग द्वारा प्रगतिमान उत्तर प्रदेश पर आधारित प्रदर्शनी, गृह विभाग द्वारा मिशन शक्ति पर आधारित प्रदर्शनी, संसदीय कार्य विभाग द्वारा संविधान गैलरी व संविधान का अमृतकाल, नगर विकास विभाग द्वारा कुंभ पर आधारित प्रदर्शनी, संस्कृति विभाग द्वारा प्रदेश की कला, संस्कृति व इतिहास पर आधारित प्रदर्शनी, काकोरी ट्रेन एक्शन पर आधारित प्रदर्शनी लगाई जाएगी। इस दौरान विभिन्न क्षेत्रों में उत्कृष्ट कार्य करने वाले लोगों को उत्तर प्रदेश दिवस में सम्मानित भी किया जाएगा।

मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ ने यूपी दिवस को शानदार ढंग से मनाने का निर्देश दिया है। इसके अलावा मुख्यमंत्री ने 23 जनवरी को नेता जी सुभाष चंद्र बोस जयंती, 25 जनवरी को राष्ट्रीय पर्यटन दिवस/मतदाता दिवस और 26 जनवरी को गणतंत्र दिवस पर भव्य आयोजन कराने के निर्देश दिए हैं।

राष्ट्रीय कैडेट्स कोर ने मनाया उत्साहपूर्वक राष्ट्रीय युवा दिवस

प्रात : किरण संवाददाता

स्योहारा। राष्ट्रीय कैडेट्स कोर (एनसीसी) ने बड़े ही उत्साह और उमंग से राष्ट्रीय युवा दिवस मनाया।32 वीं यूपी एनसीसी बटालियन धामपुर के प्रशासनिक अधिकारी लेफ्टिनेंट कर्नल ललित भट्ट के दिशा निर्देशन एवं लेफ्टिनेंट धीरज शर्मा के नेतृत्व में आर.एस.पी. इंटर कॉलेज में एनसीसी कैडेट्स ने राष्ट्रीय युवा दिवस बड़े धूमधाम से मनाया तथा स्वामी विवेकानंद के आदर्शों एवं विचारों से प्रेणना ली। इस अवसर पर एन.सी.सी. अधिकारी लेफ्टिनेंट धीरज शर्मा ने कहा कि स्वामी विवेकानंद एक महान भारतीय संत दार्शनिक और राष्ट्रवादी थे भारत में ही नहीं अपितु विदेश तक राष्ट्रीय चेतना और भारतीय संस्कृति को पहुंचाया और युवाओं को प्रोत्साहित किया। युवा दिवस का मुख्य थीम निडरता, शक्ति,एकता धार्मिक सद्दभाव, आध्यात्मिक विकास और मानवता की सेवा है। इसका मुख्य उद्देश्य स्वामी विवेकानंद के विचारों ,मूल्य और आदर्शों को बढ़ावा देना तथा उनके विचारों को देश के हर युवा तक पहुंचना है जिससे वे सभी मिलकर देश की प्रगति में अपना योगदान दे सकें। भारत सरकार ने इस दिन को वर्ष 1984 में मान्यता प्रदान की थी।

इतिहास में विश्नोई समाज पर्यावरण व जीव प्रेमी के रूप में है दर्जः सलील विश्नोई

प्रात : किरण संवाददाता, नादिर त्यागी

स्योहारा। क्षेत्र के गांव हिरनपुरा विश्नोई में सी.सी. रोड का उद्घाटन करने के लिए प्रदेश उपाध्यक्ष एवं भाजपा विधान परिषद सदस्य सलील विश्नोई पहुचें। हरिद्वार विश्नोई आश्रम के मंहत स्वामी राजेंद्र आनंद महाराज ने मंत्रोच्चार के साथ सीसी सड़क का उद्घाटन किया । जिसके बाद विश्नोई मंदिर जाकर विधायक सदस्य विधान परिषद सलील विश्नोई व राजेंद्र आनंद महाराज नें मथ्था टेका और समाज को सम्बोधित किया। विश्नोई समाज नें विधान परिषद सदस्य सलील विश्नोई को अंग वस्त्र भेंट कर स्वागत किया। इस दौरान उन्होंने कहा कि विश्नोई समाज विश्व मे अपनी पहचान पर्यावरण संरक्षण, जीव प्रेम के लिये पहचाना जाता है। माँ अमृता विश्नोई का नाम लेते हुए कहा कि वृक्षों की रक्षा के लिए इतना बड़ा बलिदान इस विश्नोई समाज ने दिया है। प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी भी कई बार विश्नोई समाज का नाम लेकर धन्यवाद कर चुके है। भाजपा नेता सीपी सिंह नें कहा कि विश्नोई समाज से उन्हें भी प्रेरणा मिलती है। समाज से उन्हें प्रेम मिलता है। इस दौरान वरिष्ठ भाजपा नेता डॉक्टर सी.पी. सिंह ग्राम प्रधान प्रदीप विश्नोई, भाजपा नेता अशोक विश्नोई, राजन विश्नोई, अमित पहलवान, गन्ना चैयरमैन कांठ कुंवर सुरेंद्र विश्नोई, विशाल चौहान, आरपी विश्नोई, चंदकान्त त्यागी आदि मौजूद रहे।

जल्द दूर होगी शहर मे जल भराव की समस्याः महबूब अली

प्रात : किरण संवाददाता

अमरोहा। पूर्व कैबिनेट मंत्री, सदर विधायक/लोक लेखा समिति के चेयरमैन महबूब अली ने पिछले सप्ताह कई विभिन्न विभिन्न विभागो की लोक लेखा समिति की बैठकों की अध्यक्षता करने के उपरान्त रविवार को अपने शिविर कार्यालय मौहल्ला दानिश्शमन्दान मे क्षेत्रिय जनता की विभिन्न समस्याओ का निराकरण किया एवं जनसमूह को सम्बोधित करते हुए बताया कि अमरोहा नगर में जल निकासी की एक बहुत ही महत्वपूर्ण एवं ज्वलन्त समस्या है जिसके लिये मेरे द्वारा पहले भी समाजवादी पार्टी शासनकाल मे प्रयत्न करके जल निकासी हेतु नाला निर्माण कराया गया था किन्तु धन अभाव मे नाला निर्माण पूर्ण न हो सका मै बराबर प्रयत्नशील रहा हूँ कि अमरोहा की जल निकासी की समस्या का निराकरण हो, सम्बंधित विभाग की बैठक कर नाला निर्माण हेतु शासन से मेरे द्वारा धन अवमुक्त कराने का प्रयत्न किया गया है जो शिघ्र ही शासन से अवमुक्त हो जायेगा जिससे नाला निर्माण एंव जल निकासी की समस्या का समाधान हो सकेगा। मेरे द्वारा समाजवादी पार्टी शसनकाल में अमरोहा विधान सभा क्षेत्र के गाँव कटाई-सहसपुर में राजकीय पॉलीटेक्नीक विद्यालय क्षेत्रिय जनता की पुत्र एवं पुत्रियो की तकनिकी शिक्षा के लिये स्वीकृत कराया गया था जिसका धन अभाव मे निर्माण अवरूद्ध है उक्त विद्यालय का निर्माण पूर्ण हो सके इसके लिये भी प्रयत्न करके मेरे द्वारा शासन से धन अवमुक्त कराया गया है जो शिघ्र ही अवमुक्त हो जायेगा और पॉलीटेक्नीक विद्यालय का निर्माण पूर्ण हो सकेगा। श्री अली ने कहाँ कि मेरा मन एंव भवना सदैव जनता की समस्याओ को निराकरण करने की रहती है।

अब काशी में लगे सपा और आप के समर्थन के पोस्टर, अखिलेश बांसुरी लिए आ रहे नजर

वाराणसी। दिल्ली विधानसभा चुनाव में समाजवादी पार्टी का आम आदमी पार्टी (आप) को समर्थन का पोस्टर वाराणसी में लगाया गया है। इसमें पार्टी के मुखिया अखिलेश यादव बांसुरी लिए नजर आ रहे हैं। पोस्टर लगाने वाले सपा प्रवक्ता आलोक सौरभ पांडेय का कहना है कि इस पोस्टर में सपा मुखिया अखिलेश यादव इंडिया गेट से बांसुरी लेकर निकले हैं। समाजवादी विचारधारा से ही यह देश चल सकता है। दिल्ली विधानसभा चुनाव में सपा ने आम आदमी पार्टी को समर्थन दिया है। यह चुनाव हम जीतने जा रहे हैं। इसके साथ मिल्कीपुर उपचुनाव भी जीतने जा रहे हैं। उनका कहना है कि जिस प्रकार से अखिलेश ने प्रदेश में विकास किया है, वैसे ही पूरे देश में विकास होगा। सपा प्रवक्ता ने कहा कि हम इस देश की तीसरी सबसे बड़ी पार्टी हैं। इससे स्पष्ट है कि समाजवादी विचारधारा से देश को चलाया जा सकता है। उसके बिना देश का विकास और भविष्य संभव नहीं है। उन्होंने बांसुरी के संकेत के बारे में बताते हुए कहा कि जिस प्रकार अपनी बांसुरी से श्री कृष्ण लोगों को मंत्रमुग्ध कर लेते थे, ठीक उसी प्रकार अखिलेश यादव भी उन्हीं के बताए रास्ते पर चल रहे हैं। अखिलेश यादव ही इंडी गठबंधन को दिशा दिखा सकते हैं। ज्ञात हो कि दिल्ली विधानसभा चुनावों की तारीखों का ऐलान हो चुका है। पांच फरवरी को मतदान और आठ फरवरी को मतगणना होनी है। इसी के साथ समाजवादी पार्टी ने आम आदमी पार्टी को समर्थन देने का ऐलान कर दिया है। सपा के राष्ट्रीय अध्यक्ष सांसद अखिलेश यादव ने अपनी पार्टी का रुख स्पष्ट करते हुए कहा कि हम आप का समर्थन करेंगे और उसके साथ मंच भी साझा करेंगे।

गन प्वाइंट पर चुनाव जीतने की कोशिश हो तो कार्यकर्ता लें फैसला : अखिलेश यादव

लखनऊ। समाजवादी पार्टी प्रमुख अखिलेश यादव ने मिल्कीपुर उपचुनाव में जीत का दावा करते हुए कहा कि उनकी पार्टी हर हाल में चुनाव जीतेगी। लेकिन अगर गन प्वाइंट पर चुनाव जीतने की कोशिश की गई तो उनके कार्यकर्ता उस समय जो फैसला ले सकते हैं, वह लें, इस बात को मन में रखें। रविवार को सपा मुखिया अखिलेश यादव लखनऊ में विवेकानंद की जयंती पर पत्रकारों को संबोधित कर रहे थे। उन्होंने मिल्कीपुर उपचुनाव पर सरकार को घेरा। उन्होंने कहा कि मिल्कीपुर चुनाव में गन प्वाइंट पर गड़बड़ी की गई तो मैं अपने कार्यकताओं से कहूंगा, उस समय जो फैसला ले सकते हैं, लें। भाजपा ने अपने विभागों के लूटने वाले मंत्रियों को वहां ड्यूटी पर लगाया है। सपा मुखिया ने कहा कि इस बात को अपने मन में रखें, इंडिया गठबंधन मजबूत है और मजबूत रहेगा। जिस राज्य में भाजपा के खिलाफ जो क्षेत्रीय दल मजबूत है, उसका साथ दिया जाना चाहिए। सपा अध्यक्ष अखिलेश यादव ने महाकुंभ में गंगा स्नान को लेकर कहा कि वह गंगा स्नान के लिए जाते रहे हैं। इसकी फोटो भी मैं शेयर कर सकता हूं। जो भाजपा नेता आरोप लगा रहे हैं, वह अपनी फोटो भी शेयर करें। कुछ पुण्य के लिए गंगा स्नान करते हैं, कुछ दान और कुछ पाप धोने जाते हैं। वो (भाजपा) पाप धोने के लिए जाएंगे, और हम पुण्य के लिए। उन्होंने कहा कि स्वामी विवेकानंद से युवाओं को सीखना, जानना और प्रेरणा लेना बहुत जरूरी है। स्वामी विवेकानंद ने कहा था कि धर्म से ज्यादा हमें रोटी की जरूरत है। कन्नौज की घटना पर बोलते हुए सपा प्रमुख अखिलेश यादव ने कहा कि अंग्रेजों के जमाने के जो रेलवे स्टेशन बने हुए हैं, वह आज भी वैसे के वैसे ही मजबूत दिखाई दे रहे हैं। कन्नौज की घटना में बड़े पैमाने पर मजदूर दबे, भगवान की कृपा है कि किसी की अभी तक जान नहीं गई है। हमें उम्मीद है कि सरकार कन्नौज हादसे में घायलों का इलाज कराएगी।

बलरामपुर में तेंदुए का शव मिला, वन विभाग ने जांच शुरू की

प्रात : किरण संवाददाता

बलरामपुर । उत्तर प्रदेश में बलरामपुर जिले के सोहेलवा वन क्षेत्र के भाभर रेंज में एक वयस्क तेंदुए का शव मिला है। वन विभाग के एक अधिकारी ने बताया कि तेंदुए के मौत के कारणों की जांच की जा रही है। प्रभागीय वनाधिकारी (डीएफओ) डॉ सेम मारन एम ने रविवार को बताया कि भाभर रेंज के बेलभरिया गांव के पास सागौन के बाग में शनिवार को एक तेंदुए का शव पड़ा होने की जानकारी मिली थी। सूचना मिलने पर वन विभाग की टीम को रवाना किया गया। उन्होंने बताया कि तेंदुए के शरीर पर चोट के निशान नहीं हैं। चिकित्सकों की तीन सदस्यीय टीम आज पोस्टमार्टम करेगी। उन्होंने बताया कि यह शव नर तेंदुए का है और उसकी उम्र करीब छह वर्ष है।

स्वामी विवेकानंद ने वैश्विक पटल पर सनातन संस्कृति को किया प्रतिष्ठितःयोगी

प्रात : किरण संवाददाता

गोरखपुर। उत्तर प्रदेश के मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ ने कहा कि स्वामी विवेकानंद जी ने उस कालखंड में जब देश गुलामी की बेड़ियों में जकड़ा हुआ था, वैश्विक पटल पर सनातन वैदिक संस्कृति को प्रभावी ढंग से प्रतिष्ठित किया। इस युवा संन्यासी ने अपने विचारों और आचरण की साम्यता से राष्ट्र के प्रति चेतना जागृत करने में बड़ी भूमिका निभाई है। गुलामी के कालखंड में सनातन वैदिक मूल्यों की चर्चा दुरूह होने के बावजूद स्वामी विवेकानंद ने ह्यगर्व से कहो हम हिंदू हैंह्ल का उद्घोष किया।

सीएम योगी रविवार को नेताजी सुभाषचंद्र बोस नगर कॉलोनी में स्थित सरस्वती शिशु मंदिर वरिष्ठ माध्यमिक विद्यालय में स्वामी विवेकानंद की जयंती ह्ययुवा दिवसह्ल के अवसर पर स्वामी विवेकानंद की प्रतिमा का अनावरण करने के बाद विद्यालय के पूर्व छात्रों के सम्मेलन को संबोधित किया। विद्यालय के रज्जू भैया सभागार में आयोजित कार्यक्रम में मुख्यमंत्री ने स्वामी विवेकानंद की जयंती पर उनकी स्मृतियों को नमन करते हुए कहा कि महज 42 वर्ष की उम्र में नश्वर काया को छोड़ देने वाले स्वामी विवेकानंद ने सदैव भारत और भारतीयता की बात की। उनकी जयंती पर आज पूरा देश उन्हें भारत माता के महान सपूत और राष्ट्रीय-आध्यात्मिक गुरु के रूप में याद कर उनके योगदान के प्रति कृतज्ञता ज्ञापित कर रहा है।

मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ ने कहा कि स्वामी विवेकानंद ने शिकागो समिट में जब भारतीय सनातन मूल्यों को वैश्विक मंच पर रखा तो उनके वक्तव्य को सुनकर दुनिया मंत्रमुग्ध और भाव-विभोर हो गई। स्वामी जी ने सबको जागरूक करते हुए कहा था कि सनातन धर्म सबसे प्राचीन धर्म है। हर भारतवासी को इस पर गौरव की अनुभूति करनी चाहिए। स्वामी जी की शिक्षा है कि हम सबका एक ही धर्म होना चाहिए, राष्ट्रधर्म।

उन्होंने कहा कि भारत ने स्वामी विवेकानंद के विचारों का अनुसरण किया तो देश को आजाद होने में समय नहीं लगा। मुख्यमंत्री ने कहा कि आज स्वामी विवेकानंद का नाम सभी लोग लेते हैं लेकिन हिंदुत्व का उद्घोष करने वाले संन्यासी को वामपंथी कैसे स्वीकार करते। स्वामी विवेकानंद के विचारों को सरस्वती शिशु मंदिरों ने हमेशा अंगीकार किया। स्वामी जी के विचारों को आगे बढ़ाने के लिए देशभर में सरस्वती शिशु मंदिरों की लंबी श्रृंखला है।

सीएम योगी ने कहा कि स्वामी विवेकानंद का मानना था कि चुनौती जितनी कठिन होगी, उसके अनुरूप परिश्रम करने पर जीत और शानदार होगी। उनके अनुसार परिश्रम का कोई विकल्प नहीं होता है। स्वामी जी के आदर्शों पर चलकर कठिन चुनौतियों का सामना करते हुए भारत आज विश्व की पांचवीं सबसे बड़ी अर्थव्यवस्था हो गया है और तीसरी अर्थव्यवस्था बनने की ओर अग्रसर है। इससे प्रति व्यक्ति आय बढ़ेगी, शिक्षा, स्वास्थ्य, इंफ्रास्ट्रक्चर के नए दौर की शुरूआत होगी। भारत वैश्विक टेक्नोलॉजी का हब बनेगा। देश में हर चेहरे पर खुशहाली होगी। मुख्यमंत्री ने बताया कि स्वामी जी के आदर्शों के अनुरूप युवाओं को समय के अनुकूल सक्षम बनाने के लिए स्वामी विवेकानंद युवा सशक्तिकरण योजना के तहत 2 करोड़ युवाओं को टैबलेट-स्मार्टफोन उपलब्ध कराए जा रहे हैं।

उन्होंने कहा कि स्वामी विवेकानंद जी के आदर्शों के अनुरूप शिक्षा देने और राष्ट्रीयता का भाव जागृत करने के लिए सरस्वती शिशु मंदिर की शुरूआत नानाजी देशमुख ने गोरखपुर से की थी। उन्होंने कहा कि आज इन शिक्षा मंदिरों के जरिए जनजातीय क्षेत्रों में भी महत्वपूर्ण कार्य हुए हैं। यदि इन कार्यों को तत्कालीन सरकारों ने समय रहते किया होता तो आज वहां अराजकता की यह स्थिति नहीं होती। मुख्यमंत्री ने बताया कि आज नानाजी देशमुख के नाम पर एक पार्क का शिलान्यास किया गया है। नानाजी देशमुख ने ग्रामीण विकास और वनवासी क्षेत्रों के विकास का जो मॉडल दिया है, वह आज भी अनुकरणीय है।

विवेकानंद की मनाई गई जयंती, उनके आदर्शों पर चलने का लिया संकल्प

प्रातः किरण संवाददाता

बिक्रमगंज (रोहतास) । शहर के नासरीगंज रोड स्थित अखंड क्लासेस में रविवार को स्वामी विवेकानंद की जयंती युवा दिवस के रूप में मनाई गई। कार्यक्रम की शुरूआत उनके तैल चित्र पर पुष्प अर्पण के साथ किया गया। कार्यक्रम में उपस्थित प्रतियोगी विद्यार्थियों को संबोधित करते हुए मुख्य वक्ता समरसता पुरुष संजय तिवारी ने विवेकानंद के आदर्शों पर प्रकाश डालते हुए वर्तमान के युवाओं के लिए अनुकरणीय बताया। वही कार्यक्रम में उपस्थित मुख्य अतिथि बलिराम मिश्रा ने कहा कि स्वामी विवेकानंद ने अपने साधु स्वरूप से विश्व पटल पर भारत की स्वाभिमान बढ़ाने का काम किया था। क्लासेस के संचालक धनंजय सिंह ने छात्रों को जीवन में स्वयं के साथ राष्ट्र चिंतन का सुझाव दिया। एबीवीपी के रोहतास जिला विभाग संयोजक स-ूरज ने संगठन के कार्य एवं बिस्तर पर प्रकाश डाला। कार्यक्रम का संचालन वरिय स्वयंसेवक संतोष भंडारी द्वारा किया गया। मौके पर नवीन चंद्र शाह, नागेश्वर कुशवाहा,नगर मंत्री रितेश दुबे, विस्तारक कुश पांडेय आदि थे।

बीपीएससी अभ्यर्थियों के समर्थन में सासाराम बंद

प्रातः किरण संवाददाता

सासाराम(रोहतास)। बीपीएससी 70वीं रि- एक्जाम खाद की कालाबाजारी पूर्णिया के निर्दलीय सांसद राजेश रंजन उर्फ पप्पू यादव के बिहार बंद के आहवान पर रोहतास जिले के पप्पू यादव समर्थको ने सासाराम प्रदर्शन किया।सासाराम में बंद का नेतृत्व युवा शक्ति के प्रदेश अध्यक्ष तोराब नियाजी ,लालसाहेब सिंह ने संयुक रूप से किया।पप्पू यादव समर्थक विशाल कुशवाहा ने बताया कि छात्र युवा किसान विरोधी सरकार है। एक तरफ बिहार के प्रतियोगी परीक्षाओं में अनियमितता होने से बिहार के छात्रों के भविष्य के साथ खिलवाड़ किया जा रहा है वहीं

दूसरी तरफ किसानों के खेत में नहरों का पानी नहीं पहुंचना तथा फसलों के लिए खाद के कालाबाजारी होना,दोगुने दाम पर खाद बिकना किसानों के साथ नाइंसाफी है।

ऐसे में बिहार राजधानी में राजमहल में बैठ कर छात्रों, युवाओं, किसानों के साथ अन्याय करने वाली एनडीए सरकार को इसका खामियाजा भुगतना पड़ेगा। जाप के पूर्व जिला अध्यक्ष ई विशाल कुशवाहा ने कहा कि बीपीएससी छात्रों के मांगो के समर्थन में धरना,अनशन,पुतला दहन,चक्का जाम आदि चरणबध आंदोलन हुआ सरकार जब छात्रों की मांगो को अनसुनी कर दी तब इस गूंगी बहरी सरकार के बिहार बंद के माध्यम सरकार तक छात्रों, युवाओं, किसानों की मांग को पहुंचना पड़ रहा है।

इस दौरान सासाराम विनोद सिंह यादव, सागर यादव, मनीष कुशवाहा,धनजी यादव,राहुल कुमार,महमूद अलम,समीर,काशी यादव, विजय बैठा, अजित राम, रंगनाथ सिंह, सोनू गुप्ता आदि लोग मौजूद रहे।

डायमंड जुबली राष्ट्रीय जंबूरी त्रिची तमिलनाडु में भाग लेंगे रोहतास के स्काउट और गाइड

प्रातः किरण संवाददाता

सासाराम(रोहतास) । बिहार राज्य भारत स्काउट और गाइड बुद्ध मार्ग पटना के निदेर्शानुसार रोहतास जिला से 28 स्काउट गाइड यूनिट लीडर जिला शिक्षा पदाधिकारी सह सभापति भारत स्काउट और गाइड रोहतास के निदेर्शानुसार जिला संगठन आयुक्त श्री अरविन्द कुमार सिंह एवं गाइड कैप्टन आरती सिंह के नेतृत्व में रोहतास जिला का प्रतिनिधित्व करने के लिए भारत स्काउट और गाइड की 75 वीं स्थापना दिवस पर डायमंड जुबली राष्ट्रीय जंबूरी का आयोजन 28 जनवरी 2025 से 3 फरवरी 2025 तक तमिलनाडु के शीपकाट, तरिचिपल्ली जिला त्रिची में किया जा रहा है।

डायमंड जुबली जंबूरी में पड़ोसी देश के लगभग 1500 स्काउट गाइड सम्मिलित होंगे। उन्होंने बताया कि त्रिची में विभिन्न ऐतिहासिक, धार्मिक, और पर्यटन स्थलों का भ्रमण कर वहां की लोक संस्कृति, वेशभूषा, खान पान, पहनावा, प्राकृतिक छटाओं का अवलोकन कर हमारे यहां की विविधताओं का प्रदर्शन करेंगे।जंबूरी में विभिन्न प्रतियोगिताएं जिनमें स्टेट गेट, केम्प क्राफ्ट, शिविर ज्वाल, पायनीयरिंग प्रोजेक्ट, मार्चपास्ट, कलर पार्टी, लोकगीत, लोकनृत्य, फिजिकल डिस्प्ले, बेंड डिस्प्ले, झांकी,पायोनियारिंग किया जाएगा प्रदर्शन कार्यक्रम में रोहतास जिला से भाग लेने के लिए चयन किया गया है श्री दुर्गा उच्च विद्यालय शिवसागर से रविशंकर कुमार,अंकित कुमार,प्रिंस कुमार,अयुष कुमार,सुगम कुमारी, लक्की कुमारी,काजल कुमारी, रिया कुमारी,खुशी कुमारी,मनिषा कुमारी, श्री स्वामी आत्मा विवेकानंद उच्च विद्यालय रेड़िया चेनारी से शिवम कुमार सिंह, नारायनपुर से शिवम कुमार, उच्च विद्यालय रायपुरचोर से खुशी कुमारी,उच्चतर माध्यमिक विद्यालय करगहर से मोहित कुमार,रौशन आरा,गोपालपुर करगहर से अंकिता कुमारी, श्री गंगा पासवानअनुङ्ग जाति उच्च विद्यालय कोचस से सत्यम पटेल, उत्क्रमित उच्च विद्यालय बेलवैयाँ दिनारा से अमृत कुमार सिंह,राजबली कुमार, ऊअ.श.सेमरा बिक्रमगंज से अर्पित सिंह,करन पासवान,हरिओम कुमार, मोनू यादव,नन्द किशोर,ध्रुव कुमार और अमन राज डायमंड जुबली राष्ट्रीय जंबूरी त्रिची तमिलनाडु में प्रदर्शन करेंगे।

बीपीएससी अभ्यर्थियों के मांगों के समर्थन में छात्र युवा शक्ति के द्वारा पूरे बिहार को बंद को लेकर आरा में भी किया सड़क जाम

प्रातः किरण संवाददाता

आरा । पूर्णिया सांसद राजेश रंजन उर्फ पप्पू यादव जी के अनुसार बीपीएससी अभ्यर्थियों के मांगों के समर्थन में छात्र युवा शक्ति के द्वारा पूरे बिहार को बंद कराने का आदेश प्राप्त हुआ जिसके तहत छात्र युवा शक्ति भोजपुर के द्वारा भी भोजपुर जिले के आरा शहर को बंद कराया गया। इस कार्यक्रम की अध्यक्षता कर रहे पूर्व जाप जिला अध्यक्ष आशुतोष सिंह ने बताया कि बीपीएससी अभ्यर्थी के सभी मांगे जायज है जिसमें परीक्षा का री एग्जाम एवं पेपर लीक का उच्च स्तरीय जांच महत्वपूर्ण है और उनको सरकार के द्वारा जल्द ही मान लेनी चाहिए। इस कड़ाके की ठंड में बीपीएससी अभ्यर्थी पटना के गर्दनीबाग में पिछले 20-22 दिनों से लगातार धरना प्रदर्शन कर रहे हैं लेकिन उनको सरकार लगातार अनदेखी कर रही है। युवा और छात्रों के साथ खिलवाड़ ठीक नहीं है। छात्र और युवा देश के भविष्य होते है। वही जाप नेता डॉक्टर बृजेश कुमार सिंह ने बताया कि जब तक अभ्यर्थियों की मांगे सरकार नहीं मान लेती है तब तक इस तरह की धरना प्रदर्शन, रोड जाम, बिहार बंद छात्र युवा शक्ति भोजपुर करती रहेगी । वही जाप नेता लड्डू यादव ने बताया कि इस कड़ाके की ठंड में पटना के गर्दनीबाग में धरना प्रदर्शन कर रहे हैं अभ्यर्थियों के साथ लाठी डंडे की बौछार के साथ-साथ वॉटर कैनल से पानी बरसाना कहां तक जायज है, मानवाधिकार भी इस मामले में कुछ नहीं बोल रही है। नीतीश सरकार को इसके प्रति सकारात्मक रवैया अपनाने की जरूरत है।जाप नेता संजय यादव उर्फ.नेताजी ने बताया कि पटना के गर्दनीबाग में धरना प्रदर्शन करने वाले छात्रों पर लाठी बरसाना बिल्कुल ही जायज नहीं है और वहां के सिटी एसपी को तत्काल प्रभाव से निलंबित कर दोषी पुलिस कर्मियों पर सख्त कार्रवाई करने की जरूरत है जाप छात्र नेता सुजीत कुशवाहा ने बताया कि पटना के गर्दनीबाग में बैठे अभ्यर्थियों पर जो ऐफ आइ आर की गई है उसको तुरंत वापस लेनी चाहिए यह कहीं से वाजिब नहीं है । इस कार्यक्रम में मुख्य रूप से अजय कुमार सुमन, अमरेश कुमार अर्जुन यादव, सनोज यादव, मनोज यादव, कुणाल सिंह, अभिनव सिंह, गुड्डू यादव, रवि शंकर सिंह, रंजीत कुमार पप्पू, छात्र नेता रजनीश यादव, राम तपस्या यादव एवं सैकड़ो कार्यकरता मौजूद थे।

श्री कृष्ण चेतना समिति सभागार में समाजवादी चिंतक स्वर्गीय पूर्व केंद्रीय मंत्री शरद यादव का मनाया गया पुण्यतिथि समारोह

प्रातः किरण संवाददाता

आरा (श्री कृष्ण चेतना समिति सभागार में समाजवादी चिंतक पूर्व केंद्रीय मंत्री शरद यादव जी का पुण्यतिथि समारोह प्रो बिरेन्द्र राय के अध्यक्षता में आयोजित किया गया।कार्यक्रम के संचालन यादव रामसकल सिंह भोजपुरिया ने तथा उद्घाटन जिला परिषद के पूर्व अध्यक्ष हाकिम प्रसाद ने उनके तैल चित्र पर माल्यार्पण कर किया।समारोह को सम्बोधित करते समाजवादी नेता अजय यादव ने कहा कि शरद यादव जी समाजवाद के प्रखर प्रहरी थे उन्होंने1974में पहली दफा लोकसभा के चुनाव जीते थे उसके बाद उतर प्रदेश के बूंदाऊ लोकसभा तथा बिहार के मधपुरा लोकसभा से चुनाव जीत कर अनेको बार केंद्रीय मंत्री के रूप में कार्य कर चुके हैं।प्रो विजय सिंह मुखिया ने अपने सम्बोधन में कहा कि शरद यादव जी आरक्षण के जन्मदाता थे स्वर्गीय रामविलास पासवान और शरद यादव के प्रयास से श्री वीपी सिंह जी ने7अगस्त1990में मण्डल कमीशन की घोषणा की थी।राजद के बरिष्ठ नेता महेश यादव ने कहा कि शरद यादव जी के कथनी और करनी में अंतर नही रखते थे उन्ही के दें था कि गुदड़ी के लाल श्री लालू प्रसाद यादव बिहार के मुख्यमंत्री बने थे।हाकिम प्रसाद ने कहा कि शरद यादव अकेला ब्यक्ति थे जिन्होंने महिला आरक्षण आरक्षण के लिए महिला बिल को रोक दिया था आज शरद यादव जी रहते तो बिना अनुचित जाति पिछड़ा वर्ग के महिलाओं के आरक्षण दिये बिना महिला आरक्षण बिल को पास नही होने दिये थे।

ग्राम रक्षा दल शाह पुलिस मित्र संगठन का आरा रमना मैदान में एक दिवसीय बैठक संपन्न

प्रातः किरण संवाददाता

आराः रविवार को आरा के रमना मैदान ग्राम रक्षा दल सह पुलिस मित्र बिहार संगठन का एक दिवसीय बैठक किया गया बैठक की अध्यक्षता जिला अध्यक्ष राजकिशोर प्रसाद ने किया वहीं बैठक का संचालन जिला सचिव तिवारी बाबा ने किया वहीं वहीं बैठक का नेतृत्व बिहार संगठन प्रदेश उपाध्यक्ष सह अध्यक्ष धीरज कुमार सिंह ने किया वहीं विहार प्रदेश अध्यक्ष सह उपाध्यक्ष श्री सिंह ने कहा कि बिहा ग्राम रक्षा दल सह पुलिस मित्र के सिपाही कई वर्षों से गांव में सुरक्षा प्रदान कर रहे हैं। लेकिन, सरकार द्वारा उन्हें मासिक भत्ता नहीं दिए जाने से वे भुखमरी के कगार पर आ पहुंचे हैं। बावजूद, सरकार ध्यान नहीं दे रही है। वही मीटिंग के दौरान बिहार के सभी जिलों में पुलिस मित्र सह ग्राम रक्षा दल के सिपाहियों को नियमित करने, उन्हें मासिक भत्ता देने और प्रशिक्षण प्रदान कर सरकारी सुविधा प्रदान करने की मांग की गई। साथ ही साथ साल में एक बार वर्दी आपूर्ति करने की भी मांग प्रमुख रूप से उठाई गई। वही संगठन के जिला अध्यक्ष राज किशोर प्रसाद ने कहा कि ग्राम रक्षा दल साहू पुलिस मित्र आरा जिला का जांच प्रतिवेदन बिहार सरकार के द्वारा भेजा गया है सभी सदस्यों को एक साथ बैठक का निर्देश दे दिया गया है कि अपने-अपने थाना से संपर्क कर सूची में नाम चढ़ा ले।

संक्षिप्त खबरें

योग भगाए रोग ग्रुप के सदस्यों ने कंबल वितरण किया

प्रातः किरण संवाददाता

डेहरी(रोहतास) । सामाजिक संस्था योग भगाए रोग ग्रुप के सदस्यों ने शनिदेव मंदिर रतूबिगहा, डेहरी स्टेशन परिसर और नगरपालिका बस स्टैंड परिसर में घूम घूम कर जरूरतमंदों में कम्बल वितरण किया। योग भगाए रोग ग्रुप के अध्यक्ष बबलू मधेशिया ने बताया कि ग्रुप के सदस्य शहर के गली मोहल्लों में भी गरीब और जरूरतमंदों को चिन्हित कर भोजन, कम्बल और वस्त्र का वितरण कर रहे है। मौके पर विकास कुमार, पिंटू कुमार, प्रिंस गुप्ता ,आर के सिंह, दिलीप तिवारी, इंद्र मोहन जायसवाल, अजय कुमार, चिंटू कुमार और पंकज रंजन उपस्थित रहे।

राष्ट्रीय युवा दिवस पर पौधारोपण

दिनारा(रोहतास) । दिनारा प्रखंड क्षेत्र अंतर्गत नटवार बाजार स्थित ठाकुरबाड़ी में राष्ट्रीय युवा दिवस के मौके पर हिमांशु सिंह के नेतृत्व में युव-ाओं ने दर्जनों आम व जामुन के पौधे लगाए। इस मौके पर लोगों को संबोधित करते हुए हिमांशु सिंह ने बताया कि बढ़ती जनसंख्या और घटते वन क्षेत्र से पर्यावरण की बहुत नुकसान हो रहा हैं। ऐसे में इनकी देखभाल और पर्यावरण संतुलन बनाए रखना हर व्यक्ति का परम कर्तव्य हैं। मौके पर जितेंद्र शर्मा,एच के सिंह,शिक्षक मुन्ना प्रसाद,उदय प्रकाश सिंह,मोनू कुमार,आशीष सिंह, अप्पू सिंह,बिट्टू कुमार सहित अन्य लोग उपस्थित रहे ।

अवैध रूप से विद्युत जलाते हुए 6 लोगों पर प्राथमिकी दर्ज

आदापुर। अवैध रूप से बिजली जलाते पकड़े जाने पर विद्युत विभाग ने छह लोगों के विरुद्ध एफआईआर दर्ज कराया है। इसको लेकर विद्युत जेई प्रीतम कुमार बंटी ने आदापुर एवं हरपुर थाना में अलग-अलग प्राथमिकी दर्ज कराया है। इस संदर्भ में विद्युत जेई ने कचरबारी गांव निवासी इकबाल ठाकुर, मुकेश पटेल, प्रमोद पटेल व विश्वनाथ ठाकुर के विरुद्ध हरपुर थाना में बतौर जुमार्ना क्रमशः साढ़े अठारह हजार, नौ हजार, अठारह हजार तथा सत्रह हजार क्षति पूर्ति होने का जुमार्ना लगाया गया है। वहीं श्यामपुर बाजार निवासी आकाश कुमार पटेल एवं शिवम कुमार के विरुद्ध अठारह आठ उन्नीस हजार रुपए का जुमार्ना ठोकते हुए आदापुर थाना में प्राथमिकी दर्ज कराया गया है। विद्युत विभाग के इस कार्रवाई से चोरी की बिजली जलाने वालों में हड़कंप व्याप्त है।

राम मंदिर के प्रथम वर्षगांठ पर जिले के कई स्थानों पर हिन्दू जागरण मंच द्वारा हुई भव्य महाआरती

प्रातः किरण संवाददाता

गौड़ना। रोड स्थित बाबा नागेश्वर नाथ महादेव मंदिर प्रांगण में हिंदू पंचांग के अनुसार 11 जनवरी 2025 शनिवार को संध्या 5 बजे से श्री राम मंदिर के प्रथम वर्षगांठ के शुभ अवसर पर हिन्दू जागरण मंच द्वारा संपन्न हुई भव्य महाआरती। यह रामलाल की महाआरती बनारस के मुख्य अर्चक द्वारा कराए गई ओर साथ ही पुष्प वर्षा भी हुई। आरती के दौरान हजारों हजार के संख्या में श्रद्धालु सम्मिलित हुए और हर हर महादेव,जय श्री राम के नारे लगाए। इसके साथ में हिंदू जागरण मंच द्वारा अगिआंव प्रखंड के पावना गांव में भी भव्य महाआरती हुआ, यह आरती हिन्दू जागरण मंच अगिआंव प्रखंड के संयोजक दीपक जी के नेतृत्य में हुआ। इसी क्रम में आरा के रामगढ़िया मोरे पर भी गाजे बजे के साथ राम लाला के भव्य महाआरती कराई गई साथ में प्रसाद वितरण भी हुआ जिसमें स्थानीय लोगों ने बढ़ चढ़ के साथ दिया। महाआरती में हिन्दू जागरण मंच के सैकड़ों कार्यकर्ता उपस्थित रहे।

स्वामी विवेकानंद जयंती पर अभाविप ने विद्यार्थियों को किया सम्मानित

प्रातः किरण संवाददाता

अंकोढीगोला (रोहतास) स्वामी विवेकानंद जयंती पर रविवार को अखिल भारतीय विद्यार्थी परिषद ने शीला वाटिका में प्रतिभाशील प्रतियोगिता सम्मान समारोह का आयोजन नगर अध्यक्ष गौतम कुमार के अध्यक्षता में कार्यक्रम का उद्घाटन दीप प्रज्वलित कर किया गया।

कार्यक्रम के अतिथि डॉ. आशुतोष कुमार प्रांत प्रमुख अग्रविजीन अभाविप ने विद्यार्थी परिषद के कार्यशैली पर चर्चा करते हुए विवेकानंद के विचारों से छात्र छात्राओं को अवगत कराया। जबकि मुख्य वक्ता के रूप में उपस्थित छात्र नेता यश उपाध्याय ने विद्यार्थी परिषद की राष्ट्रपुरनिर्माण में भूमिका पर प्रकाश डाला। साथ ही बताया कि स्वामी विवेकानंद जैसे सपूत सदियों में एक बार इस धरा पर अवतरित होते है। अगर भारत को जानना है तो सबसे पहले लोगों को विवेकानंद को जानना चाहिए। अवसर पर मेडिविजिन के रोहित सिंह ने भी विद्यार्थियों को संबोधित किया। कार्यक्रम के अंत में प्रतियोगिता में प्रथम स्थान प्राप्त करने वाले भानु कुमार,द्वितीय स्थान प्राप्त करने राहुल कुमार, लक्की कुमार, सागर कुमार सहित अमृता कुमारी तथा शिवम कुमार को मोमेंटो व मेडल से सम्मानित किया गया। मौके पर सोनू सिंह, सूरज सोनी,अयान खान,पुष्पा कुमारी, संतोष कुमार , नगर मंत्री आदित्य कुमार , सूरज गुप्ता , कृष्णा सोनी, हेमंत कुमार, शिवम कुमार ,सुमित कुमार ,अभिजीत कुमार सहित अन्य कार्यकताओं उपस्थित थें।

मसीही समाज के लोगो ने द होली सेवियर चर्च रमना आरा मे सांसद सुदामा प्रसाद का किया अभिनदन समारोह

प्रातः किरण संवाददाता

आरा,। मसीही समाज के लोगो ने द होली सेवियर चर्च रमना आरा मे माननीय वर्तमान सांसद सुदामा प्रसाद जी का हार्दिक अभिनदन करते हुये चर्च सौन्दर्यीकरण की मांग रखा।द होली सेवियर चर्च आरा का ऐतिहासिक चर्च मे मसीही समाज के लोगो ने फुल माला,बुके और शौल देकर माननीय सांसद आरा कॉ सुदामा प्रसाद जी का भव्य स्वागत किया।अभिनदन समारोह का संचालन सीता राम रवि (राज्य निर्देशक)ने किया स्वागत मेथोडिसट चर्च सेकेट्री चन्दन प्रसाद और द होली सेवियर चर्च रमना सेकेट्री आर पी किरन,पादरी राजेश ,सोनू, रामजी राकेश मसीह, जगजीवन , काशीनाथ ने माला पहनाकर किया पादरी अनिल जीउत ने बुके और बाईबिल देकर किया ।आर पी किरन ने चर्च की समस्याओ से सासंद को अवगत कराया और मसीही समाज ने चर्च सौन्दर्यीकरण से सम्बंधित आवेदन दिया पादरी अनिल जीउत ने अपने सम्बोधन मे बताया चर्च एक आरा का ऐतिहासिक स्थान है इसका सौन्दर्यीकरण होना चाहिए और चारदिवारी की मरम्मत और चकमक बिजली व्यवस्था के साथ सड़क ,पेयजल ,बैठने की उचित व्यवस्था सांसद फण्ड से किया जाय।चर्च एक शान्तिपूर्ण स्थान होता है सांसद माननीय कॉ सुदामा प्रसाद ने बताया चर्च की मागे जायज है आरा के विकास मे इसका ध्यान रखा जायेगा,कब्रिस्तान की चारदीवारी और चर्च को असमाजिक लोगो से मुक्त कराने के लिए हम सभी संगठित होकर लडेगे।मुझे चर्च मे बहुत अच्छा लगा की मसीही समाज ने याद किया हम अभारी है पादरी अनिल जीउत ,सीताराम रवि,चन्दन प्रसाद, काशीनाथ, सोनू,राजेश,राजेन्द्र प्रसाद, एनोरिन साईमन ,राकेश मसीह, जगजीवन प्रकाश ,निर्मला आदि थे।

श्रीराम मंदिर प्राण प्रतिष्ठा वार्षिकोत्सव को यादगार बनाने के लिए होगा सुमङ्गल कार्यक्रम

- कार्यक्रम में आकर्षण का केंद्र होगा 121 शंखध्वनि एवं हजारों के साथ एकसाथ सुंदरकांड पाठ

प्रातः किरण संवाददाता

आरा। भारतीय सभ्यता एवं सम्मान का प्रतीक श्री राम मंदिर प्राण प्रतिष्ठा वार्षिकोत्सव समारोह को लेकर 22 जनवरी को आयोजित होने वाले सुमङ्गल कार्यक्रम के लिए शहर के धर्मावलम्बियों , बुद्धिजिवियो एवं सनातन धर्म के प्रहरियों की बैठक बड़ी मठिया में आयोजन समिति के अध्यक्ष डॉ पी सिंह सर्जन की अध्यक्षता में सम्पन्न हुआ। जिसका संचालन यशवन्त नारायण ने किया। बैठक का शुभारंभ जय श्री राम के उद्घोष से हुआ। बैठक में आयोजन को लेकर उपस्थित सदस्यों के बीच कई बिंदुओं पर चर्चा हुआ। कार्यक्रम की रूपरेखा प्रस्तुत करते हुए अभय विश्वास भट्ट ने कहा कि कार्यक्रम में 121 ब्राह्मणों के द्वारा शंखध्वनि के साथ किया जाएगा तथा उपस्थित सदस्यों द्वारा मंगलाचरण एवं सुंदरकांड पाठ का आयोजन होगा।

वही कार्यक्रम में उपस्थित मनोज सिंह शिक्षाविद ने कार्यक्रम को सुंदर एवं आकर्षक बनाने के लिए भजन का भी कार्यक्रम करने का सुझाव दिया।

कार्यक्रम में उपस्थित शिक्षाविद अर्चना सिंह ने इस मौके को यादगार बनाने के लिए झांकी का प्रस्ताव रखा।

वही मुखिया राकेश सिंह ने महिलाओं की भागीदारी ज्यादा से ज्यादा हो इसके लिए महिला संगठनो को जोड़ने का सुझाव दिया। वही शम्भू प्रसाद चौरसिया ने प्रचार प्रसार पर जोर दिया। युवा समाजसेवी सुनील पाठक ने युवा वर्ग को जोड़ने एवं शोशल मीडिया से प्रचार प्रसार पर जोर दिया। कार्यक्रम में उपस्थित सदस्यों के सुझाव पर निर्णय लिया गया कि शंखध्वनि के साथ एक ही समय पर उपस्थित सभी लोगो के साथ सुंदर कांड पाठ करने का निर्णय लिया गया। जिसका समय अगली बैठक में निर्धारित करने का निर्णय हुआ।

प्रखंड मुख्यालय गड़हनी में स्वच्छता कर्मियों का समीक्षा बैठक आयोजित

प्रातः किरण संवाददाता

गड़हनी(भोजपुर)। बिहार प्रदेश स्वच्छता पर्यवेक्षक व स्वच्छता कर्मी संघह्न के जिला इकाई के बैनर तले गड़हनी प्रखंड के स्वच्छता पर्यवेक्षक व स्वच्छता कर्मी संघ का एक दिवसीय समीक्षात्मक बैठक रविवार को प्रखंड मुख्यालय परिसर में किया गया है।

बैठक का मुख्य उदेश्य स्वच्छता पर्यवेक्षक एवं स्वच्छता कर्मी पूरी लगन से स्वच्छता का कार्य करते आ रहे हैं लेकिन बारह माह के बाद भी इन लोगों का तय मानदेय स-समय नहीं मिल रहा है, जिससे इनके भरण पोषण में काफी समस्या का सामना करना पड़ रहा है।

जितना कार्य स्वच्छता कर्मियों स्वच्छता पर्यवेक्षक कर रहे हैं उसके तुलना में मानदेय काफी कम है फिर भी बकाया मानदेय से असंतुष्ट स्वच्छता कर्मी को जागरूक किया गया कि वर्ष 2025 माह जनवरी से सभी कर्मी को मानदेय रेगुलर मिलेगा।इसलिए सभी कर्मी को स्वच्छता से सबंधित कार्य को और बेहतर तरीके से कार्य करने के लिए प्रेरित किया गया।

सरकार से हम सभी आग्रह करते है कि स्वच्छता पर्यवेक्षको के कार्य को देखते हुए मानदेय बाजार द के हिसाब से समकक्ष पद के वेतन अनुसार सम्मान जनक मानदेय बीस हजार बढ़ाया जाय,एवं स्वच्छता कर्मी का उचित मानदेय दस हजार तक किया जाए। ताकि सभी कर्मी और पर्यवेक्षको का सपरिवार का भरण पोषण अच्छा से हो सके।मौके पर प्रखंड अध्यक्ष नंद बिहारी पांडे स्वच्छता पर्यवेक्षक आजाद कुमार गुप्ता ,गौरव कुमार मिश्रा,मिथिलेश कुमार सिंह,खुशी लाल कुमार गुप्ता, सुशील कुमार सुमित कुमार सिंह

व्यवसायी संघ गड़हनी ने कोर कमिटी के संघ किया बैठक

16 जनवरी को होगा सभी दुकानदारों के साथ आम बैठक,लिया जाएगा कई निर्णय

प्रातः किरण संवाददाता

गड़हनी(भोजपुर)।भोजपुर जिले के नगर पंचायत गड़हनी के नया बाजार स्थित राम जानकी ठाकुरबाड़ी में रविवार के दोपहर व्यवसायी संघ गड़हनी के बैनर तले एक बैठक का आयोजन किया गया।बैठक की अध्यक्षता निर्मल कुशवाहा एवं संचालन व्यवसायी संघ के प्रखंड अध्यक्ष श्री निवास यादव ने किया।यह बैठक व्यवसायी संघ के कोर कमिटी के साथ किया गया।बैठक को संचालित करते हुए अध्यक्ष श्री निवास यादव ने कहा कि आए दिन दुकानदारों पर हो रहे अत्याचार ,रंगदारी, चोरी एवं आगलगी के घटनाएं होते रह रहा हैं,दुकान पर किसी तरह की क्षति होने पर दुकानदार पर बोझ हो जा रहा हैं कैसे समाधान हो ।

इस विषय पर विचार करने की आवश्यकता हैं।वही बैठक में उपस्थित सभी कोर कमिटी के सदस्यों ने सभी दुकानदारों को सूचित कर एक आम बैठक आयोजित करने की बात कही।इसके सर्वसम्मति से निर्णय लिया गया कि आगामी 16 जनवरी दिन वृहस्पतिवार को समय 10 बजे दिन में स्थान सब्जी मंडी के राम जानकी ठाकुरबाड़ी गड़हनी

सुनिश्चित किया गया।बैठक में ज्यादा से ज्यादा दुकानदार पहुंचे उसके लिए गड़हनी के दुकानदारों को सूचना देने की जिम्मेदारी गड़हनी सहिला पुल से गोला बनास नदी पुल तक संघ के सचिव शाहिन रजा एवं बनास नदी पुल नया बाजार से अगिआंव मोड़ स्टेशन तक अनिश सिंह एवं गड़हनी पुरानी बाजार में बंटी राठौर को दिया गया।सभी जिम्मेदार सदस्यों से कहा गया कि दुकानदार जैसे जुटे उन्हें जगाइए लाउडस्पीकर घुमवाइए ,रजिस्टर पर हस्ताक्षर कराइए।मौके पर प्रमोद गुप्ता, संतोष गुप्ता,नीरज गुप्ता,ओमप्रकाश गुप्ता,रामबाबू गुप्ता,सोनू कुमार,बिड्डू गुप्ता,रवि गुप्ता, ओमप्रकाश केशरी,बंटी राठौर,अनीश सिंह,नितेश सिंह,पंकज सिंह,संजय गुप्ता,राजेश गुप्ता,सुरेश केशरी समेत कई अन्य उपस्थित थे।

जयंती पर स्वास्थ्य जांच शिविर का आयोजन

बिक्रमगंज (रोहतास) (स्वामी विवेकानंद की जयंती पर रविवार को शहर के विभिन्न जगहों पर राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ की सेवा भारती दक्षिण बिहार प्रांत द्वारा स्वास्थ्य शिविर का आयोजन किया गया। आयोजित स्वास्थ्य शिविर में मेडिकल कॉलेज जमुहार सासाराम के चिकित्सकों की टीम द्वारा लोगों का स्वास्थ्य जांच करते हुए निशुल्क दवा वितरण किया गया। धारूपुर में डॉ अमित की टीम 35, तेंदूनी में डॉ सोनम की टीम ने 50, धनगाई में डॉ पंकज की टीम ने 52 एवं सिकरिया में डॉ विवेक की टीम ने 90 लोगों का स्वास्थ्य जांच कर उचित परामर्श के साथ उपलब्ध दवा का वितरण किया। चिकित्सकों के टीम की व्यवस्था नगर कार्यवाह ओम नारायण, सेवा प्रमुख अनिल, नगर बौद्धिक शिक्षण प्रमुख दिनेश, नगर श्रमिक कार्य प्रमुख अमर देव, जिला व्यवस्था प्रमुख धीरेंद्र, भाजपा नगर अध्यक्ष नागेश्वर कुशवाहा एवं रवि पांडे द्वारा किया गया।

स्कैम के खिलाफ आम आदमी की जंग है आर. माधवन की फिल्म 'हिसाब बराबर'

फिल्म 'हिसाब बराबर' के ट्रेलर में आर. माधवन एक ईमानदार आम आदमी के रोल में नजर आ रहे हैं। वह राधे मोहन शर्मा का किरदार निभा रहे हैं। राधे हिसाब का पक्का आदमी है, साथ ही जिद्दी भी है। आगे चलकर उसे एक बड़े फाइनेंशियल स्कैम का पता चलता है। अब वह स्कैम करने वालों से कैसे निपटता है, यही फिल्म की कहानी है।

ओटीटी पर होगा प्रीमियर

आर. माधवन की फिल्म 'हिसाब बराबर' का प्रीमियर 24 जनवरी को जी5 पर होगा। यह फिल्म हिंदी के अलावा तमिल, तेलुगू भाषा में भी दर्शकों को देखने को मिलेगी। फिल्म को अश्विनी धीर ने निर्देशित किया है। फिल्म के हालिया रिलीज ट्रेलर में नजर आता है कि आर माधवन के किरदार राधे मोहन शर्मा को करोड़ों के स्कैम का पता चलता है, स्कैम करने वालों के खिलाफ आवाज उठाने पर उसे बुरे परिणाम भुगतने पड़ते हैं। राधे को ही जेल जाना पड़ता है, उसका घर तोड़ दिया जाता है। लेकिन राधे यानी आर माधवन का किरदार हार नहीं मानता है और स्कैम करने वालों से जंग करने को तैयार हो जाता है।

सुनाई दिए दमदार डायलॉग

'हिसाब बराबर' के ट्रेलर में कई दमदार डायलॉग भी सुनाई दिए। जिनमें से एक डायलॉग आर माधवन का किरदार राधे कहता है- 'ये नया इंडिया है सर जी, छोड़ेगा नहीं, सबका करेगा हिसाब बराबर।' साथ ही फिल्म में कॉमेडी सींस भी मजेदार हैं, कॉमिक अंदाज में ही सोशल मैसेज दिया जा रहा है।

ये कलाकार भी आएंगे नजर

फिल्म 'हिसाब बराबर' में आर. माधवन के अलावा नील नीतिन मुकेश भी हैं, वह इसमें स्कैम करने वाले शख्स के रोल में हैं। साथ ही कीर्ति कुल्हारी पुलिस ऑफिसर के रोल में दिख रही हैं। इनके अलावा टीवी एक्ट्रेस रश्मि देसाई भी फिल्म में दिखी हैं। रश्मि फिल्म में आर. माधवन की पड़ोसी के रोल में नजर आ रही हैं।

इरफान खान की अंग्रेजी मीडियम में काम करना चाहती थीं अनन्या फिर क्यों हाथ से छूटी फिल्म?

अनन्या पांडे अपनी प्रोफेशनल लाइफ के अलावा अपनी निजी जिंदगी को लेकर काफी चर्चा में रहती हैं। अनन्या अपनी फिल्मों का चुनाव भी काफी अलग करती हैं। अभिनेत्री का कहना है कि वह किसी भी फिल्म की स्क्रिप्ट पर फोकस करती हैं और कंटेंट को ही तवज्जो देती हैं। अब हाल ही में, अनन्या ने बताया है कि उन्होंने इरफान खान की फिल्म अंग्रेजी मीडियम के लिए ऑडिशन दिया था, लेकिन उन्हें यह भूमिका नहीं मिली। आइए जानते हैं क्यों?

ऑडिशन नहीं कर पाईं पास

हाल ही में फिल्मफेयर के साथ एक इंटरव्यू में अनन्या से पूछा गया कि वह किस फिल्म का हिस्सा बनना चाहती थीं? इस पर अभिनेत्री ने खुलासा किया कि वह इरफान खान की अंग्रेजी मीडियम फिल्म का हिस्सा बनना चाहती थीं और फिल्म को लेकर काफी उत्साहित थीं। हालांकि, वह ऑडिशन पास नहीं कर पाईं और इस भूमिका से हाथ धो बैठीं।

राधिका मदान और इरफान खान की अंग्रेजी मीडियम साल 2020 में रिलीज हुई थी। इस कॉमेडी-ड्रामा फिल्म का निर्देशन होमी अदजानिया ने किया था। यह साल 2017 की फिल्म हिंदी मीडियम की ही अगली कड़ी थी। फिल्म में इरफान खान ने मिठाई की दुकान के मालिक चंपक बंसल की भूमिका निभाई थी, जो अपनी बेटी को लंदन में पढ़ाने का प्रयास करता है। हालांकि, वह बेटी के विदेश जाने के पक्ष में नहीं होता है।

डेटिंग अफवाहों को लेकर बटोरीं सुर्खियां

बात करें अनन्या पांडे की तो पिछले साल अनन्या पांडे ने पूर्व मॉडल वॉकर ब्लैंको के साथ अपने कथित संबंधों को लेकर सुर्खियां बटोरी थीं। अनंत अंबानी और राधिका मर्चेंट की शादी में साथ देखे जाने के बाद इस जोड़ी ने डेटिंग की अफवाहों को हवा दी।

इस प्रोजेक्ट का हिस्सा हैं अनन्या

वर्कफ्रंट की बात करें तो अनन्या आखिरी बार कंट्रोल में नजर आई थीं। वह लक्ष्य के साथ चांद मेरा दिल पर भी काम कर रही हैं , जिसका पहला पोस्टर हाल ही में रिलीज हुआ है। करण जौहर की धर्मा प्रोडक्शंस इस फिल्म का निर्माण कर रही है।

केसरी वीर के लिए सुनील शेट्टी ने सीखी घुड़सवारी तलवारबाजी!

फिल्म निर्माता कनु चौहान एक गुजराती योद्धा पर फिल्म बनाने की तैयारी कर रहे हैं, जिसने 14वीं शताब्दी में सोमनाथ मंदिर को घुसपैठियों से बचाने के लिए लड़ाई लड़ी थी। उनकी फिल्म का नाम केसरी वीर है, जिसमें सुनील शेट्टी, सूरज पंचोली और विवेक ओबेरॉय मुख्य भूमिका में हैं। निर्देशक ने इस फिल्म को बनाने को लेकर उत्साह जाहिर किया है। उन्होंने बताया कि केसरी वीर की कहानी उनके दिल के बहुत करीब है। इस फिल्म में, सुनील कथित तौर पर 14वीं शताब्दी के शासक की भूमिका निभाते नजर आएंगे। इसके लिए अभिनेता को घुड़सवारी और बहुत कुछ सीखना पड़ा।

फिल्म के सुनील शेट्टी की तैयारी

सुनील शेट्टी द्रोण के शासक राजा वेगडाजी भील की भूमिका निभा सकते हैं। रिपोर्ट्स के अनुसार, सुनील शेट्टी केसरी वीर में एक अनूठा लुक अपनाएंगे। बताया गया कि सुनील को घुड़सवारी के अपने कौशल को निखारना पड़ा और उस समय के हथियार, जैसे स्वनिर्मित भाले, गोफन, कुल्हाड़ी, धनुष-बाण, चाकू और तलवारें सीखनी पड़ीं। उन्होंने तीरंदाजी भी सीखी, क्योंकि भील इसमें कुशल थे। साथ ही उन्होंने गुरिल्ला युद्ध भी सीखा। फिल्म में उनका लुक अनोखा है और वे पगड़ी, अंगरखा और धोती पहने हुए हैं व मूंछें रखे हुए हैं।

सूरज पंचोली का किरदार

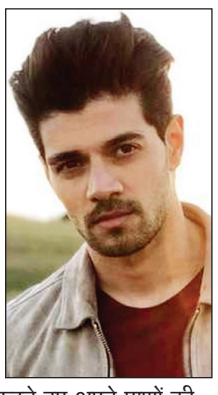

रिपोर्ट्स के अनुसार, फिल्म में कई एक्शन सीक्वेंस हैं, जिन्हें साउथ के एक्शन डायरेक्टर केविन कुमार ने डिजाइन किया है। वहीं कॉस्ट्यूम्स चंद्रकांत सोनवणे ने तैयार किए हैं। केसरी वीर में सूरज 16 वर्षीय वीर हमीरजी गोहिल का किरदार निभाएंगे, जिन्होंने दिल्ली सल्तनत के शासक अलाउद्दीन खिलजी के सेनापति जफर खान के आक्रमण से मंदिर की रक्षा करते हुए अपने प्राणों की आहुति दे दी थी। वीर वेगदाजी के साथ मिलकर मुगल बादशाह से 10 दिनों की लड़ाई लड़े थे।

फिल्म का बजट और शूटिंग

केसरी वीर का निर्देशन कर रहे कनु ने हाल ही में बताया कि उन्होंने उस दौर के माहौल को फिर से जीवंत करने में कोई कसर नहीं छोड़ी है। उन्होंने बताया, हमने इस फिल्म पर 60 करोड़ रुपये से ज्यादा खर्च किए हैं और 23 नवंबर से मुंबई और गुजरात में लगातार 120 दिनों के शेड्यूल में इसकी शूटिंग की है। पोस्ट-प्रोडक्शन का काम अभी चल रहा है और हम इस महीने तक मोशन पोस्टर रिलीज करने की योजना बना रहे हैं।

एटली की अगली फिल्म में दिख सकते हैं शाहिद

साउथ की फिल्मों के जाने-माने निर्देशक एटली पिछले कुछ दिनों से लगातार चर्चा में हैं। उन्होंने पिछली बार फिल्म बेबी जॉन बनाई। यह उनकी हिट फिल्म थेरी का हिंदी रीमेक थी। हालांकि, फिल्म के हिंदी वर्जन में वरुण धवन नजर आए, जिन्हें दर्शकों ने बुरी तरह नकार दिया। अब एटली एक्टर शाहिद कपूर के साथ फिल्म बनाने की तैयारी कर रहे हैं। रिपोर्ट्स के मुताबिक... शाहिद पिछले 5 महीनों से एटली संग मुलाकात कर रहे हैं। वो एटली की एक मसालेदार फिल्म पर उनसे चर्चा कर रहे हैं, जिसका निर्देशन एटली के ही एक सहयोगी करने वाले हैं। एटली फिल्म के निर्माता होंगे। शाहिद को फिल्म की स्क्रिप्ट के साथ- साथ इसमें अपना किरदार भी बेहद पसंद आया है। यह फिल्म किसी भी दक्षिण भारतीय फिल्म की नकल नहीं होगी। एटली अब बेबी जॉन वाली गलती फिर नहीं दोहराना चाहते हैं। एटली ने खुद इस बार टीम के साथ मिलकर फिल्म की स्क्रिप्ट तैयार की है। यह एक ओरिजनल एक्शन फिल्म होगी। एटली को पूरा भरोसा है कि शाहिद उनकी इस फिल्म के लिए सबसे बेहतर होंगे। उनकी टीम अभी बहुत तेजी से इस प्रोजेक्ट पर काम कर रही है। यह बड़े बजट की फिल्म होने वाली है, जिसमें शाहिद का पहले कभी न देखा गया अवतार देखने को मिलेगा। फिल्म में उनके कई एक्शन सीक्वेंस होंगे।

नेगेटिव किरदार नए प्रयोग करने की स्वतंत्रता देते हैं

टीवी शो 'दीवानियत' में अलीशा का किरदार निभाने वाली अभिनेत्री रेवा कौरसे ने बताया कि नकारात्मक भूमिकाएं आपको प्रयोग करने की स्वतंत्रता देती हैं, जो आमतौर पर सकारात्मक किरदारों में नहीं होती। रेवा ने कहा, एक कलाकार के तौर पर अलीशा का किरदार निभाना मेरे लिए एक रोमांचक अनुभव रहा है। वह कई परतों वाली एक जटिल भूमिका है और उसके डार्क पक्ष को तलाशना चुनौतीपूर्ण और फायदेमंद दोनों रहा। अभिनेत्री ने कहा, नकारात्मक भूमिकाएं आपको भावनाओं के साथ प्रयोग करने की स्वतंत्रता देती हैं, जो आमतौर पर सकारात्मक किरदारों में नहीं होती। बता दें, दीवानियत की मौजूदा कहानी में रेवा अलीशा का किरदार निभा रही हैं। धारावाहिक को काफी पसंद किया जा रहा है। कई ट्विस्ट कहानी में आ रहे हैं। ताजा एपिसोड में अलीशा का देव (मुख्य किरदार) के प्रति जुनून हताशा में बदलता दिख रहा है। देव और मन्नत के बीच के बंधन को स्वीकार करने में असमर्थ अलीशा देव का प्यार जीतने की चाह में जोड़े के बीच दरार पैदा करने की ठान लेती है। अभिनेत्री ने कहा, मैंने अलीशा के किरदार के साथ बहुत कुछ सीखा है और इससे एक कलाकार के रूप में मेरे में काफी निखार आया। मैं दर्शकों की जबरदस्त प्रतिक्रिया के लिए आभारी हूं और उम्मीद करती हूं कि कहानी के आगे बढ़ने के साथ-साथ वे शो को समर्थन देते रहेंगे। देव के प्रति अलीशा का जुनून एक गहरी भावनात्मक उथल-पुथल से उपजा है और मैं उसकी यात्रा को पूरी ईमानदारी से निभा रही हूं। 'दीवानियत' की कहानी जीत और मन्नत के इर्द-गिर्द घूमती है, जिनके बीच प्रेम का रिश्ता है मगर उनके परिवारों के बीच झगड़ा या आपसी मनमुटाव है। दीवानियत का प्रीमियर 11 नवंबर 2024 को स्टार प्लस पर हुआ था। यह डिज्नी प्लस हॉटस्टार पर स्ट्रीम हो रही है। इस सीरीज में कृतिका सिंह यादव, विजयेंद्र कुमेरिया और नवनीत मलिक मुख्य भूमिका में हैं। यह तमिल सीरीज 'ईरामना रोजवे' का हिंदी रीमेक है। रेवा को प्यार का पहला अध्याय शिव शक्ति में निभाए किरदार के लिए भी जाना जाता है।

फिल्म गेम चेंजर में अपने रोल को लेकर बोलीं अंजलि

साउथ एक्ट्रेस अंजलि ने फिल्म गेम चेंजर में पार्वती की भूमिका निभाई है। अंजलि ने तमिल, तेलुगु, मलयालम और कन्नड़ फिल्मों में भी काम किया है। फिल्म गेम चेंजर की रिलीज से पहले एक्ट्रेस ने दैनिक भास्कर से बात की है। उन्होंने बताया कि 18 साल के करियर में फिल्म गेम चेंजर की पार्वती का रोल सबसे चैलेंजिंग रहा।

इस संक्रांति पर आपकी दो फिल्में रिलीज हो रही हैं। किस तरह खुशी बयां करेंगी?

बहुत खुशी महसूस हो रही है। मुझे अभी अपनी दूसरी फिल्म की रिलीज के बारे में भी पता चला। संक्रांति किसी भी कलाकार के लिए एक बड़ा त्योहार है। मैंने इन दोनों फिल्मों में राम चरण और विशाल जैसे बड़े कलाकारों के साथ अभिनय किया है। दोनों ही फिल्मों को अच्छा रिस्पॉन्स मिला। मैं लोगों के फिल्म देखने का इंतजार कर रही हूं। 'गेम चेंजर' की कहानी जब मुझे सुनाई गई तो बताया गया कि मेरे किरदार का नाम पार्वती है। मेरी मां का नाम पार्वती देवी है। 'गेम चेंजर' मेरे करियर की खास फिल्म है और इसके लिए मैंने काफी मेहनत की है।

फिल्म को करते समय आपको किन चुनौतियों का सामना करना पड़ा?

मैंने सोचा था कि मैं अपनी एक्टिंग के लिए अवॉर्ड हासिल करूंगी। अब मुझे खुशी है कि फिल्म देखने वाली ऑडियंस भी ऐसा ही मान रही है। आशा करती हूं कि सब बढ़िया हो। चुनौतियों की बात करें तो, इस फिल्म की शूटिंग के दौरान मुझे कई चुनौतियों का सामना करना पड़ा। आमतौर पर हम ज्यादातर समय अपने वास्तविक अनुभवों के अनुसार कार्य करते हैं। पार्वती की बात करें तो इस किरदार के कई शेड्स हैं। पार्वती जिन चीजों से गुजरती है उनमें से कुछ का अनुभव मैंने अपने जीवन में नहीं किया। इसलिए, मुझे उन पर कड़ी मेहनत करनी पड़ी।

फिल्म में अपन्ना के किरदार को लेकर काफी चर्चा है। उसके साथ आपके किरदार की जर्नी क्या होगी?

मैं फिल्म में राम चरण के एक किरदार अप्पन्ना की पत्नी की भूमिका में हूं। उनके साथ मेरी बॉन्डिंग को बहुत खूबसूरती से दिखाया गया है। इससे भी अधिक इन किरदारों के बारे में कई आश्चर्य हैं जो ट्रेलर में नहीं दिखाए गए हैं। उन्हें सिनेमाघरों में अनुभव किया जाना चाहिए लेकिन मैं कह सकती हूं कि अप्पन्ना और पार्वती के बीच का बंधन ही फिल्म का मूल होगा।

राम चरण के साथ फिल्म में आपके सीन कैसे होंगे। स्क्रीन पर क्या केमिस्ट्री बनी है?

राम चरण बेस्ट को-एक्टर हैं। मेरा मानना है कि अगर मेरा को-एक्टर सकारात्मक ऊर्जा और उत्साह देता है तो मैं अपना बेस्ट दे पाऊंगी। राम बहुत शांत स्वभाव के हैं और दिल के बहुत अच्छे हैं। वह सेट पर लाइटमैन से लेकर निर्देशक तक सभी का सम्मान करते हैं।

तेलुगु एक्ट्रेसेस में आपको शंकर और राम चरण जैसी बड़ी हस्तियों के साथ काम करने का मौका मिला। क्या कहेंगी?

मैं न केवल अपने लिए बल्कि सभी तेलुगु एक्ट्रेसेस के लिए बेहद गर्व और खुशी महसूस करती हूं। खुद पर विश्वास रखें और कड़ी मेहनत करते रहें। हमेशा एक मार्ग होता है जो आपको पार करा सकता है। मैं अपनी पसंद की स्क्रिप्ट पर विश्वास करती हूं। 'गेम चेंजर' भी मुझे स्क्रिप्ट सुनते ही पसंद आई और मैंने तुरंत इस पर हस्ताक्षर कर दिए।

हर अभिनेता का एक ड्रीम रोल होता है। क्या 'गेम चेंजर' की पार्वती आपके लिए ऐसी ही एक भूमिका है?

मैंने कभी ड्रीम रोल नहीं निभाए लेकिन अगर मैंने कभी कोई ड्रीम रोल निभाई होती तो मैं 'गेम चेंजर' में पार्वती जैसी भूमिका का सपना देखती।

अरुगु मीदा गाना स्क्रीन पर कैसा होगा?

यह अविश्वसनीय होगा। दर्शकों को गाना पसंद आएगा। इसके विजुअल भी ऑडियंस को काफी पसंद आएंगे।

आपने पवन कल्याण और राम चरण के साथ काम किया है। चिरंजीवी के साथ कब फिल्म कर रही हैं?

जब मैं चिरंजीवी से मिलूंगी तो उनसे पूछूंगी। मुझे लगता है कि अब समय आ गया है।

आपने और राम चरण ने अपनी उम्र से ज्यादा के किरदार निभाए?

दरअसल, हम दोनों को अपने किरदार बेहद पसंद थे। चरण को अप्पन्ना का किरदार बहुत पसंद आया। हमारे बीच बहुत अच्छा तालमेल था और मुझे वह जगह देने का पूरा श्रेय चरण को जाता है। सिनेमाघरों में हमारी एक्टिंग देखकर आपको भी ऐसा ही महसूस होगा। लुक टेस्ट के तुरंत बाद मुझे लगा कि यह नया है। मैंने जो अधिकांश भूमिका की वे लड़की-नेक्स्ट-डोर भूमिका या बिना मेकअप वाली भूमिकाएं थीं। इस फिल्म के लिए मैं 90 के दशक की महिलाओं की तरह बिंदी लगाती हूं और हल्दी लगाती हूं।

1000 पर जाएगा टाटा ग्रुप का शेयर

नईदिल्ली, एजेंसी। अगर आप टाटा ग्रुप के किसी शेयर पर दांव लगाने की सोच रहे हैं तो आपके लिए काम की खबर है। टाटा ग्रुप के एक शेयर पर मार्केट एक्सपर्ट बुलिश हैं और इसमें दांव लगाने की सिफारिश कर रहे हैं। यह शेयर- द इंडियन होटल्स कंपनी लिमिटेड का है। कंपनी के शेयर पर प्रमुख ब्रोकरेज फर्म जेफरीज ने खरीदने की सलाह दी है और 1000 रुपये का टारगेट प्राइस दिया है।

86,400 करोड़ की रकम दांव पर

नईदिल्ली, एजेंसी। पंजाब में जुआ का खेल तेजी से पांव पसार रहा है। हाल ही में जारी एएमएफआई के आंकड़ों से पता चलता है कि पंजाबी म्यूचुअल फंड में बड़ी संख्या में पैसा लगा रहे हैं, जिसे आम भाषा में जुआ का खेल भी कहा जा सकता है। आंकड़ों के अनुसार, पंजाब में कुल 86,400 करोड़ रुपये की म्यूचुअल फंड परिसंपत्तियां हैं, जो राज्य की कुल आबादी के लिए एक बड़ी राशि है।

संक्षिप्त समाचार

इंदौर के कलाकारों को मिलेगा मौक़ा

इंदौर, एजेंसी। मालवा की पहली रोमांटिक फिल्म थारो म्हारो प्रेम की शूटिंग जल्दी ही उज्जैन ,इंदौर, मंदसौर ,धार , रतलाम,नीमच के ऐतिहासिक एवं पर्यटन स्थलों पर की जाएगी साथ ही फिल्म में मालवा के स्थानीय कलाकारों के साथ-साथ मालवा के बॉलीवुड में स्थापित कलाकारों को भी शामिल किया जाएगा, फिल्म के शूटिंग के लिए ग्रामीण गांव की पृष्ठभूमि के लिए आदर्श गांव बाला गुड़ा का चयन किया गया है फिल्म के गानों का फिल्मांकन उज्जैन महाकाल लोक एवं यहां की सांस्कृतिक धार्मिक धरोहरों पर किया जाएगा इस मालवी फिल्म में बॉलीवुड के प्रख्यात सिंगर के गाने रिकॉर्ड किए जाएंगे । मालवा के प्रमुख लोक कवि की रचनाओं को इस फिल्म में प्रमुखता से शामिल किया गया है, फिल्म में 6 गाने हैं , स्वर्गीय भावसार बा द्वारा लिखित, स्वर्गीय मदन सिंह जोशी भागवत आचार्य द्वारा लिखित, आगर मालवा की लोक गायिका स्व कोकिला की उपाधि से सम्मानित पुखराज पांडे जी ,मंदसौर की लोक गायिका श्रीमती सुगंध देवी गंधर्व जी, संजा के गीतों को जन-जन तक पहुंचाने के लिए, देश-विदेश में मालवी बोली को प्रचार करने के लिए श्रीमती माया देवी नारायणी बदेका मालवेंद्र जी का बहुत बड़ा योगदान है , माया जी द्वारा लिखित संजा के लोकप्रिय गीत को फिल्म थारो म्हारो प्रेम में फिल्म में शामिल करने का सौभाग्य मिला। माया जी बदेका मालवा के लोकप्रिय जननायक स्वर्गीय लक्ष्मी नारायण पांडे जी की सुपुत्री है, बाबूजी ने पूरी जिंदगी राजनीति को सेवा का मंच बनाकर संसदीय क्षेत्र को काफी सौगात दी है, पिताजी के कदमों पर चलते हुए माया जी संजा के गीत, गोबर से संजा बनाने की कला को नई पीढ़ी को विभिन्न कार्यक्रमों के माध्यम से सहयोग कर के प्रोत्साहित कर रही हैं ।

टाटा प्ले लेकर आया है दिव्य महाकुंभ के दर्शन प्रयागराज से

मुंबई, एजेंसी। हर हर महादेव, महाकुंभ में शामिल होने का महासंयोग अब आप सभी को प्राप्त होने वाला है, वो भी घर बैठे आराम से। क्योंकि 13 जनवरी से 26 फरवरी तक टाटा प्ले लेकर आ रहा है अपने अराधना चैनल पर 24/7 महाकुंभ दर्शन का सीधा प्रसारण, जिसमें आप बिना किसी विज्ञापन के दिव्यता का अनुभव कर सकेंगे। शाही स्नान (पवित्र स्नान), मंत्रमुग्ध करने वाली शाम की गंगा आरती, अखाड़ों के रंगीन जुलूस और प्रसिद्ध दिग्गजों द्वारा आध्यात्मिक उपदेश के साथ शानदार दृश्य खास आप सभी के लिए प्रसारित किए जाएंगे। इतना ही नहीं आप मठों के समूहों की समृद्ध परंपराओं से परिचित होंगे, सांस्कृतिक प्रस्तुतियों और दिल को छूने वाली कहानियों का अनुभव कर सकेंगे, इस ऐतिहासिक घटना का साक्षी बनने का सुनहरा अवसर आप सभी की लिए उपलब्ध है। सबसे खुशी की बात यह है कि, यह अनुभव टाटा प्ले अराधना ग्राहकों के लिए पूरी तरह से मुफ्त है। जहां टाटा प्ले अराधना पर नियमित कार्यक्रम चैनल - 1051 पर जारी रहेगा, वहीं महाकुंभ दर्शन का 24/7 फीड चैनल-1052 पर देख सकेंगे। तो बिना चूके एक भी पल लगातार महाकुंभ के जादू, उसकी आध्यात्मिकता और श्रद्धा में सराबोर होने के लिए तैयार हो जाएं।

आंकड़ों को देख खुश होंगे मोदी, साल 2024 में हो गया कमाल

नईदिल्ली, एजेंसी। साल 2025 में नरेंद्र मोदी सरकार को एक और अच्छी खबर मिली है। न्यू एंड रिन्यूएबल एनर्जी मिनिस्ट्री ने साल 2024 का जो डेटा जारी किया है, उसे देखकर पीएम मोदी खुश होंगे। देश के इस महत्वपूर्ण सेक्टर में साल 2024 में कमाल हो गया है। मोदी सरकार साल 2030 तक अपने एक महत्वपूर्ण लक्ष्य को पूरा करना चाहती है। अब सवाल है कि क्या सरकार इस सेक्टर में अपना लक्ष्य पूरा कर पाएगी

यहां हम बात रिन्यूएबल एनर्जी सेक्टर की कर रहे हैं। न्यू एंड रिन्यूएबल एनर्जी मिनिस्ट्री के आंकड़ों के अनुसार भारत ने 2024 में लगभग 30 गीगावाट की रेकॉर्ड रिन्यूएबल एनर्जी क्षमता वृद्धि दर्ज की है। यह साल 2023 में दर्ज 13.75 गीगावाट से 113 फीसदी अधिक है। भारत की अब रिन्यूएबल एनर्जी क्षमता 218 गीगावाट हो गई है।

क्या है सरकार का लक्ष्य- भारत सरकार का लक्ष्य साल 2030 तक देश में 500 गीगावाट रिन्यूएबल एनर्जी क्षमता हासिल करना है। इस कारण इस सेक्टर में मोदी सरकार तेजी से काम कर रही है। भारत की अब रिन्यूएबल एनर्जी क्षमता 218 गीगावाट पहुंच चुकी है।

हर साल बढ़ रही क्षमता- देश में रिन्यूएबल एनर्जी पैदा करने की क्षमता साल दर साल बढ़ रही है। इस बारे में सरकार ने आंकड़े जारी किए हैं। नवीन एवं नवीकरणीय ऊर्जा मंत्री प्रह्लाद जोशी ने एक्स पर एक पोस्ट में कहा कि वर्ष 2023 में 13.75 गीगावाट से वर्ष 2024 में लगभग 30 गीगावाट तक की तीव्र वृद्धि हुई है। इस कारण करीब 218 गीगावाट का लक्ष्य हासिल हुआ है।

दुनिया में तीसरा स्थान

रिन्यूएबल एनर्जी सेक्टर में भारत तेजी से आगे बढ़ रहा है। सरकार इससे जुड़े कई प्रोग्राम देश में चला रही है। इनमें पीएम सूर्य घर मुफ्त बिजली योजना भी शामिल है। सरकार का उद्देश्य साल 2070 तक कार्बन उत्सर्जन को शून्य करने का है। रिन्यूएबल एनर्जी पैदा करने में भारत का दुनिया में तीसरा स्थान है। इसमें पहले स्थान पर चीन और दूसरे पर अमेरिका है।

लेकिन यहां सरकार के पास नहीं कोई प्लानिंग

रिन्यूएबल एनर्जी सेक्टर बेशक तेजी से बढ़ रहा है, लेकिन इसके कचरे को खत्म करने के लिए सरकार के पास कोई ठोस प्लानिंग नहीं है। सोलर पैनल का कचरा देश में तेजी से बढ़ रहा है। अभी तक सोलर पैनल का एक लाख टन कचरा पैदा हो गया है। साल 2030 तक यह बढ़कर 6 लाख टन हो सकता है। इनकी रीसाइक्लिंग सही से न होने के कारण पर्यावरण में जहरीले केमिकल और भारी धातुएं फैल रहे हैं।

रोजाना 40,000 रुपये की कमाई, मां-बेटे की जोड़ी ने किया कमाल

नईदिल्ली, एजेंसी। केरल के जीतू थॉमस ने अपनी मां लीना के साथ मिलकर मशरूम की खेती से सफल व्यवसाय खड़ा कयिा है। यह व्यवसाय उन्हें प्रतिदिन 40,000 रुपये की कमाई करा रहा है। जीतू ने शौकिया तौर पर मशरूम उगाना शुरू किया था। उन्हें कतई एहसास नहीं था कि वह एक दनि इससे लाखों की कमाई करेंगे। आइए, यहां जीतू और उनकी मां लीना की सफलता के सफर के बारे में जानते हैं।

रोज 100 किलो से ज्यादा उत्पादन – जीतू और लीना ने 5,000 वर्ग फीट जमीन पर मशरूम फार्म बनाया है। वे रोजाना 100 किलो से ज्यादा मशरूम उगाते हैं। तापमान और नमी को नियंत्रित रखने के लिए उन्होंने सरल वैज्ञानिक तरीके अपनाए हैं। बिचौलियों के बिना सीधे खुदरा विक्रेताओं को मशरूम बेचकर वे अच्छा मुनाफा कमा रहे हैं। जीतू मशरूम की खेती का प्रशिक्षण भी देते हैं। अब तक लगभग 1,000 लोग उनसे ट्रेनिंग ले चुके हैं।

अपने कमरे में शौक में की थी शुरुआत – 2018 में जीतू ने अपने कमरे में मशरूम उगाने का एक छोटा सा प्रयोग शुरू किया था। इंटरनेट पर प्लास्टिक की बोतल में मशरूम उगाने का तरीका देखकर जीतू को यह आइडिया आया।

महारत की हासिल

शुरुआती सफलता के बाद जीतू ने मशरूम की खेती के बारे में और अधिक सीखा। उन्होंने कोर्स भी किए। इससे उनका शौक बिजनेस बन गया। मशरूम की खेती के कई फायदे हैं। मशरूम जल्दी उग जाते हैं। लेकिन, यह काम आसान नहीं है। मशरूम नाजुक होते हैं। तापमान में थोड़ा सा बदलाव या कीड़ों से पूरी फसल बर्बाद हो सकती है। उन्होंने अपने फार्म को इस तरह डिजाइन किया है कि जहां आमतौर पर 5,000 बेड रखे जा सकते हैं, वहां 20,000 बेड लगाए गए हैं।

बढ़ी है लोकप्रियता

भारत में पिछले एक दशक में मशरूम की लोकप्रियता काफी बढ़ी है। इसका स्वाद लोगों की जुबान पर चढ़ा है। मशरूम न केवल खाने में स्वादिष्ट होते हैं, बल्कि अगर आप इसकी खेती में महारत हासिल कर लें तो ये आपको आर्थिक रूप से भी समृद्ध बना सकते हैं। जीतू ने 19 साल की उम्र में ही मशरूम की खेती में रुचि दिखाई। उन्होंने एक पैकेट में मशरूम के बीज बोए और फिर कभी पीछे मुड़कर नहीं देखा।

डॉली खन्ना ने इंडियन मेटल्स और स्टोव क्राफ्ट में किया है निवेश

इंडियन मेटल्स के शेयरों में पिछले छह महीनों में 16.7 प्रतिशत की तेजी

नईदिल्ली, एजेंसी। प्रसिद्ध निवेशक डॉली खन्ना ने दो नई कंपनियों में निवेश किया है। दिसंबर तिमाही में उन्होंने इंडियन मेटल्स एंड फेरो एलॉयज और स्टोव क्राफ्ट के शेयर खरीदे। इंडियन मेटल्स एंड फेरो एलॉयज एक छोटी मेटल कंपनी है। स्टोव क्राफ्ट किचन और घरेलू उपकरण बनाने वाली कंपनी है। डॉली खन्ना ने शायद पहली बार इन दोनों कंपनियों में निवेश किया है। इससे पहले सितंबर तिमाही में उनके पास इन कंपनियों के शेयर नहीं थे या फिर उनकी हिस्सेदारी 1 प्रतिशत से कम थी, जिसका खुलासा जरूरी नहीं होता। इस निवेश के साथ डॉली खन्ना इन कंपनियों के भविष्य पर दांव लगा रही हैं।

डॉली खन्ना ने इंडियन मेटल्स एंड फेरो एलॉयज में 6,23,464 शेयर खरीदे हैं। यह कंपनी की कुल हिस्सेदारी का 1.16 प्रतिशत है। स्टोव क्राफ्ट में उन्होंने 3,54,541 शेयर खरीदे हैं, जो 1.07 प्रतिशत हिस्सेदारी के बराबर है। एक और बड़े निवेशक, मुकुल महावीर अग्रवाल भी इंडियन मेटल्स एंड फेरो एलॉयज में हिस्सेदार हैं।

इंडियन मेटल्स एंड फेरो एलॉयज का कैसा रहा है प्रदर्शन

इंडियन मेटल्स एंड फेरो एलॉयज के वित्तीय परिणामों पर नजर डालें तो कंपनी का रेवेन्यू 2024-25 की दूसरी तिमाही में 0.1 प्रतिशत घटकर 692 करोड़ रुपये रह गया। यह वित्त वर्ष 2023-24 की दूसरी में 693 करोड़ रुपये था। लेकिन, कंपनी का शुद्ध लाभ इसी अवधि में 40 प्रतिशत बढ़कर 89 करोड़ रुपये से 125 करोड़ रुपये हो गया। दूसरी तिमाही में कंपनी का इबीआइटीडीए मार्जिन 25.38 प्रतिशत रहा। जबकि इबीआइटीडीए 176 करोड़ रुपये रहा। उत्पादन लागत 69,600 रुपये प्रति टन थी, जबकि बिजली और कोक की लागत 3.85 रुपये प्रति यूनिट और 16,545 रुपये प्रति टन थी।

पिछले छह महीनों में कंपनी के शेयरों में 16.7 प्रतिशत की तेजी आई है, जबकि निफ्टी 50 इंडेक्स में 4 प्रतिशत की गिरावट देखने को मिली है। कंपनी अपनी उत्पादन क्षमता में 40 प्रतिशत की वृद्धि करने की योजना बना रही है।

स्टोव क्राफ्ट ने आइकी के साथ की है पार्टनरशिप

स्टोव क्राफ्ट के शेयरों में भी पिछले छह महीनों में 35 प्रतिशत से अधिक की तेजी आई है। किचन और घरेलू उपकरणों की प्रमुख निर्माता कंपनी ने दिसंबर में आइकी के साथ एक रणनीतिक साझेदारी की घोषणा की। 2026 से स्टोव क्राफ्ट आइकी के वैश्विक स्टोर नेटवर्क के जरिये बेची जाने वाली कुकवेयर सप्लाई रेंज विकसित करेगी। इस पहल का समर्थन करने के लिए कंपनी अपने हरोहल्ली परिसर में 1,80,000 वर्ग फीट का एक मैन्यूफैक्चरिंग संयंत्र स्थापित कर रही है।

कौन हैं डॉली खन्ना

चेन्नई की रहने वाली डॉली खन्ना मिडकैप और स्मॉलकैप शेयरों में निवेश के लिए जानी जाती हैं। वह 1996 से शेयर बाजार में निवेश कर रही हैं। उनके पति राजीव खन्ना उनके पोर्टफोलियो का प्रबंधन करते हैं। यह पोर्टफोलियो मुख्य रूप से मैन्यूफैक्चरिंग, टेक्सटाइल, केमिकल और शुगर जैसे पारंपरिक क्षेत्रों के शेयरों पर फोकस्ड है। डॉली खन्ना कम जानी-मानी कंपनियों के शेयरों को चुनने में माहिर हैं। इस रणनीति से उन्हें बाजार में अच्छी पहचान मिली है।

बजट में कर मुक्त आय का दायरा बढ़ाकर 10 लाख रुपये किया जाएगा

नईदिल्ली, एजेंसी। केंद्रीय बजट 2025 नजदीक आ रहा है। महत्वपूर्ण कर सुधारों और आर्थिक राहत से जुड़े उपायों की उम्मीद भी बढ़ती जा रही है। वित्त मंत्री निर्मला सीतारमण 1 फरवरी, 2025 को बजट करेंगी। मध्यम वर्ग इस बजट से अन्य प्रस्तावों के अलावा कर-मुक्त आय सीमा में इजाफे की उम्मीद कर रहा है। बजट से पहले कई संगठनों ने सरकार से इस बारे में फैसला लेने की अपील की है। ऐसे में सरकार बजट 2025 में इससे जुड़ा कोई बड़ा एलान कर दे तो, आश्चर्य नहीं होगा।

आरएसएस समर्थित बीएमएस ने किन साहसिक सुधारों पर जोर देने की अपील की- राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ (आरएसएस) से संबद्ध भारतीय मजदूर संघ (बीएमएस) ने बजट पूर्व चर्चाओं के दौरान बड़े बदलावों की मांग की है। संगठन ने मौजूदा छूटों को बरकरार रखते हुए कर-मुक्त आय सीमा को बढ़ाकर 10 लाख रुपये करने का प्रस्ताव रखा है। इसके अतिरिक्त, बीएमएस ने सरकार से 8वें वेतन आयोग का गठन करने और पेंशनभोगियों को पेंशन पर आयकर से छूट देने का आग्रह किया। कई अन्य व्यापारिक संगठनों ने भी इस तरह की मांग की है।

क्या सरकार बजट 2025 में आयकर की सीमा बढ़ाने एलान करेगी- जानकारों को उम्मीद है कि सरकार कर मुक्त आय की सीमा को बढ़ाने से जुड़ा एलान बजट 2025 में कर सकती है। अन्य प्रमुख मांगों में मनरेगा कार्यक्रम का विस्तार कर प्रति वर्ष प्रति परिवार 200 कार्यदिवस उपलब्ध कराना, कृषि और संबद्ध उद्योगों के लिए प्रोत्साहन पैकेज लागू करना और जीएसटी रिफंड में तेजी लाना शामिल है। बीएमएस ने चीनी आयात पर निर्भरता कम करने के लिए एक व्यापक विनिर्माण रणनीति की आवश्यकता पर भी बल दिया।

पेंशनभोगियों और श्रमिक कल्याण से जुड़े किन उपायों रहेगी नजर- बीएमएस ने ईपीएस-95 लाभार्थियों के लिए न्यूनतम पेंशन 1,000 रुपये से बढ़ाकर 5,000 रुपये करने की वकालत की है, तथा भविष्य में इसे सरकार के न्यूनतम वेतन के 50 प्रतिशत के लक्ष्य के साथ परिवर्तनीय महंगाई भत्ते (वीडीए) से जोड़ने की वकालत की है। उन्होंने आयुष्मान भारत योजना का विस्तार ईपीएस-95 पेंशनभोगियों तक करने तथा सार्वभौमिक वृद्धावस्था पेंशन शुरू करने का भी सुझाव दिया।

इस साल शेयर बाजार में तूफान की आशंका, अमेरिकी मार्केट हो सकती है धड़ाम

नईदिल्ली, एजेंसी। साल 2025 शेयर मार्केट के लिए संकटभरा हो सकता है। साल 2025 में अमेरिकी शेयर मार्केट धड़ाम हो सकती है। अगर ऐसा होता है तो इसके असर से भारत समेत दुनिया के दूसरे देशों की मार्केट भी प्रभावित होंगी और इनमें भी गिरावट आ सकती है।

सबसे ज्यादा खतरा भारतीय शेयर मार्केट पर पड़ सकता है, जो इस समय गिरावट के दौर से गुजर रही है। सेंसेक्स पिछले 6 महीने में करीब 4 फीसदी गिर गया है। साल 2025 की शुरुआत तो अच्छी हुई थी, लेकिन उसके बाद सब कुछ गड़बड़ हो गया। 2 जनवरी के बाद से शेयर मार्केट में लगातार गिरावट जारी है। तब से अभी तक इसमें 3 फीसदी से ज्यादा

गिरावट आई है। शुक्रवार को भी मार्केट गिरावट के साथ बंद हुई थी।

कैसी है अमेरिकी शेयर मार्केट की स्थिति- इस समय अमेरिकी शेयर मार्केट में तेजी बनी हुई है। पिछले दो वर्षों से यह तेजी के दौर से गुजर रही है।

क्यों आ सकती है मार्केट में गिरावट

अमेरिकी शेयर मार्केट में गिरावट का सबसे बड़ा कारण अमेरिका का केंद्रीय बैंक फेड रिजर्व रहेगा। मोटली फूल की रिपोर्ट के अनुसार, अमेरिकी निवेशकों के मन में 2025 में अमेरिकी शेयर बाजार के भविष्य को लेकर आशंकाएं बढ़ रही हैं। ऐसा इसलिए क्योंकि फेड के वर्ष 2025 के लिए किए गए आर्थिक अनुमान गलत साबित हो सकते हैं। ऐसे में फेडरल रिजर्व के अधिकारी इस वर्ष ब्याज दरों में फिर से वृद्धि कर सकते हैं। अमेरिकी शेयर बाजार को उम्मीद है कि अमेरिकी फेडरल रिजर्व अपने पिछले कुछ आर्थिक अनुमानों के आधार पर वर्ष 2025 में दरों में कटौती जारी रख सकता है।

किसानों को बजट में बड़ी राहत देने की तैयारी में सरकार, क्रेडिट कार्ड पर 5 लाख के उधार की उम्मीद

नईदिल्ली, एजेंसी। केंद्र सरकार 1 फरवरी को केंद्रीय बजट 2025-26 संसद में पेश करने की तैयारी कर रही है। इस बजट में सरकार किसानों के लिए बड़ी राहत लेकर आ सकती है। सरकार आगामी बजट में किसान क्रेडिट कार्ड की लिमिट 3 लाख रुपए से बढ़ाकर 5 लाख रुपए तक करने की योजना बना रही है। जानकारों का कहना है कि, किसान क्रेडिट कार्ड की लिमिट में आखिरी बार बदलाव काफी समय पहले हुआ था। इसके बाद से ही सरकार को इसे बढ़ाने की लगातार मांगें मिल रही थी।

1988 में हुई थी किसान क्रेडिट कार्ड योजना की शुरुआत- दरअसल, किसान क्रेडिट कार्ड योजना की शुरुआत 1998 में की गई थी। इसके तहत खेती और उससे जुड़ी गतिविधियों में लगे किसानों को 9 फीसदी ब्याज दर पर अल्पकालीन फसल ऋण दिया जाता है। सरकार किसानों को ब्याज पर 2 फीसदी छूट

देती है और समय से अदायगी करने वाले किसानों के ब्याज में बतौर प्रोत्साहन 3 फीसदी कमी और कर दी जाती है।

कई साल से नहीं बढ़ी केसीसी पर उधारी की सीमा

कृषि क्षेत्र से जुड़े जानकारों का कहना है कि,इन दिनों खेती की लागत बहुत बढ़ी है मगर किसान क्रेडिट कार्ड पर उधारी की सीमा कई साल से बढ़ाई नहीं गई। अगर सरकार ये दायरा में इजाफा करती है तो कृषि क्षेत्र में उत्पादन को बढ़ावा मिलेगा। साथ ही कृषि आय बढ़ाने में मदद भी होगी। सरकार के इस कदम से किसानों की जीवनशैली में ही सुधार नहीं होगा।

योगराज सिंह ने कहा-

मैं कपिल देव के सिर में गोली मारना चाहता था...

नईदिल्ली, एजेंसी। युवराज सिंह के पिता योगराज सिंह ने एक दिल दहलाने वाला खुलासा किया। उन्होंने बताया कि वो टीम इंडिया के पूर्व कप्तान कपिल देव को मारना चाहते थे। योगराज सिंह ने 1980-81 में ऑस्ट्रेलिया और न्यूजीलैंड के दौरे के दौरान भारत के लिए एक टेस्ट और छह वनडे मैच खेले। योगराज सिंह ने इसका खुलासा भी किया कि वो आखिर क्यों कपिल देव को मारना चाहते थे। योगराज सिंह ने अनफिल्टर्ड बाय समदिश पर कहा कि जब कपिल देव भारत, उत्तरी क्षेत्र और हरियाणा के कप्तान बने, तो उन्होंने बिना किसी कारण के मुझे टीम बाहर कर दिया। मेरी पत्नी (युवी की माँ) चाहती थीं कि मैं कपिल से सवाल पूछूं और मैंने उनसे कहा कि मैं इसआदमी को सबक सिखाऊंगा।

कपिल देव को गोली मारने गए थे योगराज सिंह – योगराज सिंह ने कहा कि मैंने अपनी पिस्तौल निकाली और सेक्टर 9 में कपिल के घर गया। वह अपनी मां के साथ बाहर आया। मैंने उसे एक दर्जन गाली दी। मैंने उससे कहा कि तुम्हारी वजह से मैंने एक दोस्त खो दिया है और तुमने जो किया है, उसकी कीमत तुम्हें चुकानी पड़ेगी। मैंने उससे कहा कि मैं तुम्हारे सिर में गोली मारना चाहता हूं, लेकिन मैं ऐसा नहीं कर पाऊंगा क्योंकि तुम्हारी एक बहुत ही पवित्र मां है, जो यहां खड़ी हैं। फिर मैंने शबनम से कहा कि चलो यहां से चलते हैं। योगराज सिंह ने आगे बताया कि यही वो पल था जब मैंने तय किया कि मैं क्रिकेट नहीं खेलूंगा, युवी खेलेगा। योगराज ने टीम इंडिया के पूर्व स्पिनर बिशन सिंह बेदी पर भी तीखी टिप्पणी की। उन्होंने कहा कि बिशन सिंह बेदी समेत इन लोगों ने मेरे खिलाफ साजिश रची। मैंने बिशन सिंह बेदी को कभी माफ नहीं किया। वह व्यक्ति बिस्तर पर ही मर गया। जब मुझे टीम से बाहर किया गया तो मैंने चयनकर्ताओं में से एक रवींद्र चड्ढा से बात की। उन्होंने मुझे बताया कि बिशन सिंह बेदी (मुख्य चयनकर्ता) मुझे नहीं चुनना चाहते थे क्योंकि उन्हें लगता था कि मैं सुनील गावस्कर का आदमी हूं और मैं मुंबई में क्रिकेट खेल रहा था। मैं गावस्कर के बहुत करीब था।

कपिल देव ने मांगी थी माफी

योगराज ने यह भी बताया कि इतने साल में उन्होंने कपिल देव के बारे में कभी बात नहीं की। उन्होंने कहा कि 2011 में जब भारत ने विश्व कप जीता था, तो सिर्फ एक ही व्यक्ति रो रहा था और वह कपिल देव थे। योगराज ने आगे कहा कि मैंने कपिल को एक पेपर कटिंग भेजी थी कि मेरे बेटे ने विश्व कप में आपसे बेहतर प्रदर्शन किया है। योगराज ने यह भी याद किया कि कपिल देव ने उनसे माफी मांगी थी। योगराज ने कहा कि कपिल ने मुझे व्हाट्सऐप पर एक संदेश भेजा था जिसमें कहा गया था कि अगले जन्म में हम भाई होंगे। हम अगले जन्म में एक ही मां से पैदा होंगे। वह मुझसे मिलना चाहता था, लेकिन बदला लेना है और यह अभी भी दुख देता है।

चैंपियंस ट्रॉफी 2025 के लिए न्यूजीलैंड ने किया 15 सदस्यीय टीम का ऐलान

नईदिल्ली, एजेंसी। चैंपियंस ट्रॉफी 2025 के लिए न्यूजीलैंड ने 15 सदस्यी टीम का ऐलान कर दिया जिसमें तेज गेंदबाज बेन सियर्स और विल ओ'रूर्के के अलावा ऑलराउंडर नाथन स्मिथ को भी शामिल किया गया। इस टूर्नामेंट के लिए बेन सियर्स को भी वनडे टीम में शामिल किया गया है जो कीवी टीम के लिए एक टेस्ट और 17 टी20 मैच खेल चुके हैं। विल ओ'रूर्के ने भी सभी प्रारूपों में प्रभावित किया है, लेकिन टेस्ट प्रारूप में उनका प्रदर्शन काफी शानदार रहा है।

इस टूर्नामेंट में कीवी टीम की कप्तानी मिचेल सैंटनर करेंगे जबकि नाथन स्मिथ टीम में ऑलराउंडर की भूमिका निभाएंगे जो निचले क्रम पर अच्छी बल्लेबाजी करते हैं साथ ही तेज गेंदबाजी भी करते हैं। नाथन स्मिथ इस टीम में काफी हद तक टिम साउथी की जगह को भरते हुए नजर आ सकते हैं। चैंपियंस ट्रॉफी से पहले कीवी टीम को पाकिस्तान में होने वाले ट्राई सीरीज में भी हिस्सा लेना है और उसमें भी यही टीम खेलती हुई नजर आएगी। इस ट्राई सीरीज में पाकिस्तान, न्यूजीलैंड के अलावा साउथ अफ्रीका भी हिस्सा लेगा।

चैंपियंस ट्रॉफी 2025 के लिए न्यूजीलैंड की टीम

मिचेल सैंटनर (कप्तान), माइकल ब्रेसवेल, मार्क चैपमैन, डेवोन कॉनवे, लॉकी फर्ग्यूसन, मैट हेनरी, टॉम लैथम, डेरिल मिशेल, विल ओ'रुरके, ग्लेन फिलिप्स, रचिन रवींद्र, बेन सियर्स, नाथन स्मिथ, केन विलियमसन, विल यंग।

मिचेल सैंटनर पहली बार किसी आईसीसी टूर्नामेंट में न्यूजीलैंड टीम की कप्तानी करते हुए नजर आएंगे तो वहीं इस टीम में केन विलियमसन और टॉम लाथम जैसे अनुभवी खिलाड़ियों को भी जगह दी गई है। टीम में मार्क चैपमैन, रचिन रवींद्र और विल यंग भी हैं जबकि स्पिन गेंदबाजी ऑलराउंडर माइकल ब्रेसवेल के भी टीम का हिस्सा बनाया गया है। चैंपियंस ट्रॉफी 2025 में न्यूजीलैंड को पाकिस्तान, बांग्लादेश और भारत के साथ वाले ग्रुप में रखा गया है। लॉकी फर्ग्यूसन अगर उपलब्ध नहीं हो पाते हैं तो न्यूजीलैंड ने तेज गेंदबाज जैकब डफी को रिजर्व के रूप में रखा है।

पाकिस्तान के खिलाफ नहीं खेलेंगे बुमराह

चैंपियंस ट्रॉफी से पहले भारत को बड़ा झटका, इंजरी रिपोर्ट में हुआ ये खुलासा

नईदिल्ली, एजेंसी। चैंपियंस ट्रॉफी की शुरुआत 19 फरवरी से होनी है. वहीं 20 फरवरी भारतीय टीम दुबई में बांग्लादेश के खिलाफ टूर्नामेंट में अपने सफर की शुरुआत करेगी. वहीं भारत और पाकिस्तान का मुकाबला 23 फरवरी को खेला जाएगा. यानि इस अहम मुकाबले में अब करीब 1.5 महीने का समय रह गया है. लेकिन इससे ठीक पहले टीम इंडिया के लिए एक बुरी खबर सामने आई है. दरअसल, ऑस्ट्रेलिया में सिडनी टेस्ट के दौरान जसप्रीत बुमराह को इंजरी हो गई थी. इसके बाद उनका स्कैन किया गया था, जिसकी रिपोर्ट सामने आ गई है. इसमें खुलासा हुआ है कि उनकी कमर में सूजन है और वो करीब दो महीने तक मैदान से बाहर रह सकते हैं.

शनिवार 11 जनवरी को इंग्लैंड के खिलाफ टी20 सीरीज के लिए स्क्वाड का ऐलान किया गया था. इसी दिन बीसीसीआई ने एक मीटिंग भी की थी. मीडिया रिपोर्ट के मुताबिक इसमें ही बुमराह की इंजरी के बारे में सेलेक्टर्स को डिटेल जानकारी दी गई. बता दें भारतीय क्रिकेट बोर्ड की मेडिकल टीम लगातार बुमराह की इंजरी को लेकर नजर बनाए हुई थी. पहले अनुमान लगाया जा रहा था कि उन्हें फ्रैक्चर है. लेकिन रिपोर्ट सामने आने के बाद पता चला है कि उनके कमर में सूजन है.

बीसीसीआई सूत्रों की मानें तो बुमराह को नेशनल क्रिकेट एकेडमी में रिपोर्ट करने के लिए कहा गया है. यहां वो रिहैब करेंगे, जिसमें करीब दो महीने का समय लग सकता है. मार्च के पहले हफ्ते तक ही उनके पूरी तरह ठीक होने की उम्मीद है. बता दें एनसीए उनकी रिकवरी को पहले तीन हफ्ते तक मॉनिटर करेगी. इसके बाद उन्हें दो प्रैक्टिस मैच खेलने होंगे, जहां फिटनेस की जांच की जाएगी. इसमें पास होने के बाद ही भारतीय टीम के लिए खेलने की अनुमति दी जाएगी.

सेमीफाइनल में खेलने की उम्मीद

ऑस्ट्रेलिया में जसप्रीत बुमराह से जरूरत से ज्यादा गेंदबाजी करवाने का नतीजा टीम इंडिया को चैंपियंस ट्रॉफी में भुगतना पड़ रहा है. जैसा कि हमने पहले ही बताया बुमराह को मार्च के पहले हफ्ते तक ही पूरी तरह फिट हो पाएंगे. तब तक भारत के ग्रुप स्टेज के मुकाबले खत्म हो जाएंगे. भारतीय टीम अपना आखिरी ग्रुप मैच न्यूजीलैंड के खिलाफ 2 मार्च को खेलेगी, जिसमें बुमराह का खेलना मुश्किल लग रहा है. इसका मतलब है कि अगर टीम इंडिया सेमीफाइनल में पहुंचने में कामयाब होती है तो 4 मार्च को होने वाले इस मैच में बुमराह खेल सकते हैं. हालांकि, अभी ये सिर्फ मौजूदा जानकारी के आधार पर अनुमान लगाया जा रहा है.

रोहित-कोहली का भविष्य तय करेगी चैम्पियंस ट्रॉफी...

नईदिल्ली, एजेंसी। ऑस्ट्रेलिया के खिलाफ पांच मैचों की टेस्ट सीरीज में भारतीय टीम को 1-3 से हार का सामना करना पड़ा था. इसके चलते भारतीय टीम ने 10 साल बाद बॉर्डर-गावस्कर ट्रॉफी गंवा दी थी. साथ ही भारतीय टीम वर्ल्ड टेस्ट चैम्पियनशिप के मौजूदा चक्र के फाइनल में भी नहीं पहुंच सकी थी. ऑस्ट्रेलिया दौरे के बाद भारतीय क्रिकेट नियंत्रण बोर्ड ने 11 जनवरी (रविवार) को मुंबई में रिव्यू मीटिंग बुलाई.

बल्लेबाजों के प्रदर्शन पर हुई गंभीर चर्चा

सूत्र ने आगे बताया, बैठक में टीम के प्रदर्शन पर विस्तृत चर्चा हुई, खासकर बल्लेबाजी लाइन अप पर. प्रबंधन यह समझना चाहता था कि मजबूत लाइन-अप होने के बावजूद भारतीय बल्लेबाज अच्छा प्रदर्शन क्यों नहीं कर पा रहे हैं. साथ ही, मुख्य कारण और उसके सुधार पर भी चर्चा हुई. सभी बातों पर गौर किया गया है और चैम्पियंस ट्रॉफी के तुरंत बाद कुछ कदम उठाए जाएंगे. एक सदस्य ने यह भी बताया कि टीम घरेलू मैदान पर सीरीज हार गई, जो दर्शाता है कि कुछ गड़बड़ है और उन्होंने इस पर स्पष्टीकरण मांगा.

कोहली-रोहित के फ्यूचर पर मीटिंग में हुई चर्चा

इस मीटिंग का उद्देश्य यह समझना था कि ऑस्ट्रेलिया दौरे पर टीम इंडिया के साथ क्या गलत हुआ. रिव्यू मीटिंग में कप्तान रोहित शर्मा, हेड कोच गौतम गंभीर, बीसीसीआई अध्यक्ष रोजर बिन्नी, सचिव देवजीत सैकिया और उपाध्यक्ष राजीव शुक्ला शामिल हुए. यह बैठक करीब 2 घंटे तक चली. मैनेजमेंट ने इस दौरान न्यूजीलैंड के खिलाफ भी भारतीय टीम के प्रदर्शन की समीक्षा की, जहां रोहित ब्रिगेड को अपने घर में टेस्ट सीरीज में 0-3 से करारी हार झेलनी पड़ी थी.

सूत्रों के मुताबिक इस बैठक में रोहित शर्मा और विराट कोहली के प्रदर्शन पर चर्चा हुई. समझा जाता है कि दोनों खिलाड़ियों को मैदान पर अच्छा प्रदर्शन करने के लिए कहा गया है. साथ ही मीटिंग में रोहित शर्मा की कप्तानी को लेकर भी बात हुई. पूरे घटनाक्रम की जानकारी रखने वाले सूत्र ने आजतक को बताया, अभी कुछ नहीं होने वाला है, लेकिन मैनेजमेंट चैम्पियंस ट्रॉफी के बाद कप्तानी को लेकर फैसला कर सकता है।

आरसीबी के इस बल्लेबाज को भारतीय टीम में नहीं मिली जगह

2024 में 181 से ज्यादा की स्ट्राइक रेट से बनाए थे 823 रन

नईदिल्ली, एजेंसी। इंग्लैंड के खिलाफ 5 मैचों की टी20 सीरीज के लिए भारतीय टीम का ऐलान कर दिया गया। भारतीय सेलेक्टर्स ने इस टीम में आरसीबी के धाकड़ बल्लेबाज रजत पाटीदार को मौका नहीं दिया जो घरेलू स्तर पर लगातार अच्छा प्रदर्शन कर रहे हैं। रजत का प्रदर्शन आईपीएल में भी अच्छा रहा है और वो अपनी टीम आरसीबी के लिए रन बनाने में पिछले सीजन में भी सफल रहे थे।

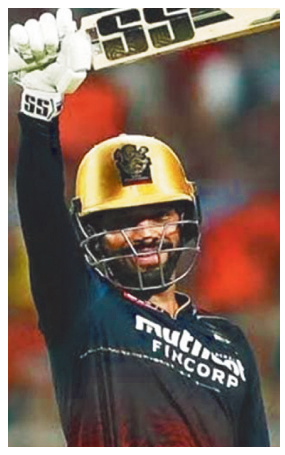

रजत पाटीदार को आक्रामक बल्लेबाज के रूप में जाना जाता है तो मध्यक्रम के शानदार बल्लेबाज हैं। रजत को भारत के लिए 3 टेस्ट और एक वनडे मैच में खेलने का मौका मिला है, लेकिन टी20 प्रारूप में वो अब तक डेब्यू नहीं कर पाए हैं। रजत लगातार छोटे प्रारूप के लिए टीम इंडिया का दरवाजा खटखटा रहे हैं, लेकिन उन्हें मौका नहीं मिल पाया है।

साल 2024 में रजत ने किया शानदार प्रदर्शन

रजत पाटीदार ने साल 2024 में टी20 में काफी अच्छा प्रदर्शन किया और उन्होंने 181.6 की स्ट्राइक रेट के साथ कुल 823 रन बनाए। उन्होंने साल 2024 में आरसीबी के लिए खेलते हुए 177.13 की स्ट्राइक रेट के साथ 395 रन बनाए जबकि हाल ही में खत्म हुए सैयद मुश्ताक अली ट्रॉफी टूर्नामेंट में उन्होंने शानदार बल्लेबाजी करते हुए 186.6 की स्ट्राइक रेट के साथ कुल 428 रन बनाए थे। रजत रन बनाने में निरंतर रहे हैं, लेकिन वो 31 साल के हो चुके हैं और शायद ये बड़ी वजह हो सकती है कि उन्हें भारतीय टी20 टीम में जगह नहीं मिल रही है।

रजत पाटीदार का टी20 क्रिकेट करियर

रजत पाटीदार का टी20 क्रिकेट करियर काफी अच्छा रहा है और उन्होंने अब तक खेले 75 मैचों की 71 पारियों में 158.18 की स्ट्राइक रेट के साथ 2463 रन बनाए हैं। उनका औसत इस दौरान 38.48 का रहा है। रजत ने टी20 प्रारूप में अब तक एक शतक और 24 अर्धशतकीय पारियां खेली हैं और उनका बेस्ट स्कोर नाबाद 112 रन रहा है। उन्होंने अब तक 141 चौके और 143 छक्के लगाए हैं।

जय शाह के बाद देवाजीत सैकिया बने BCCI के नए सेक्रेटरी

प्रभतेज भाटिया को बनाया गया नया कोषाध्यक्ष

नईदिल्ली, एजेंसी। असम के पूर्व क्रिकेटर देवजीत सैकिया ने जय शाह की जगह भारतीय क्रिकेट बोर्ड (बीसीसीआई) के सचिव पद की जिम्मेदारी संभाल ली है। जय शाह के आईसीसी अध्यक्ष बनने के बाद से ये पद एक महीने से अधिक समय से खाली था। सचिव के तौर पर सैकिया ने बीसीसीआई अध्यक्ष रोजर बिन्नी के साथ उस बैठक में हिस्सा लिया था जिसे भारत के खराब ऑस्ट्रेलिया दौरे पर आयोजित किया गया था। इस बैठक में कप्तान रोहित शर्मा, कोच गौतम गंभीर और चीफ सेलेक्टर अजीत अगरकर भी शामिल हुए थे। वहीं पूर्व सचिव जय शाह भी इसका हिस्सा थे। इसके अलावा प्रभतेज भाटिया को बोर्ड का नया कोषाध्यक्ष बनाया गया। असम से ताल्लुक रखने वाले देवजीत सैकिया का बैकग्राउंड बहुआयामी है। उन्होंने क्रिकेट भी खेला और कानून व प्रशासन के क्षेत्र में भी काम किया। प्रथम श्रेणी क्रिकेटर के रूप में सैकिया ने 1990 और 1991 के बीच 4 मैच खेले जिसमें उन्होंने विकेटकीपर के रूप में काम किया। उनका क्रिकेट करियर काफी छोटा था और इस दौरान उन्होंने विकेटकीपर के रूप में 9 शिकार किए जबकि 53 रन बनाने में सफल रहे। क्रिकेट खेलना छोड़ने के बाद सैकिया ने वकालत के क्षेत्र में काम किया और 28 साल की उम्र में में गुवाहाटी उच्च न्यायालय में वकील के रूप में प्रैक्टिस शुरू की।

अंपायर की बेटी ने बढ़ाई टीम इंडिया की ताकत

विरोधियों के लिए बनी आफत, स्मृति मंधाना के सामने ठोके 290 रन!

नईदिल्ली, एजेंसी। इंटरनेशनल डेब्यू को अभी महीना भी नहीं बीता और पूरा इंडिया उसकी बात कर रहा है. वजह है उसकी बल्लेबाजी, जो बेलगाम है. भारत के नजरिए से जहां उसका बेखौफ होकर खेलना ताकत है, वहीं विरोधी टीमों के लिए आफत. हम जिनकी बात कर रहे हैं वो एक अंपायर की बेटी हैं. उन्होंने साइकोलॉजी की पढ़ाई की है, ऐसे में जाहिर है कि गेंदबाजों की दिमाग की पढ़ाई कर उनकी मानसिकता को समझना उनके लिए मुश्किल नहीं. भारतीय महिला क्रिकेट टीम की उभरती हुई इस नई स्टार का नाम है प्रतीका रावल, जिन्होंने टीम इंडिया के लिए ओपनिंग करते हुए अब तक स्मृति मंधाना के सामने 290 रन ठोक दिए हैं.

अंपायर की बेटी जो बन गई क्रिकेटर –प्रतीका रावल दिल्ली यूनिवर्सिटी से ग्रेजुएट हैं. वहीं उनके पिता प्रदीप रावल, बीसीसीआई से मान्यता प्राप्त लेवल 2 के अंपायर हैं. स्कूली दिनों में बास्केटबॉल में गोल्ड मेडल जीतने वाली प्रतीका को क्रिकेट की अपनी काबिलियत का असली पता कॉलेज के दिनों में चला. बस फिर क्या था शुरू हो गया सफर. उसने बहुत जल्दी ही अपनी प्रतिभा के दम पर टीम इंडिया में कदम रखा.

आयरलैंड के खिलाफ हल्ला बोल – प्रतीका का डेब्यू तो वेस्टइंडीज के खिलाफ 22 दिसंबर 2024 को हुआ था. लेकिन, बल्ले का जोर फिलहाल आयरलैंड के खिलाफ दिख रहा है. 3 वनडे की सीरीज के पहले दो मैचों में वो लगातार दो अर्धशतक जड़ चुकी है. पहले वनडे में 89 रन की पारी खेलने के बाद प्रतीका ने दूसरे वनडे में 83 रन बनाए.

स्मृति मंधाना के सामने ठोके 290 रन! – प्रतीका रावल ने डेब्यू से अब तक 5 वनडे खेले जिसमें उसने 32 चौके और 3 छक्के के दम पर 290 रन बनाए हैं. इस दौरान 3 अर्धशतकीय पारियां प्रतीका के बल्ले से निकली. इन सभी मैचों के दौरान क्रीज के दूसरे छोर पर स्मृति मंधाना उनके साथ रहीं. मतलब वो मंधाना की नई ओपनिंग पार्टनर है, जो अब टीम की ताकत और विरोधियों के लिए आफत बनती दिख रही है. व्हाइट बॉल क्रिकेट में टीम इंडिया के पास पहले से ही शेफाली वर्मा जैसी विस्फोटक ओपनर है।

चैंपियंस ट्रॉफी के लिए भारत के पड़ोसी देश ने किया टीम का ऐलान, 447 मैच खेलने वाले को नहीं मिली जगह

नईदिल्ली, एजेंसी। 2025 चैंपियंस ट्रॉफी 19 फरवरी से 9 मार्च तक पाकिस्तान और संयुक्तर अरब अमीरात में खेली जानी है. 8 टीमों के बीच खेले जाने वाले इस टूर्नामेंट के लिए स्क्वॉड का ऐलान होना शुरू हो गया है. इंग्लैंड की टीम ने पहले ही अपनी टीम चुन ली थी. अब भारत के एक पड़ोसी देश ने भी अपने स्क्वॉड का ऐलान कर दिया है. लेकिन इस टीम में सबसे अनुभवी खिलाड़ी को शामिल नहीं किया गया है. इस खिलाड़ी के पास 447 इंटरनेशनल मैच खेलने का अनुभव है. लेकिन पिछले कुछ समय से ये खिलाड़ी एक विवाद में फंसा हुआ है. चैंपियंस ट्रॉफी के लिए बांग्लादेश की टीम ने अपने स्क्वॉड का ऐलान कर दिया है. नजमुल हुसैन शांतो इस टीम की कमान संभालेंगे. वहीं, पूर्व कप्तान और अनुभवी ऑलराउंडर शाकिब अल हसन को टीम में नहीं चुना गया है. हाल ही में शाकिब अल हसन लगातार दूसरी बार बॉलिंग एक्शन के टेस्ट में फेल हुए हैं. ऐसे में उन्हें टीम में नहीं चुना गया है. दूसरी ओर लिटन दास को भी स्क्वॉड में शामिल नहीं किया गया है. हालांकि अनुभवी खिलाड़ी महमूदुल्लाह और मुशफिकुर रहीम इस टीम का हिस्सा हैं.

इन टीमों से होगी बांग्लादेश की टक्कर – चैंपियंस ट्रॉफी 2025 में बांग्लादेश के ग्रुप में भारत, न्यूजीलैंड और पाकिस्तान की टीमें शामिल हैं. वह अपने अभियान की शुरुआत 20 फरवरी से करेगी. जहां उसका सामना टीम इंडिया से होगा. ये मुकाबला दुबई में खेला जाएगा. इसके बाद बांग्लादेश की टीम पाकिस्तान जाएगी. ग्रुप स्टेज में वह अपना दूसरा मैच न्यूजीलैंड के खिलाफ 24 फरवरी को रावलपिंडी में खेलेगी. इसके बाद 27 फरवरी को रावलपिंडी में ही उसकी टक्कर पाकिस्तान से होगी. बता दें, पिछली चैंपियंस ट्रॉफी में बांग्लादेश की टीम सेमीफाइनल तक पहुंची थी. ऐसे में वह बाकी टीमों के लिए इस बार भी बड़ी खतरा रहने वाली है.

चैंपियंस ट्रॉफी के लिए बांग्लादेश का स्क्वॉड

नजमुल हुसैन शांतो (कप्तान), सौम्या सरकार, तंजीद हसन, तौहीद हृदोय, मुश्फिकुर रहीम, एमडी महमूद उल्लाह, जेकर अली अनिक, मेहदी हसन मिराज, रिशाद हुसैन, तस्कीन अहमद, मुस्तफिजुर, परवेज हुसैन इमोन, नसुम अहमद, तंजीम हसन साकिब, नाहिद राणा।

संक्षिप्त खबरें

हमास के साथ बंधक समझौते के लिए कतर जाएगा इजरायली प्रतिनिधिमंडल

यरुशलम। गाजा पट्टी में बंधक बनाए गए इजरायली नागरिकों की रिहाई के लिए हमास के साथ समझौते को आगे बढ़ाने के लिए इजरायल के प्रधानमंत्री बेंजामिन नेतन्याहू ने एक वरिष्ठ प्रतिनिधिमंडल को कतर की राजधानी दोहा रवाना होने का निर्देश दिया है।प्रधानमंत्री कार्यालय ने शनिवार को बताया कि नेतन्याहू ने यह निर्देश रक्षा मंत्री इजरायल काट्ज और अमेरिकी वार्ताकारों (जिसमें मौजूदा और आने वाला प्रशासन दोनों शामिल है) के साथ स्थिति का आकलन करने के बाद दिया।समाचार एजेंसी सिन्हुआ के अनुसार, इजरायली प्रतिनिधिमंडल में इजरायली मोसाद खुफिया एजेंसी के प्रमुख डेविड बार्निया और शिन बेट आंतरिक सुरक्षा सेवा के प्रमुख रोनेन बार शामिल हैं। इस बीच, 10 जनवरी को इजरायल काट्ज ने सेना को निर्देश दिया है कि यदि 20 जनवरी तक बंधकों की रिहाई के समझौते पर हस्ताक्षर नहीं किए गए तो वे हमास को पूरी तरह पस्त करने के लिए एक योजना तैयार करें।

यमन: अल बायदा गवर्नरेट में गैस स्टेशन पर विस्फोट में 7 की मौत

अदन। मध्य यमन के अल बायदा गवर्नरेट में एक गैस स्टेशन पर विस्फोट में सात लोगों की मौत हो गई और 65 घायल हो गए।मीडिया रिपोर्ट में क्षेत्र के प्रशासन के हवाले से यह जानकारी दी गयी।सूत्रों ने कहा, विस्फोट अल बायदा गवर्नरेट के उत्तर में एन नसीफ क्षेत्र में एक गैस स्टेशन पर हुआ। इसके परिणामस्वरूप लगी भीषण आग में सात लोगों की मौत हो गई और 65 घायल हो गए, जिनमें से 15 की हालत गंभीर है। सूत्रों के मुताबिक, विस्फोट में 20 से ज्यादा कारें क्षतिग्रस्त हो गईं। सुरक्षा बलों ने घटना के कारणों की जांच शुरू कर दी है। अल बायदा गवर्नरेट हाल ही में उत्तरी यमन पर शासन करने वाले शिया आंदोलन अंसार अल्लाह (हूती) के पक्ष के सैनिकों और उनका विरोध करने वाले सशस्त्र समूहों के बीच संघर्ष का स्थान रहा है।

गाजा में इजरायली हमलों में बीस फिलिस्तीनी मारे गए

गाजा। गाजा पट्टी के विभिन्न इलाकों में शनिवार को इजरायली हवाई हमलों में कम से कम 20 फिलिस्तीनी मारे गए और कई लोग घायल हो गए। नागरिक सुरक्षा प्रवक्ता महमूद बसल ने बताया कि उत्तरी गाजा पट्टी के जबालिया में विस्थापित लोगों के आवास वाले एक स्कूल पर इजरायली बमबारी में दो बच्चों और दो महिलाओं सहित आठ फिलिस्तीनियों की मौत हो गई और 19 बच्चों सहित 30 से अधिक लोग घायल हो गए।श्री बसल के अनुसार एक अन्य हमले में गाजा शहर के पूर्व में शुजैया पड़ोस में एक घर को निशाना बनाकर किए गए इजरायली हवाईहमले मेंदो फिलिस्तीनी मारे गए और कई अन्य घायल हो गए।गाजा शहर के पश्चिम में अल-रिमल पड़ोस में एक आवासीय इमारत के एक अपार्टमेंट को निशाना बनाकर किए गए बम विस्फोट में एक महिला और एक बच्चे सहित तीन अन्य लोग मारे गए और 10 घायल हो गए। उन्होंने कहा कि गाजा शहर के पूर्व में अल-नफाक स्ट्रीट में नागरिकों की एक सभा पर हवाई हमले में चार लोग मारे गए।उन्होंने बताया कि इजरायली युद्धक विमानों ने मध्य गाजा पट्टी के दीर अल-बलाह शहर में एक तंबू पर बमबारी की जिसमें तीन लोग मारे गए। इस बीच इजरायली सेना के प्रवक्ता अविचाई अद्राई ने एक प्रेस बयान में कहा कि वायु सेना के विमानों ने हमास के आतंकवादियों पर हमला किया जो जबालिया में पहले एक स्कूल के रूप में इस्तेमाल किए जाने वाले क्षेत्र में एक कमांड और नियंत्रण परिसर के अंदर काम करते थे।

लॉस एंजिलिस में तबाही मचाने वाली तेज हवाओं के लौटने से पहले आग पर काबू पाने के प्रयास और तेज

लॉस एंजिलिस। अमेरिका के कैलिफोर्निया राज्य के लॉस एंजिलिस शहर में दमकल कर्मियों ने फिर से तेज हवाएं चलने की आशंका को देखते हुए जंगल में लगी भीषण आग को काबू करने के प्रयास और तेज कर दिये हैं। दमकल कर्मी प्रयास कर रहे हैं कि आग विश्व प्रसिद्ध जे. पॉल गेटी संग्रहालय और कैलिफोर्निया विश्वविद्यालय तक न फैले।मैन्डेविल कैनयन में आग बुझाने के लिए पुरजोर प्रयास किए जा रहे हैं।पैसिफिक कोस्ट के निकट स्थित मैन्डेविल कैनयन में प्रसिद्ध अभिनेता अर्नोल्ड श्वार्जनेगर समेत कई हस्तियों के घर हैं।कैलफायर ऑपरेशन्स के प्रमुख क्रिश्चियन लिट्ज ने एक ब्रीफिंग में कहा कि आग बुझाने के अभियान के दौरान विशेष ध्यान कैलिफोर्निया विश्वविद्यालय के निकट घाटी क्षेत्र पैलिसेड्स में जल रही भीषण आग पर रहेगा।

बांग्लादेश में हिंदुओं के खिलाफ कट्टरपंथी हमलों को राजनीतिक बताकर यूनुस सरकार ने पल्ला झाड़ा

प्रात : किरण/एजेंसी

ढाका। बांग्लादेश में लगातार हिंसा और कट्टरपंथी बर्बरता का सामना कर रहे हिंदू सहित दूसरे अल्पसंख्यक समुदाय को लेकर मोहम्मद यूनुस के नेतृत्व वाली बांग्लादेश की अंतरिम सरकार का पूर्वाग्रह भरा रवैया सामने आया है। ऐसे हमलों को रोकने में अपनी विफलता पर पर्दा डालते हुए बांग्लादेश सरकार ने अल्पसंख्यकों के खिलाफ हुए ज्यादातर हमलों को राजनीतिक करार दिया है। सरकार का कहना है कि हिंसा की कुछेक घटनाएं ही सांप्रदायिक थीं।

05 अगस्त को शेख हसीना सरकार के पतन के बाद से लगातार हिंदू आबादी के खिलाफ कट्टरपंथियों की हिंसक मुहिम को लेकर दुनिया भर में आलोचना का सामना कर रही बांग्लादेश की अंतरिम सरकार ने दावा किया है कि हिंसा की कुछ घटनाएं ही सांप्रदायिक थीं, जबकि ज्यादातर मामले राजनीतिक थे।बांग्लादेश ट्रिब्यून के मुताबिक शनिवार को बांग्लादेश सरकार ने पुलिस जांच रिपोर्ट का हवाला देते हुए दावा किया कि 4 अगस्त के बाद से हिंदुओं समेत अल्पसंख्यकों पर हमले और बर्बरता की अधिकांश घटनाएं राजनीतिक थी और कुछ ही घटनाएं सांप्रदायिक थीं।पुलिस ने सांप्रदायिक हिंसा की शिकायतें सीधे प्राप्त करने और अल्पसंख्यक समुदाय के साथ संपर्क बनाए रखने के लिए व्हाट्सएप नंबर जारी किया

है। अंतरिम सरकार के मुख्य सलाहकार मोहम्मद यूनुस की प्रेस विंग की तरफ से जारी बयान में बताया गया है कि पुलिस ने यह जांच बांग्लादेश हिंदू बौद्ध ईसाई एकता परिषद के इस दावे के बाद की कि अपदस्थ प्रधानमंत्री शेख हसीना के 5 अगस्त को देश छोड़कर चले जाने से इस साल 8 जनवरी तक सांप्रदायिक हिंसा की 2,010 घटनाएं दर्ज की जा चुकी हैं। इन घटनाओं में से 1,769 हमले और तोड़फोड़ से जुड़ी हुई थीं। पुलिस ने दावों के आधार पर अब तक कुल 62 मामले दर्ज किए और 35 आरोपितों को गिरफ्तार किया। बयान में दावा किया गया है कि जांच में पाया गया कि ज्यादातर मामलों में हमले सांप्रदायिक प्रकृति के नहीं थे बल्कि राजनीति से प्रेरित थे। पुलिस की जांच से पता चला कि 1,234 घटनाएं ह्यराजनीतिक प्रकृति की थींह्न, 20 घटनाएं सांप्रदायिक थीं और कम से कम 161 दावे झूठे या फर्जी थे। उल्लेखनीय है कि शेख हसीना सरकार के पतन के बाद बांग्लादेश में हिंदुओं सहित अल्पसंख्यक समुदाय के इलाकों, धार्मिक स्थलों पर लगातार हिंसक हमले होते रहे हैं और इन हमलों में कई लोगों को जान भी गई है। खास तौर पर हिंदू आबादी को कट्टरपंथियों ने निशाना बनाया और कई मंदिरों को नुकसान पहुंचाया गया। ढाका में इस्कॉन मंदिर के पुजारी चिन्मय कृष्ण दास को भी इस दौरान गिरफ्तार किया गया जिनकी रिहाई को लेकर स्थिति साफ नहीं है। ऐसे में पुलिस रिपोर्ट के आधार पर सरकार के ताजा दावे, अंतरराष्ट्रीय आलोचनाओं से बचने के लिए नये पैंतरे के रूप में देखे जा रहे हैं।

अमेरिका आग: मरने वालों की संख्या बढ़कर 16 हुई

प्रात : किरण/एजेंसी

लॉस एंजिलिस। अमेरिका के लॉस एंजिलिस शहर के चिकित्सा परीक्षक कार्यालय ने जंगलों में लगी भीषण आग में मरने वालों की संख्या बढ़कर 16 होने की पुष्टि की है। कार्यालय ने शनिवार शाम को एक बयान में कहा कि कुल 16 लोगों की मौत हो चुकी है, जिनमें से पांच की मौत पैलिसेड्स जबकि 11 की मौत ईटॉन इलाके में हुई। इससे पहले 11 लोगों की मौत होने की पुष्टि की गई थी, लेकिन अधिकारियों ने कहा था कि मृतकों की संख्या बढ़ सकती है। अधिकारियों ने एक केंद्र स्थापित किया है, जहां लोग गुमशुदगी की रिपोर्ट दर्ज करा सकते हैं। इस बीच, दमकल कर्मियों ने फिर से तेज हवाएं चलने की आशंका को देखते हुए आग को काबू करने के प्रयास और तेज कर दिये हैं। दमकल कर्मी प्रयास कर रहे हैं कि आग विश्व प्रसिद्ध जे. पॉल गेटी संग्रहालय और कैलिफोर्निया विश्वविद्यालय तक न फैले। मैन्डेविल कैनयन में आग बुझाने के लिए पुरजोर प्रयास किए जा रहे हैं। पैसिफिक कोस्ट के निकट स्थित मैन्डेविल कैनयन में प्रसिद्ध अभिनेता अर्नोल्ड श्वार्जनेगर समेत कई हस्तियों के घर हैं।

कैलफायर ऑपरेशन्स के प्रमुख क्रिश्चियन लिट्ज ने एक ब्रीफिंग में कहा कि आग बुझाने के अभियान के दौरान विशेष ध्यान कैलिफोर्निया विश्वविद्यालय के निकट घाटी क्षेत्र पैलिसेड्स में लगी भीषण आग पर रहेगा। फिलहाल आग प्रभावित इलाकों में हल्की हवाएं चल रही हैं, लेकिन राष्ट्रीय मौसम सेवा ने चेतावनी दी कि अग्निशामकों के लिए मुश्किलें खड़ी करने वाली तेज सेंटा ऐना हवाएं जल्द ही लौट सकती हैं। बताया जा रहा है कि इन हवाओं के कारण आग तेजी से फैल रही है, जिसने लॉस एंजिलिस तथा आसपास के पूरे क्षेत्र को अपनी चपेट में लेकर नष्ट कर दिया है। लॉस एंजिलिस में आठ महीनों से अधिक समय से कोई खास बारिश नहीं हुई है। आग के कारण अंतरराज्यीय राजमार्ग 405 पर भी खतरा मंडरा रहा है जो इस क्षेत्र से होकर गुजरने वाला मुख्य यातायात मार्ग है। लॉस एंजिलिस काउंटी के शेरिफ रॉबर्ट लूना ने बताया कि विनाश को रोकने का काम शनिवार को भी जारी रहा और टीमें शवों को खोजने वाले कुत्तों की मदद से खोजी अभियान चला रही हैं। लूना ने बताया कि पासाडेना में एक परिवार सहायता केंद्र भी स्थापित किया जा रहा है। उन्होंने निवासियों से कर्फ्यू का पालन करने का आग्रह किया। आग ने करीब 145 वर्ग किलोमीटर क्षेत्र को अपनी चपेट में ले लिया है।

हजारों लोगों को अब भी आग प्रभावित इलाकों को खाली करने के आदेश दिए गए हैं। शहर के उत्तर में घनी आबादी वाले 40 किलोमीटर के क्षेत्र में लगी आग ने 12,000 से ज्यादा इमारतों को जलाकर राख कर दिया है, जिसमें घर, अपार्टमेंट इमारतें, व्यवसायिक इमारतें आदि शामिल हैं। हालांकि अब तक आग लगने का मुख्य कारण नहीं पता चल पाया है। आग अब भी जल रही है और शुरुआती अनुमानों के अनुसार यह संपत्ति के नुकसान के लिहाज से सबसे बड़ी आग है। एक्यूवेदर के प्रारंभिक अनुमान के अनुसार अब तक 135 अरब अमेरिकी डॉलर से लेकर 150 अरब अमेरिकी डॉलर के बीच नुकसान हो चुका है। अल्टाडेना के निवासी जोस लुइस गोडिनेज ने बताया कि उनके परिवार के 10 से ज्यादा सदस्यों के तीन घर नष्ट हो गए। उन्होंने कहा, सब कुछ खत्म हो गया है। मेरा पूरा परिवार उन तीन घरों में रहता था और अब हमारे पास कुछ भी नहीं है। जले हुए घरों में लौट रहे लोगों को अधिकारियों ने आगाह किया है। कुछ निवासी मलबे से अपनी यादगार चीजें ढूंढने के लिए वापस आ रहे हैं। शनिवार को अधिकारियों ने उन्हें चेतावनी देते हुए कहा कि राख में सीसा, आर्सेनिक, एस्बेस्टस और अन्य हानिकारक पदार्थ हो सकते हैं। थॉमस ने कहा कि क्षतिग्रस्त संपत्तियों के मूल्यांकन के बाद निवासियों को सुरक्षात्मक उपकरणों का इस्तेमाल करते हुए लौटने की अनुमति दी जाएगी।

पाकिस्तान के करक में सड़क दुर्घटना में 12 लोगों की मौत

प्रात : किरण/एजेंसी

करक (पाकिस्तान)। पाकिस्तान में करक के अंबीरी चौक पर शनिवार को एक भयानक सड़क दुर्घटना में कम से कम 12 लोगों की मौत हो गई और 25 अन्य घायल हो गए। मीडिया रिपोर्टों में यह जानकारी दी गयी है। करक के उपायुक्त शकील जान मारवत ने रिपोर्ट की पुष्टि करते हुए कहा कि दुर्घटना ट्रेलर के ब्रेक फेल होने के कारण हुई। इस कारण ट्रेलर सिंधु राजमार्ग पर एक यात्री कोच और कई अन्य वाहनों से टकरा गया। उन्होंने बताया कि आपातकालीन प्रतिक्रियाकताओं ने घायलों को नजदीकी अस्पतालों में पहुंचाया जहां उनका इलाज चल रहा है।

जियो न्यूज की एक रिपोर्ट के अनुसार खैबर पख्तूनख्वा के गवर्नर फैसल करीम कुंडी ने घटना का संज्ञान लिया है और इसका विवरण मांगा है। उन्होंने स्वास्थ्य विभाग को घायलों को तत्काल चिकित्सा सहायता प्रदान करने का निर्देश दिया और हिलाल-ए-अहमर टीमों को अंबीरी चौक पर राहत गतिविधियां चलाने का निर्देश दिया। इसके अतिरिक्त उन्होंने पाकिस्तान पीपुल्स पार्टी (पीपीपी) कार्यकताओं से राहत गतिविधियों में सहायता करने और पीड़ितों की सहायता के लिए रक्त दान करने का आग्रह किया। पीपीपी सीनेटर शेरी रहमान ने जानमाल के नुकसान पर दुख व्यक्त किया और स्थानीय सरकार के साथ-साथ जिला प्रशासन से पीड़ितों के लिए सर्वोत्तम संभव राहत सुविधाओं का प्रावधान सुनिश्चित करने का आग्रह किया।

भारत की बढ़ती अर्थव्यवस्था में सिंगापुर को दिख रहे हैं अवसर: ली सीन लूंग

प्रात : किरण/एजेंसी

सिंगापुर। सिंगापुर के वरिष्ठ मंत्री ली सीन लूंग ने कहा है कि भारत आगे बढ़ रहा है और सिंगापुर को दक्षिण एशिया की सबसे तेजी से बढ़ती अर्थव्यवस्था वाले इस देश के साथ द्विपक्षीय सहयोग बढ़ाने के कई अवसर दिखाई दे रहे हैं। ली ने शनिवार को भारतीय व्यापारिक समुदाय को संबोधित करते हुए यह बात कही। बीस वर्षों तक देश के प्रधानमंत्री रहे ली ने कहा, भारत आगे बढ़ रहा है। सिंगापुर की भारत में छवि अच्छी है और भारत की विभिन्न सरकारों के साथ हमारे बहुत अच्छे संबंध रहे हैं। स्ट्रेट्स टाइम्स ने अपनी एक खबर में ली के हवाले से कहा कि सिंगापुर और भारत के बीच द्विपक्षीय व्यापार, कौशल प्रशिक्षण और फिनटेक जैसे क्षेत्रों में सहयोग बढ़ाने के कई अवसर हैं और साथ ही स्वास्थ्य, डिजिटल समेत कई क्षेत्रों में भी सहयोग के अवसर तलाशे जा सकते हैं। उन्होंने भारतीय व्यापार समुदाय से इन अवसरों का अधिक से अधिक लाभ उठाने का आग्रह किया। ली ने लगभग दो दशक पुराने सिंगापुर-भारत मुक्त व्यापार समझौते व्यापक आर्थिक सहयोग समझौते (सीईसीए) के महत्व का भी उल्लेख किया, जिसने दोनों देशों के बीच व्यापक व्यापार, निवेश और यात्रा संबंधों को बढ़ावा देने में मदद की है। उन्होंने यह भी कहा कि सिंगापुर अपनी जनसंख्या और प्रतिभा को बढ़ाने के लिए प्रवासियों और विदेशी कर्मियों पर बहुत अधिक निर्भर है। दरअसल स्थानीय लोगों ने प्रवासी और विदेशी कामगारों के साथ-साथ निवेशकों और पेशेवरों की बढ़ती संख्या का मुद्दा उठाया है। जिनमें भारत से आए लोग भी शामिल हैं। हालांकि इन नए आने वालों को समृद्धि लाने तथा आर्थिक गतिविधियों को आगे बढ़ाने के लिए महत्वपूर्ण माना जाता है। सिंगापुर भारतीय विकास संघ और 14 अन्य भारतीय सामुदायिक संगठनों द्वारा आयोजित रात्रिभोज में अपने भाषण में ली ने कहा, लेकिन हमें स्वदेशीवाद और विदेशियों के प्रति द्वेष के खिलाफ भी दृढ़ता से खड़ा होना चाहिए, तथा हमारे विस्तारित परिवार का हिस्सा बनने के लिए नव आगंतुकों का स्वागत करना चाहिए।

एचएमपीवी वायरस फेफड़ों के लिए हो सकता है घातक

प्रात : किरण/एजेंसी

जिनेवा। चीन में फैल रहा ह्यूमन मेटान्यूमोवायरस (एचएमपीवी) फेफड़ों के लिए अधिक घातक हो सकता है, और सवाल यह उठ रहा है कि क्या एचएमपीवी का संक्रमण दिल की सेहत के लिए भी खतरनाक हो सकता है। विशेषज्ञों के अनुसार, एचएमपीवी एक रेस्पिरेटरी वायरस है, जो बच्चों और कमजोर इम्यूनिटी वाले लोगों को ज्यादा प्रभावित करता है। इस वायरस से फेफड़े प्रभावित होते हैं, जिससे सांस लेने में परेशानी होती है। कार्डियोलॉजिस्ट का कहना है कि यह वायरस दिल की सेहत पर भी नकारात्मक असर डाल सकता है। इससे हार्ट पर सूजन आ सकती है और दिल की विफलता (हार्टफेलियर) की स्थिति उत्पन्न हो सकती है, विशेष रूप से उन मरीजों के लिए जो पहले से किसी दिल की बीमारी से जूझ रहे हैं। अगर एचएमपीवी का संक्रमण अधिक फैलता है, तो यह हार्ट फेलियर जैसी गंभीर स्थिति को जन्म दे सकता है, क्योंकि फेफड़े शरीर के अन्य अंगों तक ऑक्सीजन पहुंचाने का काम करते हैं, और जब फेफड़े प्रभावित होते हैं, तो यह शरीर के सभी अंगों को प्रभावित कर सकता है। हालांकि, विशेषज्ञ यह भी मानते हैं कि एचएमपीवी और कोविड-19 के लक्षण कुछ हद तक मिलते-जुलते हैं, लेकिन एचएमपीवी को कोविड जितना घातक नहीं माना जा रहा है। फिर भी, इसके संक्रमण से बचाव की जरूरत है, खासकर उन लोगों को जो पहले से हार्ट डिजीज या अन्य गंभीर बीमारियों से जूझ रहे हैं। स्वास्थ्य विशेषज्ञ सलाह देते हैं कि इन लोगों को मास्क पहनने, हाथ धोने, और भीड़-भाड़ से बचने की सलाह दी जाती है।

ट्रंप ने दिया ग्रीनलैंड को अमेरिका में शामिल करने का प्रस्ताव, कितना ताकतवर है ये देश

प्रात : किरण/एजेंसी

वॉशिंगटन। पूर्व अमेरिकी राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रंप ने हाल ही में ग्रीनलैंड को अमेरिका में शामिल करने का प्रस्ताव दिया है, उन्होंने इसके के लिए आर्थिक दबाव और सैन्य बल के इस्तेमाल की धमकी भी दी है। ट्रंप के बयान ने ग्रीनलैंड के भविष्य को लेकर सवाल खड़े कर दिए हैं, खासकर क्योंकि ग्रीनलैंड डेनमार्क का एक स्वायत्त क्षेत्र है और इसकी स्वतंत्रता नहीं है। विश्लेषकों का मानना है कि यदि ट्रंप ग्रीनलैंड पर कब्जा करने के लिए सेना का इस्तेमाल करने का आदेश देते हैं, तब अमेरिकी सैन्य ताकत के कारण यह संघर्ष बहुत जल्दी समाप्त हो सकता है। जानकार का कहना है कि अमेरिकी सेना की ताकत को देखकर, अगर युद्ध हुआ तब यह केवल 24 घंटे में समाप्त होगा।

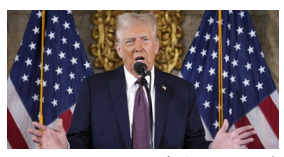

जानकार का कहना है कि ट्रंप अपने किसी भी विवादास्पद विचार को लागू करने में सक्षम हैं, और ग्रीनलैंड पर हमले की धमकी को हल्के में नहीं लिया जाना चाहिए। दरअसल ग्रीनलैंड एक महत्वपूर्ण रणनीतिक क्षेत्र है, जो प्राकृतिक संसाधनों से भरपूर है और प्रमुख आर्कटिक व्यापार मार्गों के बीच मौजूद है। हालांकि यह डेनमार्क का स्वायत्त क्षेत्र है, ग्रीनलैंड के नागरिक डेनिश नागरिकता रखते हैं। ग्रीनलैंड की जनसंख्या केवल 57,000 है और इसके पास अपनी रक्षात्मक क्षमता नहीं है। इसकी सुरक्षा का जिम्मा डेनमार्क के पास है, लेकिन डेनमार्क की सैन्य क्षमता अमेरिका के मुकाबले कुछ भी नहीं है। डेनमार्क का रक्षा बजट 6 अरब पाउंड है, जो अमेरिकी रक्षा बजट से 100 गुना कम है। डेनमार्क की सेना में केवल 17,000 सक्रिय सैनिक हैं, और ग्रीनलैंड की सुरक्षा के लिए तैनात डेनिश तटरक्षक बल में सीमित संसाधन हैं। इसके अलावा, ग्रीनलैंड में अमेरिकी सैन्य अड्डा भी स्थित है, जहां नियमित रूप से अमेरिकी सैनिक तैनात रहते हैं। इसके बाद यदि अमेरिका ने ग्रीनलैंड पर हमला किया, तब डेनमार्क की सबसे बड़ी उम्मीद नाटो से मदद मिलने की होगी। विशेषज्ञों का मानना है कि अगर ट्रंप ग्रीनलैंड को अमेरिका में शामिल करने के लिए सैन्य बल का इस्तेमाल करने का निर्णय लेते हैं, तब यह एक छोटे युद्ध के रूप में हो सकता है, जो संभवतः एक दिन के भीतर समाप्त हो जाएगा।

लॉस एंजिलिस जंगल की आग से मरने वालों की संख्या बढ़कर 13 हुयी

लॉस एंजिलिस। कैलिफोर्निया के जंगल की आग से मरने वालों की संख्या बढ़कर 13 हो गई है। एनबीसी न्यूज ने सरकारी आंकड़ों का हवाला देते हुए यह जानकारी दी। इससे पहले मरने वालों की संख्या बढ़कर 11 हो गई थी। अमेरिकी राष्ट्रपति जो बाईडेन ने कहा कि लॉस एंजिलस की आग से मरने वालों की संख्या बढ़ने की संभावना है क्योंकि कई लोग लापता हैं। कैलिफोर्निया में मंगलवार से कई बार जंगल की आग लगी है, जिसके कारण हजारों लोगों को पलायन करना पड़ा है। मौसम विज्ञानियों के मुताबिक आग तेजी से फैलने का कारण शुष्क और बहुत तेज हवा वाला मौसम था। आग से क्षेत्र की 10 हजार से अधिक इमारतें नष्ट हो गयी है। कैलिफोर्निया के गवर्नर गेविन न्यूसोम ने शुक्रवार तड़के कहा कि कैलिफोर्निया नेशनल गार्ड निकासी क्षेत्र में लूटपाट को रोकने के लिए लॉस एंजिल्स पहुंचे गये है।

विदेश नीति सीरिया में बशर-अल-असद के शासन को बनाए रखने और लेबनान में हिजबुल्लाह का समर्थन करने के बावजूद ये प्रयास विफल साबित हुए।

संकट: मुस्लिम देशों का नेता बनने के चक्कर में ईरान की डगमगा गई विदेश नीति

प्रात : किरण/एजेंसी

तेहरान। ईरान की महत्वाकांक्षी विदेश नीति और मुस्लिम मुल्कों के नेता बनने के प्रयास ने देश को आर्थिक और सामाजिक संकट में धकेल दिया है। अरबों डॉलर सीरिया, लेबनान और गाजा जैसे क्षेत्रों में खर्च करने के बावजूद ईरान को कोई ठोस लाभ नहीं मिला। इसके चलते ईरान के सर्वोच्च नेता अयातुल्लाह अली खामनेई को घरेलू स्तर पर तीखी आलोचना का सामना करना पड़ रहा है।

जेरूशलम पोस्ट और इंस्टीट्यूट फॉर नेशनल सिक्योरिटी स्टडीज की रिपोर्ट के अनुसार, ईरान ने 2000 से लेकर अब तक सीरिया और लेबनान में लगभग 50 बिलियन डॉलर (43 खरब रुपये से अधिक) खर्च किए। सीरिया में बशर-अल-असद के शासन को बनाए रखने और लेबनान में हिजबुल्लाह का समर्थन करने के बावजूद ये प्रयास विफल साबित हुए। गाजा में पहले से ही ईरान के रणनीतिक प्रयास ध्वस्त हो चुके हैं। एक ईरानी जनरल ने हाल ही में स्वीकार किया कि ईरान इजरायल के खिलाफ न तो जवाबी कार्रवाई कर सकता है और न ही किसी नए ऑपरेशन को अंजाम देने की स्थिति में है। यह स्वीकारोक्ति जनता के गुस्से को और भड़का रही है। ईरान की यह स्थिति उसकी महत्वाकांक्षी परंतु अप्रभावी विदेश नीति का परिणाम है, जिसने देश को आर्थिक और सामाजिक संकट में डाल दिया है। जनता की बढ़ती नाराजगी और सरकार पर बढ़ते दबाव ने देश के भविष्य को अनिश्चितता में डाल दिया है।

देश में संसाधनों की भारी कमी: वैज्ञानिक बेनी सबती का कहना है कि इस आर्थिक बबार्दी ने ईरानी जनता का आक्रोश बढ़ा दिया है। देश में संसाधनों की भारी कमी है। राजधानी तेहरान में रोजाना छह घंटे तक बिजली कटौती होती है, और देश भर में महंगाई चरम पर है। पानी की कमी, बेरोजगारी, और बढ़ते प्रदूषण ने हालात को और खराब कर दिया है। बेरोजगारी दर 23 प्रतिशत से बढ़कर 35 प्रतिशत हो चुकी है। देश की बिगड़ती स्थिति के लिए जनता सरकार को जिम्मेदार ठहरा रही है। सबती के अनुसार, ईरान में जनता का गुस्सा सरकार के खिलाफ बगावत के स्तर तक पहुंच चुका है। आर्थिक संकट और विदेशी नीति की विफलता के बीच जनता अब अमेरिका के नए राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रंप से उम्मीद कर रही है कि उनके आने से ईरान की स्थिति में कुछ सुधार हो सकता है।

अरबों डॉलर सीरिया, लेबनान और गाजा जैसे क्षेत्रों में खर्च करने के बावजूद ईरान को कोई ठोस लाभ नहीं मिला। इसके चलते ईरान के सर्वोच्च नेता अयातुल्लाह अली खामनेई को घरेलू स्तर पर तीखी आलोचना का सामना करना पड़ रहा है।`रूशलम पोस्ट और इंस्टीट्यूट फॉर नेशनल सिक्योरिटी स्टडीज की रिपोर्ट के अनुसार, ईरान ने 2000 से लेकर अब तक सीरिया और लेबनान में लगभग 50 बिलियन डॉलर (43 खरब रुपये से अधिक) खर्च किए।

स्वामी, मुद्रक, प्रकाशक, संपादक देवन प्रसाद द्वारा आर.डी. प्रिंटर एंड पब्लिशर्स प्राइवेट लिमिटेड, ए-24, सेक्टर-8, नोएडा, उत्तर प्रदेश से मुद्रित एवं - बी-126, मायापुरी इंडस्ट्रीयल एरिया, फेस-1, नई दिल्ली-110064 से प्रकाशित। सह संपादक: रंजीत राय फोन नं-011-45795464 (नोट: प्रकाशित सभी लेखों आदि से संपादक का सहमत होना आवश्यक नहीं और किसी भी कानूनी वाद-विवाद का निपटारा दिल्ली उच्च न्यायालय में ही किया जाएगा।) RNI. No. DELHIN/2010/32488, Email: news@pratahkiran.com, मो. 9212228045, 8130691216, 9971557129